॥ भजनपद द्वितीय भाग संग्रह ॥

॥ उद्देश भूमिका. ॥

काव्यमां अद्भुत शक्ति रहेली छे, आनंदनुं स्थान काव्य छे, सर्व काव्यमां श्रेष्ट काव्य आत्मज्ञाननुं छे. आत्मज्ञानथी आत्मानी उन्नति थाय छे, ज्ञान ध्यान वैराग्य नीति विगेरे सद्गुणोथी जग तनी उन्नति भूतकाळमां थइ हती वर्तमानमां थाय छे अने भविष्य मां थशे, आत्मानी अनंतशक्तियोने खीलववा माटे आत्मज्ञाननो अपूर्व महिमा छे, उच्च विषयोनां काव्यो आत्माओने उच्च करे छे. आत्मानुं उच्च जीवन आत्मानंदथी थाय छे. आत्मानंदनी खुमारी आत्मप्रभुनी उपासनाथी थाय छे. कोइ कोइ समयमां आत्मामांथी कोइ कोइ विषयनी स्फुरणा प्रगटी नीकळे छे. भिन्न भिन्न विषयोनीभिन्न भिन्न स्फुरणाओ द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी काव्य छंदमां उत्पन्न थएली तेनो संग्रह आ भजन संग्रह द्वितीय भागमां करवा मां आव्यो छे, स्वाभाविक स्फुरणाओनुं जे उत्थान थाय छे, तेमां अपूर्व आनंदशक्ति रहेली छे के ते स्फुरणामय भजनोने वांचतां गातां श्रवण करतां भव्यजीवोने विद्युत्नी पेठे चमत्कारी असर थाय छे, तेनो अनुभवीओने अनुभव थाय छे, जेटला प्रमाणमां आत्मज्ञान ध्यानना उच्चाशयथी हृदय खेडायलुं होय छे, तेटला प्रमाणमां हृदयमांथी उच्चाशयनी आत्मज्ञान ध्यान वैराग्य नीति विगेरे गायनद्वारा स्फुरणाओ बहार प्रकाशे छे, अमारु चातुर्मास संवत १९६३ नी सालनुं साणंदमां हतुं. त्यांथी विहार करी गोधावीमां मास कल्प कर्यो हतो ते समये, छंद विगेरेमां केटलांक आयना ६ पानामां लखेला उद्गारो नीकळ्या हता, त्यार बाद गोधावीथी वि हार करी कारतक वदी ७ ना रोज अमदावाद आववानुं थयुं ह ते प्रसंगे ६० थी १५० सुधीना भजन पद जोडायां हतां, त्यारथी अमदावादथी पोषवदी १२ ना रोज विहार करी शाहीबागमां शे लल्लुभाइ रायजीना बंगलामां केटलांक पदो, गायनो वि

रच्यां हतां त्यांथी अडाणज, उंवारसद, रांधवजा थइ माणसा गाममां अवायुं हतुं त्यां १५० थी ते ३०० प्रणसें पाना सुधीनां पदो जे जे समये स्फुरणा आवी ते ते प्रसंगे जोडायां हतां, चैतन्य शक्ति प्रकाश नामनो ग्रंथ श्री तारंगाजीमां रच्यो हतो तेने अत्र दाखल कर्यो नथी. बाकीनां पदो, घरसोडा, लोदरा, रीद्रोल; खेराळु, कलोल, उंझा, भोंयणी विगेरे ठेकाणे उनाळानी ऋतुमां विहारमां शांत समये जोडायां हतां. जे जे विषयनी स्फुरणाओ नीकळी छे तेने वांची मनन करी भव्य जीवो उच्च पदने प्राप्त करो, सद्गुण ग्राहक दृष्टिथी जे भव्यजीव वांचशे सांभळशे तेनुं सारु थशे. केटलाक गंभीर आत्मज्ञानना तथा योगना पदोमां समजण न पडे वा अपेक्षा न समजाय तो ज्ञानि सद्गुरुने पुछी निर्णय करवो, जिनाज्ञा विरुद्ध लखायुं होय ते संबंधी मिथ्या दुष्कृत दउंछुं, सद्गुणदृष्टिथी भव्यजीवो आत्मानंद मेळवो.

गाम रीद्रोलवाळा सुश्रावक शा. रीखवदास कालीदासभाइए भजन संग्रह बीजो भाग छपावी प्रसिद्ध कर्यो छे. रीखवदासभाइ जैनधर्मना पूर्णरागी अने उत्साही छे, जैनधर्मनां दरेक कृत्यमां तन मन धनथी भाग ले छे. रीद्रोल के जे पोतानुं गाम छे त्यां तीर्थंकर भगवान्नी प्रतिष्ठा १९६२ ना जेठ शुदी बीजे थइ हती. त्यारे आगेवानी भर्यो भाग लेइ आठ हजारना आशरे रुपैया खर्च्या हता, साधु साध्वीनी भक्तिमां यथाशक्ति शुभ उद्यम करे छे, ज्ञानना उद्योतमां अने केळवणीना फेलावामां आवी रीते धन खर्चे छे. माटे ते भाइने धन्यवाद पूर्वक धर्मलाभाशी दउं छुं. वळी आ साथे आ भजन संग्रहना प्रुफशीट सुधारवामां सहाय करवामां सुश्रावक भाइश्री मणीलाल नथुभाइ दोशी बीए ए घणी मदद करी छे. माटे तेमने सस्नेह धर्मलाभाशिष आपवामां आवे छे. ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

आ पुस्तक वेचवाथी जे कीमत उपजशे ते सघळी रकम ज्ञान खाताना बीजा पुस्तको छापवामां वपराशे.

भजनपदसंग्रह भाग बीजानी

अनुक्रमणिका.



भव्यजीवोए आ अशुद्ध वाक्योने नीचे प्रमाणे शुद्ध करेलां छे तेम पुस्तकमां सुधारवा प्रयत्न करवो, पुस्तकमां वांचीने अवश्य शुद्धिकरवी,

॥ श्री भजनपदसंग्रह द्वितीयभागनी शुद्धि पत्रिका ॥

पत्र	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
११	१९	सममाव	सममावे
२८	१	सापले	साथीने
३१	१३	सापो	साधो
३३	१	सकर्मी	कर्मी
३२	१९	आरमा	आतमा
३३	७	दूष्कर	दुष्कर
३६	२०	देही	देहो
३६	२१	व्यापिया	व्यापियो
४१	२०	हारो	तारो
४७	१६	कथी सुहोत	कयु होत
४८	१	झळक	झळके
५६	१९	थतां	थातां
५८	१६	सुगमधानो	सुगमधानो
६२	१७	समज्याविण भूल्या	अणसमज्याथी
६४	१४	खडां	दुःखडां
६४	१६	ज्ञान	ज्ञान
६५	१८	रहे	रह्यो
७१	१३	मळशे	मळशे
९०	१	श्वासमहि	श्वासमांहि

९०	१८	पुंडरीकने	पुंडरीक
९०	२२	रागद्वेष तो दूर	रागद्वेष दूरे
९५	१४	आत्म	जीव
९६	२३	जे सिद्धाचल वंदता	ते सिद्धाचल वंदतां
१००	१३	पाॅत्रिशी	बत्रीशी
१०१	१९	प्रर्या	प्रेर्या
१०२	११	बाहिरंग	बहिरंग
१०७	२१	ममदा पतिव्रता धर्मो,	ममदा पतिव्रताना धर्मो
११०	१७	धट	घट
११३	११	बात वात	वात वातमां
१२८	१२	अपमानजे	अपमानजो
१२९	१५	वृतने	व्रतने
१४४	९	सद्भाव	सद्भाव
१४६	१	दवे	देव
१४९	९	मनिा	मानी
१५०	२३	विरा	वित्त
१५४	२२	आत्म	जीव
१५९	१४	वारी	वारो
१६०	९	अगत्मां	जगत्मां
१६१	१२	चावा	ध्यावा
१६१	१९	सररिका	सरीखा
१६३	७	जवि	जीव
१७७	३	धारवा	धारवाने
१७८	१७	ढोर छे	ढोर छे जग
१८७	८	दूर	दूरे

२०२	१३	गंभर	गंभीर
२०३	११	नामे	नामे
२०६	३	तव	मरव
२१०	२०	निराभिमानी	निरभिमानी
२२१	११	थानांथी	थानीथी
२३०	२२	व्यापो	व्याप्यो
२३२	२४	समभावनी	समभावे
२४४	१८	भेद आपो	भेद आप्यो
२५८	२३	जागोरे	जोगोरे
२५९	१३	तारो	तारी
२६०	१७	वाम कर्यो	वास कर्यो
२९१	४	प्रभुस्वरूप	प्रभु स्वरूप
२९७	२३	प्रणव मंत्र ॐकार दि- ल्पमां ध्यातां	प्रणव मंत्र ॐकार दिल्पमां ध्यातां
२९७	२४	प्रणवमंत्रे	प्रणव मंत्रे
३०१	२०	कृतकार्थी	कृतकार्थी
३०९	१२	स्वरथी	स्वरथी
३१२	९	एकीले	एकीलो
३१७	१८	शक्ति	व्यक्ति

वचनामृत.

नकामो समय गाळवाथी पाछळथी पश्चातापपात्र बनवुं पडे छे. समयनी किंमत नथी. समयनी अमूल्यता समज्या विना जीव चेती शकतो नथी. फोगट गप्पां मारवाथी महत्ता प्राप्त थती नथी. धर्मकार्यमांज स्वजीवननी साफल्यता उत्तम पुरुषो समजे छे. कोइनी आजीजी नहि करतां प्रमाणिकपणाथी आत्मोन्नति करवामां प्रयत्नशील थवुं. वक्ताना हृदयनो मर्म जाण्याथी सुज्ञपणुं प्राप्त थाय छे. वक्तानुं हृदय अवगाहवामां परीक्षकनी हुंशियारी छे. वक्ता अने श्रोतानां हृदय भिन्न होय तो मर्मास्वाद चखातो नथी. श्रोतानां हृदय प्रकाशवामां वक्तानी हुंशियारी छे. सर्व ज्ञानमां अनुभवज्ञान उत्तम छे. ज्ञानिनुं हृदय भव्य जीवोने उत्तम प्रकाश आपे छे. स्वयंभुरमणसमुद्रनुं अवगाहन थाय पण ज्ञानिना हृदयनुं अवगाहन थवुं दुर्लभ छे. मनुष्य क्षणे क्षणे नवुं शीखे छे. पोतानी उत्तमता अन्यने देखाडवा करतां पोताना आत्माने देखाडवी तेमांज कार्यदक्षता छे. वक्ताना वचनपर श्रद्धा थयाविना भक्तिभाव उत्पन्न थतो नथी. योग्यता विण सद्गुणनी प्राप्ति थती नथी विचार, उच्चार अने आचार ए त्रण वस्तु एकस्थाने होय तो पूर्ण भाग्यनुं चिन्ह जाणवुं. नीतिधर्मनुं स्वरुप वीतरागप्रभुए यथार्थ कह्युं छे.विनयभक्ति विना आत्मशक्ति खीलती नथी. हे गौतम, समय मात्रपण मा प्रमाद कर, आ वाक्यनी उत्तमता पुनः पुनः विचारवा योग्य छे.

धर्मोन्नातिमां प्रभावना उत्तम अंग छे. आध्यात्मिक ज्ञान वाळुं जीवन सत्यसुख आपे छे. कवि अने ध्यानी चित्तनी एकाग्रताथी कार्यसिद्धि करे छे. श्री वीर प्रभुए आत्मशक्तिनुं अद्भुत स्वरुप

उपदेश्युं छे, पण समज्याविना अन्तरमां अन्धारं छे. आत्मस्वरूप-रमणतामां चित्तवृत्ति विश्रांत थतां सहजानन्दनी खुमारी प्रगटे छे. उपादेयबुद्धि अने उपादेयनुं आचरण महा दुर्लभ छे. हेय, ज्ञेय अने उपादेयनुं यथार्थ स्वरूप समजवाथी सत्यविवेक प्रगटे छे. शब्द, ज्ञान अने वस्तु ए त्रण प्रकारना पदार्थ छे, ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्म बाळीने भस्म करे छे. परमेश्वर सत्यगुरु अन्तरमां छे.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

भजन पद संग्रह.

भाग २ जो.

॥ ॐनमः नवपदस्तुतिः ॥

॥ १ अरिहंतपदस्तुति ॥

धन्य धन्य दीवस ने धन्य घडी छे आजे-ए राग.

(१)

अरिहंत नमो भगवंत सदा सुखकारी,
तीर्थंकर नामोदयथी जग जयकारी,
त्रिज्ञान सहित तीर्थंकर गर्भे आवे,
इन्द्रादिक सुरगिरि गर्भोत्सव विरचावे. ॥ १ ॥
प्रभु जन्मे त्यारे सर्वे इन्द्रो आवे,
प्रभु ग्रही करतलमां सुरगिरिपर लेइ जावे,
जन्मोत्सव करीने प्रभुने गृह पधरावे,
नंदीश्वर दर्शन करी कृतारथ थावे. ॥ २ ॥
भोगावली कर्मो क्षीण थातां जयकारी,
दीक्षोत्सवपूर्वक संयम ले हितकारी,
स्थिर ध्यान धरीने घातिक कर्म खपावे,
केवलज्ञाने जिन समवसरण सुहावे. ॥ ३ ॥
भवि आगळ धर्म कथीने तीर्थज थापे,
रत्नत्रयी लक्ष्मी औदयिक वाणी आपे,
नवतत्त्वोने षड्द्रव्योने जिन भाखे,
जिनवचनामृतनो स्वाद भवि जीव चाखे. ॥ ४ ॥

श्रुतज्ञाने धर्मनुं स्थापन जिनजी करता,
सिद्धोने जणावी उपकारी पद वरता,
ते माटे अर्हन् वन्दन पहेलुं भाख्युं,
जो जो नवकारे काल अनादि दाख्युं. ॥ ५ ॥
प्रभु क्षुधा पिपासा योगे अन्नने पाणी,
लेवे निरवद्य कहे जिनवरनी वाणी,
जब आयुष्य अवधि प्रभुनी पुरी थावे,
प्रभु एक समयमां सिद्ध स्थानमां जावे. ॥ ६ ॥
जगलोचन जिनवर महा उपकारी देवा,
कर भावे चेतन तीर्थंकरनी सेवा,
अरिहंत अनंत थया थाशे ने थावे,
लळी लळी प्रणमुं तीर्थंकर साचा भावे. ॥ ७ ॥

---

(२)

२ सिद्धपद स्तुतिः ॥

छप्पय छंद.

सिद्ध भजो भगवंत, प्रभु शिव सुखना भोगी,
निर्मळ क्षायिक भाव, थकी निश्चयथी योगी,
धरी अचल अवगाह, मुक्तिना स्थान सुहाया,
सर्व कर्मथी मुक्त, सिद्ध शिव नगरी राया,
अज अमर परम जिनराजने, वन्दतां दुःख जाय छे.
ज्यामां भेदभाव नहि ज्यां, शर्म अनंतुं थाय छे ॥ १ ॥
वन्दो पूजो सिद्ध बुद्धने निशदिन ध्यावो,
सिद्ध बुद्ध परमात्म विभुने निशदिन गावो,
सिद्ध सनातन परम महोदय शिवपद वरिया,

क्षायिक नव लब्धिना, भोगी शिवसुख रसीया,
सिद्ध बुद्धना ध्यानथी तो, आतम तेवो थाय छे,
श्वासोश्वासे समरवाथी, जन्म जरा भय जाय छे ॥ २ ॥

---

३ आचार्यपद स्तुतिः

छप्पयछंद.

पाळे पञ्चाचार पळावे सूरिवर साचा,
ज्ञानी ध्यानी कथन करे छे जिननी वाचा,
वीर जिनेश्वर तीर्थ चलावे भाव दयाथी,
शासनना सुलतान सूरिवर वीर गयाथी.
गच्छ सूरीश्वर सेवीए आचारज सुखदाय छे;
द्रव्य क्षेत्रने काल भावे, सूरिवरा परखाय छे. १
सूरि विना नहि गच्छ, शास्त्रमां परगट भाख्युं,
वसे गच्छमां सुमुनि सूत्रकृतांगे दाख्युं,
रत्नत्रयिनी प्राप्ति गच्छे वास कर्याथी,
आराधक भवि होय सूरिनी आण धर्याथी,
सङ्घनायक सेविए भवि धन्य धन्य ते मुनिवरा,
सूत्रार्थ दाता जैनगच्छे-पति प्रकट सुख जयकरा. २
संप्रति शासन नायक सूरिवर वन्दन कीजे,
व्यवहारे वर्तिने निश्चय सत्य ग्रहीजे,
सूरिवरोनुं मान कर्याथी शासन वृद्धि,
व्रत धारक सूरिवर सेव्याथी शाश्वत सिद्धि,
जैन धर्मोद्धारमां शूर सूरिवरा सुलतान छे,
चतुर्विध सुसङ्घ प्रणेता सूरिवरा भगवान् छे. ३

---

४ उपाध्यायस्तुतिः

॥ छप्पय छंद ॥

उपाध्याय गुणखाण ज्ञानना दरिया भाल्या,
भणे भणावे सूत्र सत्य जे करता व्याख्या,
षड् द्रव्यादिक जाण सदा संयमने पाळे,
शिष्यादिक परिवार धर्मना पन्थे वाळे,
उपाध्याय भगवाननुं बहु, मान करो जय जयकरा,
गच्छमां युवराजसमा ते, भव्य वृन्द अति सुखकरा. १
जैन धर्ममां धीर वीर संयमने साधे,
पञ्चाचार धुरीण तत्त्वने जे आराधे,
भव्य चतुर्विधसंघ सर्वने शिक्षा आपे,
समजावीने बालसाधुने संयम थापे,
उपाध्याय पदने नमो भवि वन्दन वार हजार छे,
संमति वाचक मुनिने नमतां मेळवां भव पार छे २

---

५ साधुपदस्तुतिः

धन्य धन्य दीवस ने धन्य घडी छे आजे-ए राग.

संयम रूप करता मुनिवर वन्दो भावे,
संयत सेवार्थी निर्मल संयम पावे,
सरसवने मेरु अन्तर श्रावक साधु,
मङ्गलकारी मुनिवर पदने आराधुं, १
धन्य धन्य दीवस ने धन्य घडी ते लेखो,
जब मुनिवरदर्शन पुण्योदयथी पेखो,

संयत सद्गुरुजी पञ्च महाव्रत धारी,
कञ्चन कामिनी त्याग करे अनगारी, २
जाणे ते भव मुक्ति पण जिनवर दीक्षा,
व्यवहारे वर्त्या विण नाहि आतमशिक्षा,
घरबार तजीने मुनिवर संयम साधे
संयम सेवार्थी आतम अनुभव वाधे. ३
सद्गुरु मुनिवर छे वन्दनना अधिकारी
नहि गुरु गृहस्थी संयमना गुण धारी,
महातीर्थ मुनिवर जंगम जे आराधे
ते श्रावक साचो रत्नत्रयीने साधे. ४

---

६ दर्शनपदस्तुतिः

राग उपरनो.

नमो दर्शन चेतन स्पर्शन शिव सुखकारी
दर्शनथी सम्यग् ज्ञान लहो जयकारी,
व्यवहार अने निश्चयथी दर्शन कहीए.
बेनी प्राप्तिथी शाश्वत सुखडां लहीए. १
दर्शनथी भवनी नियमा सूत्रे भाखी,
सहु आगम ग्रंथो दर्शनना छे साखी,
नमो दर्शन पद भक्तिथी दर्शन पावो,
दर्शन भक्तिथी दर्शन मोह हठावो २

---

७ ज्ञान पदस्तुतिः

राग उपरनो.

प्रणमो प्रणमो नाणस्स सदा उपकारी,

मति श्रुत अवधि मनःपर्यव केवल भारी,
स्वपरप्रकाशक ज्ञाने शासन चाले,
ज्ञाने भवि प्राणी जीवदयाने पाले,
णमो बंभीलीवीए आये भगवइ भाख्युं,
ज्ञानीए ज्ञानतणुं फल घटमां चाख्युं, १
भवि ज्ञान न निन्दो ज्ञानि निन्दा वारो,
गुरुगमथी ज्ञान ग्रहीने चेतन तारो. २
महिमा छे अपरंपार ज्ञाननो साचो,
निशदिन भवि प्राणी ज्ञानाभ्यासे राचो,
जिनवाणी श्रुत आधार हाल छे जाणो,
श्रुत ज्ञान ग्रहीने शाश्वतपद मन आणो. ३
जाणो नव तत्त्वादिक जिनवरनी वाणी
समजी सम्यग् भवजलधि तरशो प्राणी,
नमो ज्ञान सदा दिनमणि जेवुं उपकारी,
प्रणमुं भावे हुं ज्ञान सदा जयकारी. ४

---

८ चारित्र पदस्तुतिः

चल चेतन जिनमन्दिर जइए-ए राग ॥

चरण करण धारी मुनिवृन्द मोक्षे संचरवा
…क जनो पण चरण ग्रहे छे मुक्तिवधु वरवा
…िननी महा भाग्य, धन्य ते वीतराग,
…ज्ञानी पण दीक्षा लेवे भवजलधि तरवा. चरण० ॥ १ ॥
…य ते चारित्र, होय भव्य पवित्र,
…ादिक पण मुनिने वंदे कर्म कटक हरवा. चरण० ॥ २ ॥

महिमा मोटो सार, चरणतणो अवधार
द्रव्यवेष वण केवलीने नहि वंदननो अधिकार. चरण०॥३॥
सर्व सुखकारी, धन्य अनगारी
बुद्धिसागर मुनिने वंदो, नहि कोनी परवा. चरण० ॥ ४ ॥

---

९ तपःपदस्तुतिः

राग आशाउरी.

तपपद शिव सुखकार भवियां तपपद शिव सुखकार.
लब्धि अट्ठाविश तपथी प्रगटे,
पहेलुं मङ्गल सार— भवियां० १
ते भव मुक्ति जाणे जिनवर
तो पण तप तपनार— भवियां० २
कर्म निकाचित पण क्षय करतुं,
तपथी सहु तरनार— भवियां० ३
तप तपीया मुनिरत्न संवत्सर
धन्य तेनो अवतार— भवियां० ४
अद्भुत ज्ञाननो महिमा मोटो
कहेतां नावे पार— भवियां० ५
बुद्धिसागर तप तपीया मुनि
वंदु वार हजार— भवियां० ६

नवपद गीत.

राग वनजारो.

नमुं नव पद जग जयकारी, अद्भुत महिमा छे भारी.

म्हारु अने त्हारु एम भेद पाडी भूल करे
चेतनना बोधविण जीवडा कूटाय छे,
चार गतिमांहि भमी भमीने तो दुःख लह्यां,
अन्तरनी भूलथकी भवमां भमाय छे.
चेतनना बोधविण चेतन तो जड जेवो,
चेतनना बोधविण चेतन चूकाय छे.
धीनिधि कहेछे एम चेतजे चतुरजन,
घडी सवालाखनीतो जोतामांहि जाय छे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

करीने विचार भाइ दुनीआमां देखी लेजे,
गाडी वाडी लाडी सहु मायानी जंझाळ छे,
धनपति नरपति सुरपति सुख सहु
अज्ञानथी मानी लेइ मोह्या जीव वाल छे.
शोध कर बोध कर चित्तमां चतुर जन
प्रमदाना पाशमांहि शाने जकडाय छे.
जाग जाग जीव जरा ज्ञानथी विचारी जोने
नित्य एक चेतन छे सत्य समजाय छे. ॥ १ ॥
जरूर जरूर जीव जोने जरा अन्तरमां
अन्तरना ज्ञानथकी दोष सहु जाय छे.
शाताशातावेदनीने समभाव वेदी लेजे
अन्तरना ज्ञानथकी समभाव थाय छे.
श्वास ने उच्छ्वासमांहि जीवन वहे छे जीव
लोक कहे मोटो तने न्हानो थइ जाय छे.
धीनिधि कहे छे एम चेतन तुं चेती लेजे
जिनवाणी गुणखाणी शरण सदाय छे. ॥ २ ॥

जडना संबंध थकी न्यारो छे चेतन तुंहि,
अज अविनाशी एकरूप तुं कहाय छे. ॥ १ ॥
निरञ्जन निराकार निर्मल परम ब्रह्म,
सिद्ध बुद्ध हंस तुंहि आनन्दनुं स्थान छे.
योग लेश्या मन वाणी देह थकी न्यारो तुंहि,
देहव्यापि चेतननुं ज्ञान ते प्रमाण छे.
असंख्यप्रदेशघन ज्ञानमय चेतन छे,
तुंहि तुंहि रटनामां आनन्द अपार छे.
अकल प्रभुनुं रूप ज्ञानथी कळाय अहो,
धीनिधि परम ब्रह्म नित्य निराकार छे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

जाणवानुं बहु एक आदेय चेतनरूप,
जीवमां अनन्तगुण ज्ञानथी समाय छे;
जिनवाणी गुणखाणी विवेकथी दीलआणी,
शुद्ध एक चेतनने योगियो हि ध्याय छे;
सत्ताथी समानसिद्ध चेतनने ध्याइएज,
व्यक्तिरुप थावे गुण सत्ताना तो ध्यानथी;
शुद्धध्यानउपयोगे शुद्ध तो चेतन थाय,
स्थिरचित्त ध्यान कर गुरुगम ज्ञानथी. ॥ १ ॥
लटपट खटपट झटपट तजी जीव,
शुद्ध बुद्ध रूप त्हारुं स्थिरचित्त ध्यावजे;
फरी फरी नहि मळे समय सुजाण अरे,
सत्ताए रहेली शुद्ध बुद्धताने पावजे;
अशुद्ध चेतन तुंहि चार गति रूप छेज,

अन्तरना ज्ञानथकी जाण्या अहो ज्ञेय सहु,
अन्तरना ध्यानमांहि योगियो मस्तान छे;
सत्य जिनवाणी जाणी धीनिधि तुं चेती लेजे,
चेतन विनानुं अन्य जाणजे तोफान छे. ॥ १ ॥
ज्ञान अने क्रिया थकी मोक्षनो तो पन्थवहे,
जरुर समयवेंण दीलमां विचारजे;
जिनवाणी सत्यजाणी सद्दहणा कर भवी,
रत्नत्रयी ग्रही जीव पोताने तुं तारजे;
अष्टसिद्धि नवनिधि रूद्धिनो भण्डार तुंहि,
अनंत अनंत ज्ञेय ज्ञानथी जणाय छे;
धीनिधि चेतन झट चित्तमांहि चेती लेजे,
अनंत अनंत सुख तुजमां समाय छे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

पामीने मनुष्यभव पाप कर्यां लाखो गमे,
तेनी यादी करी जीव पश्चाताप कीजीए;
हवेथी न पाप थाय एवुं तो वर्तन राख,
निजमां रमणताथी शिवसुख लीजीए;
भूल्यो त्यांथी फेर गण हवेथी न भुल थाय,
स्मृति एवी खातां पीतां चालतां तुं राखजे;
विचारीने वेंण बोल विवेकथी सत्य तोल,
ध्यानामृतस्वाद भवि प्रेमधरी चाखजे. ॥ १ ॥
चेत अरे जीव जरा चित्तमां विचारी जोने,
जडमां रमणताथी जड जेवो थाय छे;
मोतिचारो हंस चरे विष्टाथी न प्रेम धरे,
अरे हंस जीव केम विष्ठामां मुंझाय छे.

विनयथी विद्यातति जगमां सोहाय छे.
भलीवाते स्वार्थिना संगथी भरमावुं नहि,
देवगुरु मातपिता प्रेमे पाय लागवुं;
लप छप गप छप वात सहु तजी शिष्य,
विद्यानी वृद्धिने माटे व्हेला नीश जागवुं. १

दोहरा.

जन्मीने जगमां करो, धर्म कर्मनां काज;
कुळदीपक पुत्रो थतां, रहेति कुळनी लाज. ॥ १ ॥
नवरा काळ न गाळिए, उद्यम सुखनुं मूळ;
हितशिक्षा मनमां धरी, पुनः पुनः नहि भूल. ॥ २ ॥

सुख दुःखमां समभाव स्थिति.

मनहरछंद.

शाता ने अशाता दोय वेदनीना बंध छेज,
बंधमांहि अन्ध बने मोहिनी संबंध छे.
धननी मोटाइ एतो मोह मूळ जाण अहो,
जिनवाणी जाण्याविना देखतातो अन्ध छे.
सुख दुःख समभावे ज्यारे तो वेदाय छेज,
त्यारे सत्य सुखनुं तो भान दील थाय छे.
धीनिधि चेतन प्रभु सेवना पमाय ज्यारे,
त्यारे जन्म जरा भय आधि व्याधि जाय छे. १
हेय ज्ञेय उपादेय ज्ञान थकी अरे जीव,
नव तत्त्व विचारीने चरणने पाळजे.
पंचाचार धरी शुद्ध व्यवहार निश्चयतः,
आवश्यक क्रिया थकी दोषो सहु टाळजे.

उपशम दोयभेद चरणने समकित,
अष्टादश भेद क्षयोपशमना धारजो;
ज्ञान चार त्रण छे अज्ञान त्रण दर्शनने,
दानादिक लब्धि पंच तेमांहि मेळावजो;
समकित चारित्रने संयमासंयम एम,
भेद क्षयोपशमना चित्तमां रमावजो. ॥ १ ॥
चार चार गतिने कषाय तीन लिंग वळी,
षड लेश्या अज्ञान मिथ्यात्वने निवारजो;
असिद्धता असंयम एक विश भेद गणो,
औदयिक भावनाए दिलमांहि धारजो;
रत्नत्रयी दानादिक पंच अने समकित,
नवभेद क्षायिकना तेरमे पमाय छे;
जीवत्वने भव्यत्व अभव्यत्व ए त्रण भेद,
परिणामि भावनाए स्वभावे सुहाय छे. ॥ २ ॥

दोहरा.

पंचभावना भेद ए त्रेपन थया रसाळ;
छठो संन्निपात छेज कहेता दीन दयाळ. ॥ १ ॥
उपादेयने हेय छे ज्ञेयभाव छे पंच;
आतम स्वभावे लीनता रहे न आश्रव रंच. ॥ २ ॥
मनन स्मरण विवेचना करतां सत्य विवेक;
बुद्धिसागर आत्ममां शोधो धरीने टेक. ॥ ३ ॥

वचनामृत.

मनहरछंद.

वैरीनो विश्वास तज-सरल सुजन भज,

कोण हुं ने कोण मारु तत्त्व ए विचारजे. ॥ १ ॥
दान ध्यान तणी भाव धर्मनो गणो सगाइ,
वीरजिन देवने हृदयमां राखजे;
चोरी जारी चुगलीने निन्दा दोष परिहरी,
सन्तोष धारी कदी जूठुं नहि भाखजे;
विनय विवेक धरी वृद्धजन अनुसरी,
नीति रीति दृढीआमां टेकथी जमावजे;
वीर जिन वचननी सत्यता धरीने दील,
धीनिधि चेतन प्रभु रूपथी जगावजे. ॥ २ ॥

मनहरछंद.

धन जीव चित्तमांहि संसार असारमांहि,
व्हाल त्याग नारी सहु धर्मचित्त धारजे;
विषयने विषसम गणी भाइ ज्ञानथकी,
महा दुःखदायी काम चित्तथकी वारजे;
जैन धर्म धारवाने भवदुःख वारवाने,
ज्ञानि मुनि सङ्ग करी तत्त्वने विचारजे;
महा पुण्य योगे मळ्यो मनुष्यनो भव अरे,
वारंवार जीव कहुं पोताने तुं तारजे. ॥ १ ॥
प्रीतिमांहि भीति जाणी राख नीति धर्मनी तुं,
संयोग छे जेनो तेनो वियोग विचारजे;
अलख अरूपी तुंहि अन्तरमां जाणी लेइ,
मोह शत्रु सेनाने तुं ज्ञान खड्ग मारजे;
समय विचार सहु समजीने चेतन तुं,
उपादेय एक व्हारु रूप अवधारजे;
धीनिधि चतुर चित्त समजीले सानमांहि,
पामीने मनुष्यभव हवे नहि हारजे. ॥ २ ॥

॥ विनयामृत ॥

मनहरछंद.

विनयथी मान जाय विनयथी सुख थाय,
विनयथी विद्या सहु भणवाथी आवे छे;
विनयथी वेर जाय विनयथी झेर जाय,
विनेय सुशिष्य मनमांहि बहु भावे छे;
मन्त्रमांहि नवकार खगमांहि हंस सार,
सहु गुणमांहि तेम विनय विख्यात छे;
विनयथी यश थावे सहुलोक गुण गावे,
विनय विहीन जन रासभनो भ्रात छे. ॥ १ ॥
विनय विवेक तात विनयथी उच्चजात,
विनयथी नात जातमांहि सुख पावे छे;
विनयथी क्रोध जाय मनतुं इच्छित थाय,
विनयथी शिवपुर झट जन जावे छे;
आवळनां फूल जेवो विनय विनानो जन,
मोरपूठ जेवो जन विनय विनानो छे;
धीनिधि कहे छे सद्गुण आववानुं द्वार,
विनय विनय एक गुणतो मजानो छे. ॥ २ ॥

गुरु विनय.

मनहरछंद

गुरुनो विनय सुखकारी दुःखहारी अहो,
गुरुनो विनय गुण घणा दील लावे छे;
गुरुना विनयविना शिवपुर दूर बहु,
गुरुना विनय थकी दोष सहु जावे छे;

गुरुना हुकमने तो मान बहु आपवाथी,
गुरु आण प्रतिपाल सुशिष्य गणाय छे;
गुरुना विनय विना शिष्य छे सूकर सम,
कांधा कान कूतरीनी अवस्था पमाय छे. ॥ १ ॥
शाणो के सरदार होय नृपतिके रंक होय,
गुरुना विनय विना गमार गणाय छे;
गुरुना विनय थकी सहु ज्ञान सांपडे छे,
गुरुना विनय विना दुःख बहु पाप छे;
गुरुनो विनय शिवपुर पन्थ प्रकट छे,
सद्गुरु प्रेमभाव विनय शृंगार छे;
धीनिधि कहे छे दील विनयने धारवाथी,
विमल सफल जगजन अवतार छे. ॥ २ ॥

मित्रलक्षण.

मनहरछंद.

संकटमां स्हाय करे स्वार्थ नहि दील धरे,
दोष सहु ढांके अने मुखे गुण गाय छे;
मित्रनो उदय देखी दीलमां आनन्द धरे,
हित शिख आपवाथी कदु न रीसाय छे;
समय सुजाण होय मित्रना न दोष जोय,
गुह्यवात मित्रनी ते क्यांय न प्रकाशतो;
दीर्घदृष्टि गुणवन्त नीतिमान लज्जावन्त,
मित्र महा अवतार सुमित्र प्रभासतो. ॥ १ ॥
समाचित्त कुलवय धर्म जाति नीति वित्त,
मित्रनी मित्राइ जगमांहि सुखदायी छे;

धर्मनी मित्राइ गुणदायी सर्व मित्रतामां,
अभयकुमार आद्र पेठे वखणाइ छे;
मूर्खनी मित्राइ कोइ काळमां न कर भाइ,
मूर्खनी मित्राइ दील दुःखनाति क्यारी छे;
घरडानी लाकडीने आंधळानी आंख जेवो,
धीनिधि गुरुधर्मां मित्र पुण्ययोगे यारी छे. ॥ २ ॥

आत्माने स्वरूप रमणतानी प्रेरणा.

छप्पयछंद.

चेतन चतुर सुजाण चित्तमां चेती लेजे,
ब्रह्मानुभव रंग सङ्गे निशदिन रहेजे;
पर निजमां समभाव चेतना ध्याने वाळो,
चिन्मय चेतन रत्न करीने जीवन गाळो;
अनुभवयोगे पामीए ते चिदानन्द शाश्वत खरो,
बुद्धिसागर ध्यानयाने भवसागरने झट तरो. ॥ १ ॥
अखण्ड स्थिर उपयोग आत्ममां प्रकटे ज्यारे,
झळके ज्योति शुद्ध ब्रह्मनी घटमां त्यारे;
पडे न परमां चेन येन विषयादिक नासे,
फरतां हरतां ध्यान योगथी स्थिरता भासे;
शब्द विषयथी दूर छे ते चेतनता समजो खरी,
बुद्धिसागर सत्य ज्योति चेतननी दिलमां धरी. ॥२॥

व्यवहार धर्मनी महत्ता.

छप्पयछंद.

मूकीने व्यवहार धर्मने केइक भूल्या,

शुष्कज्ञानथी केइक भव जंझाळे झूल्या;
परम्परागम त्यजीने भवदरिये कै डूल्या,
शाब्दिक तार्किक पण्डितमाने केइक फूल्या;
रही मायाना पाशमां जीव सोऽहं मुखथी उच्चरे,
बुद्धिसागर ज्ञान विण ते भवसागरने क्युं तरे. ॥ १ ॥
कहेणि सम रहेणी नहि जेनी ते नहीं मोटा,
बोली वणगां फूंके तेना नहीं छे तोटा;
ज्ञान लही विरतिने वीरला सज्जन पामे,
इन्द्रादिक ज्ञानी विरतिने शीर्षज नामे;
धन्य धन्य जगमां अहोते वोले तेने पाळता,
बुद्धिसागर ज्ञानथी ते पाप पङ्क पखालता. ॥ २ ॥

व्यवहारधर्ममहत्ता.

छप्पयछंद.

धरि धर्म व्यवहार टेकथी केइक तरिया,
धरि धर्म व्यवहार मुक्तिने केइक वरिया;
धरि धर्म व्यवहार थया केइ गुणना दरिया,
धरि धर्म व्यवहार सिद्धमां केइक ठरिया;
जल विना जेम वृक्ष देखो उभुं त्वरित सूकाय छे,
व्यवहार धर्म जलाभावे तीर्थ वृक्ष छेदाय छे. ॥ १ ॥
मूळविना नहि वृक्ष वृक्ष विण क्यांथी डाळां;
जलविना नहीं भरियां जाणो नद ने नाळां,
मात विना नहि पुत्र पुत्र विण कोनो वापा;
वदन विना नही वेण होय शुं वचन विलापा,
कारण विना न कार्य छे, जग समज समज भवि सानमां;
व्यवहार धर्म विना नहि छे भाव धर्म सुतानमां. ॥ २ ॥



ब्रह्म निरपेक्ष संग्रह नये मानतां,
ब्रह्ममां भ्रान्तिथी भूल थावे;
वचन सापेक्ष संग्रह नये मानतां,
व्यक्तिनी भिन्नता सत्य पावे. ध्यान. ॥ ५ ॥
सूक्ष्म ज्ञानि प्रभु गुरुगमे धारिने,
समजजो सप्त नयथी प्रमाता;
तत्त्ववादे ग्रहे आतमा ब्रह्मने,
बुद्धिसागर मुनि ब्रह्म माता. ध्यान. ॥ ६ ॥

आत्माने जागृतिभावनो उपदेश.

झूलणा.

जागरे आतमा जागरे आतमा, मोहनी उंघमां चोर लूंटे;
वित्त दारा अने विषयनी वासना, पाशथी शत्रुओ खूब कूटे. जाग. १
वृत्ति बाहिर्वहे कर्म आठे ग्रहे, आतमा भ्रान्तिथी भान भूल्यो;
क्रोधने मानथी लोभ मायाथकी, लक्ष चोराशिमां खूब झूल्यो जाग. २
पामी मानवपणुं पुण्य उत्कर्षथी, मुक्ति साधन अरे तें विसार्युं;
खूब अपकृत्यथी पाप गाडुं भर्युं, जाववुं नरकमां केम धार्युं. जाग. ३
श्वास उच्छवासथी जीव आयु घटे, खबर नहि कालनी केम थाशे;
कालनुं कृत्य ते आ क्षणे कीजिए, धर्मथी आ भवाब्धि तराशे. जाग. ४
कोटि धन आवशे नहि कदी साथमां, पाप ने पुण्य साथेज आवे;
दान करजे सदा धर्म वाटे मुदा, दानथी आतमा मोक्ष पावे. जाग. ५
स्मरण कर देवनुं शरण जे दीननुं, साधुना दर्शने पुण्य थावे;
साधु दर्शनथकी साधु वन्दनथकी, कोटिभवनां कर्यां पाप जावे. जाग. ६
साधुना सङ्गथी आतमा जागतो, तीर्थ जङ्गम मुनि भव्य सेवो;
तीर्थ जंगम मुनि कल्पवेली अहो, पुष्करावर्तना मेघ जेवो. जाग. ७

धर्मप्रभाव.

झूलणाछन्दः

धर्म कर आतमा धर्म कर आतमा, धर्मथी होय संसार पारो;
धर्म करतां कदी धाड आवी पडे, पूर्वना कर्मथी ते विचारो. धर्म १
धर्मथी देवता धर्मथी मानवी, धर्मथी नरपति श्रेष्ठ थावे;
धर्मथी इष्ट संयोग आवी मळे, धर्मथी दुःखदौर्भाग्य जावे. धर्म २
अग्नि पण जल हुवे सर्प माला हुवे, धर्मथी कीर्ति जगमां गवाती;
धर्मथी सिद्धिने पामतो मानवी, धर्मथी रूद्धियो सहु पमाती. धर्म ३
धर्मना तेजथी मेघ वर्षा करे, धर्मना तेजथी वाय वायु;
धर्मना तेजथी रात्रि दीवस थता, धर्मना तेजथी दीर्घ आयु. धर्म ४
मानवी उंघतो धर्मपण जागतो, धर्मनुं वांधिए सत्य भातुं;
चोर चोरे नहीं अग्नि बाळे नहीं, समज जो धर्मनु सत्य खातुं. धर्म ५
धर्मथी परभवे उच्च अवतार ले, धर्मथी पाप सर्वे प्रणाशे;
धर्मथी लब्धियो जीवने संपजे, धर्मथी सर्व बुद्धि प्रकाशे. धर्म ६
पग पगे रूद्धियो प्रगटती धर्मथी, धर्मथी दुनीआ हाथ जोडे;
धर्म हीरो तजी मूढ मानव अरे, पापना पत्थरे शीर फोडे. धर्म ७
सत्य आनन्दने मोज छे धर्मथी, पूर्वभवनां कर्यां आज पावे;
हालना धर्मने भोगवे परभवे, पामतो फल यथा बीज वावे. धर्म ८
आम बावळ अने लींबडो आंबली, मानवी जे रूचे तेहि वावो;
वाविए जेहवुं पामिए तेहवुं, नास्ति तेमां जरा कोइ दावो. धर्म ९
धर्मनां बीज वावो सदा प्रेमथी, चालजो धर्मथी मुक्तिवाटे;
बुद्धिसागर अरे चेतजे आतमा, माल छे मुक्तिनो शीर साटे. धर्म १०

भक्तिमाहात्म्य.

झुलणाछन्द.

भक्तिकर भक्तिकर भक्तिकर देवनी, सारमां सार जिन नाम साचुं;

देवना गानथी दील निर्मल बने,देवनी भक्ति विण सर्व काचुं.भक्ति.१
लुण विण भोजने रस जरा नहि पडे, भक्ति विण सेवना सर्व लुखी;
देवनी भक्तिथी सत्यसुख सम्पजे,भक्तिविण प्राणिया थाय दुःखी.
भक्ति. ॥ २ ॥

श्वास उश्वासमां स्मरण कर देवनुं, ध्येयरूपे सदाजिनयारी;
प्रेमनी भक्तिमां आंतरू नहि करो,देवनी स्थापना मूर्ति प्यारी. भक्ति.३
भक्तिनां अंग सर्व ग्रही भावथी, सेविये ते सदा सुखकारी;
भक्तिविण पार नहि होय संसारनो,भक्तिथी देव दळशे नठारी.भक्ति.४
भक्ति आधीन विभु आतमा भवतरे, भक्तियी स्वर्ग सिद्धि सुहावे;
देवनी भकित पण जीवना सन्मुखी, भकितकर्त्ता सदा सिद्ध थावे.
भक्ति. ॥ ५ ॥

देवनी भकितथी शकित शुभ जागती,चित्त लय भक्तिथी भव्य भाळो;
भक्तिमां मिष्टता संपजे स्हेजमां, भक्तिना मार्गमां आशु गाळो.
भक्ति. ॥ ६ ॥

भक्तिमां चित्तवृत्ति तणो रोध छे, भक्तिथी ज्ञाननी ज्योति जागे;
भक्तिथी आन्तरू नहीं प्रभुनुं कदी, भक्तियी भक्तनी भ्रान्ति भागे.
भक्ति. ॥ ७ ॥

भक्तिना तोरमां जोर छे कंइ नवुं, भक्तिनो योग कलिकाल मोटो;
भगतिया तेल जेवी लहो भक्तिने, भक्तिनो योग नहि भाइ छोटो.
भक्ति. ॥ ८ ॥

भक्ति साकारनी साधिए सत्यथी, भक्ति साकारमां चित्तलागे;
पगथियुं मुक्तिनुं भक्ति छे आद्यमां, चित्त चेतन प्रभु भक्ति जागे.
भक्ति. ॥ ९ ॥

भक्ति भक्ती रहे योगना रङ्गमां, भक्ति पण योग छे योग भक्ति;
पेड भेळां रहे नाम जूदां लहे,भक्तिना योगथी सत्य शक्ति.भक्ति.१०

भक्ति गङ्गा समी तीर्थ साचुं गणुं, भाक्तिना योगमां भूल नावे;
भक्तिथी शुन्य वृत्ति वहे वाल्लमां, भक्तिथी सत्य आनन्द थावे.
भाक्ति. ॥ ११ ॥

भक्तिनी भूनमां देव छे आतमा, भाक्ति रसथी रसिक कहावे;
भक्तिना पगथिये पाद मूकया थकी, जन्म मृत्यु तणां दुःख जावे.
भाक्ति. ॥ १२ ॥

भक्तिथी सहुमळे मोह माया गळे, भक्तिना भोजने भूख भागे;
भक्ति अमृत तणुं पान कीधा थकी, प्राणि रंगाय नहि अन्य रागे.
भाक्ति. ॥ १३ ॥

भक्तिनी औषधी.रोग सहु टाळती, भाक्तिना भावथी नित्य राचुं;
भक्ति भगवन्तनी भेद सहु भागती, देव भक्ति सहीत ज्ञान साचुं.
भाक्ति. ॥ १४ ॥

शुद्ध भावेरमी भाक्ति साची लेह, आत्मनी भाक्तिना केइ भोगी;
बुद्धिसागर निराकारनी भक्तिने, ज्ञानथी साधता केइ योगी.
भक्ति. ॥ १५ ॥

आत्मप्रभुनी स्तुतिः

झूलणाछंदः

सर्व शक्ति धणी योग चिंतामणि, योगना पगथिये पाद मूको;
अष्ट छे पगथियां योगनां आतमा, पामी अवसर कदि ते न चूको.
सर्व. ॥ १ ॥

यम अने नियम आसन तणा भेद बहु, चित्त उत्साहथी भव्य साधो;
प्राणने साधिए पूरकादि थकी, पांचमा भेदथी खूब वाधो. सर्व. २
धारणा धारिए ध्यानमां लीनता, एम अभ्यासथी शक्ति प्रकटे;

सर्वनो घात वकर्त्री अहो उंघ छे, उंघमां टेकनी भूल थावे;
उंघने टाळतां उंघने खाळतां, भान चेतनतणुं दील आवे. उंघ. ४
द्रव्यने भाव भेदे अहो उंघ छे, जगत्मां भावथी उंघ मोटी;
रागने द्वेषथी रमणता बाह्यमां, भाव निद्रा अहो केम छोटी. उंघ. ५
भावथी उंघता मोहना जोरथी, अटकता प्राणिया दुःख पावे;
विविध काया ग्रही घोर संसारमां, भटकतां पाररे केम आवे.उंघ.६
त्याग दूक्कर अहो त्याग दुष्कर अहो, भाव निद्रा तणो भव्य माळो;
बोलतां चालतां उंघतां प्राणिया, भाव निद्रा तणो एह चाळो.उंघ.७
उंघनी लहेरमां झेर छे मोटकुं, उंघमां दुःखनो पार नावे;
जागरे आतमा पामि सम्यक्त्वने,भोर वेळा अहो बोधि भावे. उंघ.८
उंघनी घेनमां घोर रात्री अहो, उंघ मिथ्या महा दुःखदायी;
जागने आतमा पामी सम्यक्त्वने–भक्ति उत्साहने चित्त लायी.उंघ.९
उंघने त्यागरे उंघने त्यागरे–चित्तमां चेतना शुद्ध धारी,
बुद्धिसागर सदामुक्तिना पंथमां–जागिने चालजे शीख सारी.उंघ.१०

शुद्ध चेतवणी उपदेश.

झूलणाछंद.

चेतरे मानवी चेतरे मानवी, चित्त चकडोळमां केम झूले;
मोहना फंदमां फोक फसियो अरे,तत्त्व विद्या लही केम भूले. चेतरे. १
मोहना तोरमां भान भूल्यो अरे, कामने क्रोधथी जन्म हार्यो;
ज्ञान वैराग्यने शुद्ध चारित्रथी, आतमा शुद्ध रूपे न धार्यो. चेतरे. २
विषयना वृक्षने वावतो प्रेमथी, प्राप्त थाशे फळो तो नठारां;
तत्त्व बुद्धि धरी मोह माया हरी, वावजे धर्मनां वृक्ष सारां. चेतरे. ३
पाणिमां माछलुं जेम तरस्युं रहे, तेम अज्ञानथी चित्त धारो;
ज्ञानना पाणिमां आतमा माछलुं, प्रेमथी आतमा भव्य तारो. चेतरे.४
चेतजे आतमा सारमां सार छे, शुद्धरूपे प्रभु तुं प्रकाशी;

दुग्धमां जळ मळ्युं हंस जूदुं करे, तादृशी दृष्टिने धार प्यारा;
तत्त्वदृष्टि धरी तत्त्वने पारखो, योगविद्या लही सत्य धारा.अलख. २
दृष्टि स्याद्वादनी वाद सहु टाळती, खाळती कर्मनो वेग ज्ञाने;
शुद्ध उपयोगथी अनुभवे आतमा सत्य आनन्दने तत्त्वभाने.अलख.३
ज्ञेयने ध्येय आदेय छे आतमा, ज्ञानथी ज्ञेयवस्तु प्रकाशी;
ज्ञेय ने ज्ञानरूपे सदा जे रहे, वस्तुधर्मे सदां छे विलासी. अलख. ४
सेविए आतमा सेविए आतमा, देह देवळ रहीने प्रकाशे;
तारिये आतमा तारिए आतमा, जागतां कर्मनो फन्द नासे.अलख.५
बन्ध सद्भावथी मुक्ति छे जीवनी, बन्ध नहि त्यां लहो केम मुक्ति;
मुक्तिनी युक्तिमां मुंझता मानवी,मोह अज्ञानथी करी कुयुक्ति.अलख.६
अलखनो देश निर्भय सदा शोभतो, अलखना देशमां सत्य शान्ति;
अलखना देशमां सत्य आनन्द छे, अलखना ज्ञानथी जाय भ्रान्ति.
अलख. ७
वीर वचनोथकी जाणिए अलखने, सात नयथी खरो अर्थ धारी;
त्यागि एकान्तने अर्थने धारिये,पामिए सत्यथी मुक्ति नारी.अलख.८
अलखना खेलमां भेळ नहि कर्मनो, खेलिए अलखनो खेल रागी;
बुद्धिसागर सदा अलखनी धूनमां, सत्यचैतन्यनी ज्योति जागी.
अलख. ॥ ९ ॥

संसारनी असारता.

झूलणाछन्दः

सर्व संसारना भाव छे कारमा, सार तेमां नथी सत्य भाखुं;
रूप जूदां धरे प्यार त्यां शुं करे, समजजे आतमा सत्य दाखुं. सर्व. १
क्षणिक आनन्दमां मोहथी मुंझीने, भव्य मानवपणुं केम हारे;
आजने काल करतां थकां मानवी,काळ आयुः हरे को विचारे. सर्व. २

स्वार्थनी भ्रान्तिमां ब्रह्मनी भूल छे, स्वार्थथी मोटकां पाप थावे.
स्वार्थ. ॥ ४ ॥
स्वार्थमां सहु फँस्या कोइ विरला वच्या, स्वार्थथी पापनी वात थावे;
स्वार्थथी धर्मनी चक्षुए अन्ध छे,स्वार्थथी पापनुं अन्न खावे.स्वार्थ. ५
दोषनुं मूळ छे स्वार्थ अवनी विषे, स्वार्थथी मानवी सत्य हारे;
मात पुत्रो हणे बाप पुत्री हणे,स्वार्थना दोषथी जीव मारे. स्वार्थ. ६
जगत्‌ना स्वार्थमां न्याय छे नहि कशो,जगत्‌ना स्वार्थमां दुःख मोटुं;
मोह अज्ञानथी स्वार्थनी आशमां,बोलता प्राणिया वेण खोटुं.स्वार्थ.७
स्वार्थनी धूनमां देव भासे नहीं, स्वार्थनी धूनमां भजन भूले;
स्वार्थना त्यागथी सत्य तो सांपडे, सत्य आनन्दता दील खूले.
स्वार्थ. ॥ ८ ॥
सङ्गति गुरुतणी सर्व सुखमूळ छे, स्वार्थना पाशने तेहि कापे;
बुद्धिसागर सदा स्वार्थने त्यागिए, ध्यान कीजे मुदा ब्रह्म जापे.
स्वार्थ. ॥ ९ ॥

परमार्थ स्वरूप.

झूलणाछन्दः

वात परमार्थनी सत्य छे जगत्‌मां, वात परमार्थनी दील धारो;
सत्य परमार्थमां प्रकट परमातमा,सत्य परमार्थथी दुःख आरो. वात. १
सत्य परमार्थमां धर्म सहु सम्पजे, सत्य परमार्थथी पाप जावे;
देवनी कोटि पण हस्त जोडी रहे, अप्सरावृन्द बहु गुण गावे. वात. २
सत्य परमार्थथी सत्य उपकार छे, सत्य परमार्थथी मुक्ति पामे;
आत्मथी भिन्न नहि सत्य परमार्थ छे,देवतावृन्द पण शीर्ष नामे. वात. ३
सत्य परमार्थमां दुःख आवी पडे, डगो नहि तेहथी धैर्य हारी;
जय सदा सत्य परमार्थनो जगत्‌मां,स्वार्थ त्यागी करो तत्र यारी. वात.४

डाकिणी शाकिणी भूत सहु नासतां, शियलना तेजथी भव्य जाणो;
मन्त्रनी सिद्धियो शियलना तेजथी, शीलथी होय नहि भय कशानो.
सत्य. ॥ ४ ॥

वचननी सिद्धि पण शियलना तेजथी, शियलना तेजथी सत्य शान्ति;
शियलनुं तेज छे सूर्यथी मोटकुं, शियलना तेजथी देहकान्ति. सत्य. ५
शियलनी सिद्धिमां सर्व सुखडां वसे, सर्व वृतमां सदा शील मोटुं;
शियलने जलधिनी उपमा शास्त्रमां, वेण जाणीश नहि भव्य छोटुं.
सर्व. ॥ ६ ॥

शियलना तेजथी योगनी सिद्धियो, शियलना तेजथी होय मुक्ति;
द्रव्यने भावथी शियलने धारवुं, सर्व सिद्धान्तनी एह युक्ति. सर्व. ७
पामिए बल घणुं शियलना तेजथी, शियलना तेजथी दीर्घ आयु;
शियलना तेजथी सर्व रोगो टळे, वीर तीर्थंकरे एम गायुं. सर्व. ८
द्रौपदी कुन्ती ने मदनरेखा सती, शियलना तेजथी शान्ति पाम्यां;
सर्व सङ्कट टळे च्हाय तेतो मळे, शियलना तेजथी दुःख वाम्यां. ९
ब्रह्मचर्ये सदा भव्य राची रहो, शियलने टेकथी दील धारो;
बुद्धिसागर सदा शियलना तेजथी, पामिए दुःखनो भव्य आरो.
सर्व. ॥ १० ॥

सत्यमहिमा.

झूलणाछन्द:

सत्य वाणी वदो सत्य वाणी वदो, सत्यवादी सदा भव्य मोटा;
जूठ वचने अरे सत्यने हारिए, जाणजो जूठथी दुःख गोटा. सत्य. १
सत्य बोली भवी कीर्ति कमला लहो, सत्यमां सर्व धर्मो समाया;
सत्य छे दिनमणि सारिखुं चळकतुं, सत्यथी शोभती जाण काया.
सत्य. ॥ २ ॥

दान ते पंचमां सूत्रमां भाखियुं, अभयसुपात्रथी स्वर्ग सिद्धि;
शालिभद्रे करी खीरना दानथी, रमन भोजन अने दिव्य ऋद्धि. दान. ४
दानथी मानिनां मानतो जाय छे, दानथी शत्रुओ मित्र थावे;
दुःख अग्नि प्रशम दानना मेघथी, दानथी लक्ष्मीनी लील पावे. दान. ५
अमर ते जगत्मां सत्य दातार छे, दान संवत्सरी वीर आपे;
सर्व तीर्थेश पण दानने आपता, दानथी दुःख दौर्भाग्य कापे. दान. ६
दानथी दुःखीनां दुःख दूरे टळे, दानथी कर्ण जगमां गवायो;
दानथी पामिए मान अवनी विषे, मेघरथ दानथी शान्ति पायो. दान. ७
दान दीधा थकी तीर्थकृत् थाइए, दानने देइए भव्य हाथे;
बुद्धिसागर सदा दान देतां थकां, दानथी धर्मनो होय साथे. दान. ८

कपट स्वरूप.

झूलणाछन्दः

कपटना फन्दथी चपट छे सत्यरे, दीलमां धारजे भव्य प्राणी;
कपटमां काळ विकराळ वासो करे, कपटथी कार्यमां धूळधाणी. कपट. १
कपटथी मल्लिजिन वेद स्त्री बांधियो, कपटथी मानवीवदन काळुं;
कपटथी खोदतां तो पडे पापियो, कपटथी मुक्तिना द्वार ताळुं. कपट. २
कपटथी केइ पॅड्या नरकमां रडवॅड्या, कपटमां कर्म बंधाय भारे;
कपटविषवृक्षनी छांयमां दुःख छे, कपटथी मानवी जन्म हारे. कपट. ३
पाप त्यां कपट छे कपट ते कर्म छे, कर्मथी जीव उंचो न आवे;
कपटनी खाइमां प्राणिया जे पॅड्या, दुर्गति दुःखने तेह पावे. कपट. ४
कपट दावाग्निमां जीवडा जे पॅड्या, जीववानो नथी एक आरो;
कपट किम्पाकना वृक्षने छेदिने, आतमाने अहो भव्य तारो. कपट. ५
कपट कजियातणुं मूळ छे जगत्मां, कपटथी देशनो ध्वंश थावे;
कपटथी राज्यलक्ष्मी तणो नाश छे, नरकमां जीवडा दुःख पावे. कपट. ६

प्रभातियुं

झुलणाछन्द.

चेत चेतन प्रभु रटन कर आपनुं, अलख निर्भय विभु तुं गुणागो;
कर्म कर्ता थयो कर्म भोक्ता थयो, लक्ष चोराशिमां खुब जायो. चेत. १
उंघ नाहि आतमा पामि मानवपणुं, ज्ञान वैराग्यथी ध्यान धर तुं;
राम रहेमान तुं शिव धाता हरि, आप वंधाय अव आप तर तुं. चेत. २
आत्मज्ञाने विभु व्यक्तिथी नहि कदा, शुद्धरूप प्रभु तुंहि समायो;
भक्ति भगवन्तनी चित्तमां जागतां, ज्योति झगमग भइ स्थान पायो.
चेत. ॥ ३ ॥
शक्ति सिद्धि सकल जागती ध्यानथी, ध्यानथी कर्म सघळां विडारे;
शुद्ध निर्मल वनी मुक्तिसुख भोगवे, ज्ञानवैराग्यथी मोह मारे.
चेत. ॥ ४ ॥
जाग अव आतमा शूर थइ साहिवा, मोह माया थकी रही उदासी;
बुद्धिसागर हवे टेक धारी प्रभु, अलखनी धुनमां सिद्धवासी. चेत. ५

प्रभातियुं.

झुलणाछन्द.

जाग अव आतमा जाग अव आतमा, दील नवकारनुं स्मरण कीजे;
कोण हुं शाथकी आवियो क्यां थकी, कृत्य शुं आतमा केम छीजे.
जाग. ॥ १ ॥
हेय आदेयने ज्ञेय शुं जग विषे, आज लगी आत्महित शुं विचार्युं;
चेत चेतन प्रभु उंघ नाहि आळसु, मोह मायाथकी जीवन हार्युं.
जाग. ॥ २ ॥
श्वास उश्वासमां आयुरे जाय छे, वीतियुं जीवन नहि फेर आवे;
राज राणा गया देव दानव गया, अमर नहि कोइ जगमां रहावे.
जाग. ॥ ३ ॥

लब्धि सिद्धि तणुं स्थान तुं आतमा, जाग चेतन प्रभु शुद्ध भावे;
ढंग नहि आतमा अलखना पन्थमां, अनुक्रमे योग सिद्धि सुहावे.
योग. ॥ ८ ॥

अलखनी धूनमां भासता दिनमणि, भक्ति उत्साहथी यत्न धारो;
बुद्धिसागर सदा ज्योतमां जागजे, शुद्ध चेतन प्रभु चित्त प्यारो.
योग. ॥ ९ ॥

आत्माने सत्यशिक्षा.

झुलणाछन्द.

सत्यशिक्षा सदा आतमा मानजे, नित्य आनन्दना भोग साटे;
ज्ञानि सङ्गे रहो ज्ञान साचुं लहो, चालजे मोक्षनी सत्य वाटे. सत्य. १
मूर्ख सङ्गत तजो देव अर्हन् भजो, शरणुं गुरुनुं करो भव्य प्राणी;
देह ममता तजो मोक्ष साधन सजो, सत्य सिद्धान्तनो सार ताणी.
सत्य. ॥ २ ॥

मोह माया हरो ध्यान उत्तम धरो, जाप अजपा जपो तत्त्वरागी;
वास एकान्त ध्याने सदा राचिए, शुद्ध रूपे सदा चित्त जागी.
सत्य. ॥ ३ ॥

कटुकता लींबनी भोगनी तेहवी, दुःखदायी तजोने विकारो,
भोग प्रारब्धना वेदिए बाह्यथी, भिन्न अन्तरथकी टील धारो. सत्य. ४
भोग रोगो करी लेखवो मन विषे, मोहना हेतुने दूर वारो;
श्वास उश्वासमां आयु जावे अरे, त्वरित चेतन अरे भव्य तारो.
सत्य. ॥ ५ ॥

जाय परभावमां श्वास उश्वासरे, भव्य भूले अरे शुं विचारी;
पामि मानवपणुं चेतजे चित्तमां, भूलतां दुःख पामीश भारी. सत्य. ६

जिनतुं साहिबा दीन परभावथी, जागतां सर्व शक्ति प्रकाशे;
बुद्धिसागर प्रभु आतमाराम तुं, ध्यानथी ध्येय रूपे प्रभासे. अलख. ९

आत्माने हितशिक्षा.

इन्द्रविजय छन्दः

चेतन चित्त विचार अहो सहु
जीवन व्यर्थ सदाय वहे छे;
आतम तत्त्व लहे सफलो भव
वीर जिनेश्वर सत्य कहे छे.
आदररे जीव सादरथी दील
धर्म सदा सुख शाश्वतकारी
धीनिधि आतम मान अरे शिख
वीर जिनेश्वर तत्त्व विचारी ॥ १ ॥
मान अने अपमान समा गण
मित्र तथा अरिभाव समाना
आतम ते परमातम साहेब
ध्यान थकी कवी बुहोत न छाना
अन्तर धर्म धर्यां विन निष्फल
कष्ट क्रिया सौ चित्त सुजाणो
श्वास उच्छ्वास विषे मुनि नाणथी
मुक्ति लहे मनमां इम आणो ॥ २ ॥
ध्यान धरो भली भात सदा घट
बाह्य उपाधि सदा दुर वारी
विश्व विषे सुखकारक ध्यानज
चेतन तत्त्व विचारज धारी

ज्योति तदा हृदय झलके भवी
कर्म कलंक बधा हरनारी
धीनिधि चेतन सेवनथी पाते
धर्म लही सुख शाश्वत मारी

ज्ञानस्तुति.

भुजंगी छंद.

सदा ज्ञानने वन्दिए भव्यभावे मनुष्यो लही ज्ञानने मुक्ति पावे,
विना ज्ञान भव्यो गणो अन्ध जेवा, सदा ज्ञाननी कीजिए भव्य सेवा १
जिनेन्द्र प्रभु ज्ञानने मुख्य भाखे, लही ज्ञानने तीर्थने सुरि राखे
सदा सुर्यवत् जेह तत्त्व प्रकाशी, भवी प्राणियो ज्ञानना नित्य प्यासी २
उपादेयने हेयने ज्ञेय भावा सदा ज्ञानमां भासता ते स्वभावा
जुओ श्वास प्रश्वासमां भव्य नाणी करे कर्मनी नष्टता सत्य जाणी ३
सदा ज्ञाननी ज्योतमां सर्व भासे सहु ज्ञाननी ज्योतिथी कर्म नासे
विना ज्ञान भव्यो न होवे विवेकी;विना ज्ञानथी धर्मना को न टेकी ४
नमो ज्ञानने सत्यनुं जे प्रकाशी, कहो ज्ञानने उपमा गङ्ग काशी;
दिले शोभतुं ज्ञान उद्योतकारी, श्रुत ज्ञानने वन्दना नित्य म्हारी. ५
जुओ सूत्रमां ज्ञान छे तीर्थ साचुं, श्रुत ज्ञानना तीर्थमां नित्य राचुं;
भणावो गणावो भणो भव्य भावे, श्रुत ज्ञानथी दीपना वृन्द जावे. ६
अहो ज्ञान साचुं विनेय प्रकाशी, जगत्मां घणुं दीपतुं जे विलासी;
नमुंछुं सदा ज्ञानने पाय लागी, अहो बुद्धिथी चेतना शुद्ध जागी. ७

उज्ज्वल ध्यान.

दोहरा.

एकरूप हुं द्रव्यथी, एकरूप हुं सत्त्व;
हुं तुं शम्या विकल्प सहु, शुद्ध बुद्ध सुखतत्त्व. १

शुद्ध तत्त्व उपयोगथी, प्रगटे सत्यानन्द;
अनुभवता ज्ञानी अहो, समजे शुं मतिमन्द. २
उपादान निमित्त दोय, भेदे धर्म कथाय;
जिनवरनी वाणी ग्रहे, भेद भाव सहु जाय. ३

श्री महावीर प्रभुस्तुतिः

चोपाइछन्द.

वीर जिनेश्वर लागुं पाय, शरण शरण तुं छे सुखदाय;
अडवडियांनो तुं आधार, तार तार सेवकने तार. ॥ १ ॥
जगमां साचो तुं छे देव, सुखकर साची त्हारी सेव;
हुं छुं पापीनो शिरदार, थाशे केवा मुज अवतार. ॥ २ ॥
भणी भणीने भूल्यो भान, निशादिन परभावे गुलतान;
उतार्युं नहीं अन्तर्ज्ञान, ए सौ जाणो छो भगवान्. ॥ ३ ॥
मननी चंचलता नहि मटी, लेश न परनी ममता घटी;
मन मर्कटना अवळा फेर, वर्ते छे अन्तर अन्धेर. ॥ ४ ॥
अमूल्य जीवन चाल्युं जाय, पण पस्तावो लेश न थाय;
मोहे मुंझ्यो पामर जीव, पर स्वभावे रमे सदीव. ॥ ५ ॥
केवल ज्ञानि जाणो सहु, जाणंताने शुं बहु कहु;
मनडुं मुंझे मायाझाळ, अन्तरनो आवे नहि ख्याल. ॥ ६ ॥
अहो गति शी मारी थशे, माळियुं जीवन चाल्युं जशे;
हार्यो हाथे जीवन सर्व, फोगट फुली कीधा गर्व. ॥ ७ ॥
खरे दीवस मारे अन्धार, शीरीते पामिश भवपार;
खरो एक त्हारो आधार, करजे पापीनो उद्धार. ॥ ८ ॥
समजीने नहि करु प्रयत्न, ग्रह्यां न ज्ञानादिक त्रिरत्न;
ठाठ माठमां हार्यो सार, जिनजी त्हारो छे आधार. ॥ ९ ॥

श्री वर्धमान जिनस्तुतिः

मालिनीवृत्तम्

अकलंक निधि धीरः, वीर जिनेश देवा,
सुरनर सुखद सेवा, सारता देव देवाः
मदन मदन नाणी, भाव तारो प्रमाणी,
सरस वचन वाणी, आदरे भव्य प्राणी. ॥ १ ॥
स्तवन नमन कीजे, तत्त्वनें ज्ञान लीजे,
प्रभु वचन सुणीने, भव्य प्राणी तरीजे;
धनिपति नरेन्द्रा, लोकमां नित्य गावे,
अभय सरस पावे, मुक्तिमां शिव जावे. ॥ २ ॥
शरण शरण ताहरे, नाथ तुं छे दयालु,
चरण कमल सेवा, नाथ देजो कृपालुः
स्तवन नमन कीजे, कर्मनां दुःख कापे,
नव गुण गण भावे, ध्येयनुं रूप आपे. ॥ ३ ॥
गत मलिन विरागी, वन्दुं पाय लागी,
तुज विण नहि जाणुं, बाल हारोज मागी;
जनन मरण फेरा, भागशे वीर नामे,
धीनिधि मुनि नमे छे, प्रेमथी अष्ट यामे.

सद्गुरु स्तुति.

मालिनी छन्द.

सरस सुखद सेवा, सेव्यनी तो कहावे,
गुरु वचन लहीने, मोक्षमां भव्य जावे;
शरण शरण साचुं, शिष्यनुं दुःख कापे,

अज अमर सारुं, मोक्षनुं स्थान आपे. ॥ १ ॥
गहन समय वाणी, बोध तेनो प्रकाशे,
गुरुगम विण कांई, ज्ञान निशे न भागे;
चरणकमल सेवा, पूर्वपुण्ये लहीजे,
गुरुवदन निहाळी, सत्य शांति ग्रहीजे. ॥ २ ॥
जिनवर मकरंद धारे, सद्गुरु मेघ भारे,
गुरु नवलकृपाथी, दुःख दौर्भाग्य जावे;
प्रतिदिन गुरु वन्दुं, धर्मनुं दान दाता,
सरल वचन बोले, सर्व वस्तु प्रमाता. ॥ ३ ॥
गुरुगुण गण गवाणो, सद्गुरु प्राणदाता,
गुरुवति पति वंदे, सत्य ते भव त्राता;
भवक शरण हार, भावना एक आरे,
बुद्धिनिधि मुनि नमे छे, तुं नर्क जिनव वारे. ॥ ४ ॥

—

आत्माने अलखदेशोपदेश.

कवित.

अलख देशमां देव वाल्हो, अलख देशमां देव न्हाळो,
अलख देशनी धून लागी, अनुभव ज्योतिनी दर जागी. ॥ १ ॥
अलखना मार्गे प्रभु पाम ते, अलखना लिवा अन्य काम छे,
अलख रूपमां मगन थई रहे, अलख देशन करवी सद. ॥ २ ॥
अलख धूननी लाग ते मांही, अलख ज्ञाननो आनंद वांही,
अलख वातथी अभिन्न मांही, अलख वस्तुनी परख करी. ॥ ३ ॥
अलख देशना वीर ना धरा, अलख देशने पामिए तरा,
अलख आंखथी सर्व जाणवुं, अलख आंखथी कर्म वारवुं. ॥ ४ ॥
अलख मन्त्र छे सिद्ध जाणवो, अलख धूनथी काम वारवो,

अलख आत्मना ध्यानमां रहुं, अलख शान्तिने प्रेमथी लहुं. ॥५॥
अलख ज्योतमां जागवुं सदा, अलख ज्योतमां दुःख ना कदा,
अलख देशनी धूनमां रहे, अलख तत्त्वने योगियो लहे ॥ ६ ॥

जीवने चेतवानो उपदेश.

मुखडा क्या जोवे दर्पणमां—ए राग.

जीवडा चेतीले चटपटमां, खुंच्यो शुं खटपटमां. जीवडा.
सगपण काचां छे दुनीआनां, मायाना तरकटमां;
काच कुंभ सम काया काची, मोह वने जीव अटमां. जीवडा. १
तन धन योवन जुटुं जगमां, समज समज तुं घटमां;
काळ कोळीओ त्हारो करशे, झडपीले झटपटमां. जीवडा. २
लक्ष्मी ललनानी लालचथी, लाग्यो शुं लटपटमां;
अणाधार्यो उठीश अंते तुं, काळ पकडशे चटमां. जीवडा. ३
शाब्दिक तार्किक पण्डित वनीने, भूल्यो शुं घटपटमां;
आत्मज्ञान विण सत्य न लहियुं,पडियो भव अरहट्टमां. जीवडा. ४
अप्पा सो परमप्पा समजी, अवर कशुं दील रटमां;
बुद्धिसागर अन्तर ध्याने, मुक्ति लहे जीव झटमां. जीवडा. ५

समाधि.

सवैया एकतीसा.

आत्मसमाधि जगमां मोटी, तारे भवोदधिनी पार,
चिन्मय चेतन आपस्वभावे, शाश्वतसुख वेदे निर्धार;
सद्गुरु ज्ञानी मुनि अवलंबी, आतम समाधि पामो सार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ १ ॥
बाह्य वस्तुमां इष्टानिष्टे, मुंझ्यो आतम भूली भान,

राग दोषथी कर्मग्रहीने, भ्रमण करे भवमां नादान;
रत्नत्रयीनी माप्ति विण आ, जाणो फोगट मनु अवतार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनंत सुख पामो नरनार. ॥ २ ॥
दर्शन नाण अने वळी चरणे, पामो साचो मोक्ष सुपन्थ,
तत्त्वार्थमांहि साचुं भाख्युं, साक्ष पूरे छे बहुला ग्रन्थ;
रत्नत्रयी मळतां छे मुक्ति-एक एकथी फदीं न धार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ३ ॥
पिण्डस्थादिक चार भेदथी, ध्यावो चेतन सुख भरपुर,
अप्पा सो परमप्पा परगट, चेतनथी मुक्ति नहीं दूर;
तिरोभाव चेतन गुण सत्ता, आविर्भावे कृत्य विचार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो. अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ४ ॥
अशुद्ध भवि पुद्गल कर्त्ता, हर्ता शुद्ध स्वभावे भव्य,
अन्तरना उपयोगे रहेवुं, भाव धर्मनुं ए कर्तव्यः
शुद्ध स्वभावे शक्ति प्रगटे. कर्म मर्मनो नासे भार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्तसुख पामो नरनार. ॥ ५ ॥
भासे ज्ञेयस्वरूपे सुख पण, ज्ञाने ज्ञाता चेतनरायः
उपशम क्षयोपशम ने क्षायिक, सत्यधर्म चेतन कहेवाय;
सुखनी धारा जग जयकारा, प्रगटे चेतनमां जयकार,
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ६ ॥
धर्म ध्यानना पाया चारे, भावो भक्तिथी सुखकारः
चार भावना मैत्री आदिक, ध्यातां नासे मिथ्याभार,
स्थित्युत्पत्ति व्ययनो योगी, अशुद्ध परिणतिने हरनारः
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ७ ॥
स्मरजो श्वासोश्वासे चेतन, केवलनाणी सुखनी खाण;
तप जप संयम चेतन हेते, करशो पामी जिनवर आण.

बुद्धिसागर सद्गुरु सङ्गति, करजो धरीने सद्व्यवहार;
स्थिरोपयोगे चेतन ध्यावो, अनन्त सुख पामो नरनार. ॥ ८ ॥

आत्मानुभव स्वरूप.

सवैया एकतीसा.

अनुभवना प्यासि तुं हंसा, अलखस्वरूपी छे निर्धार,
सोहं सोऽहं चिन्मय चेतन, ब्रह्म स्वरुपी ज्ञानाधार;
जकडाणो शुं माया झाळे, भूलीने पोतानुं भान,
स्वयं प्रकाशी परप्रकाशी, चेतन धर पोतानुं ध्यान. ॥ १ ॥
आंखे सारुं खोटुं देखे, आंख मिंचाये ते सहु फोक,
हुं ने मारुं सहु छे मिथ्या, ममता करता फोगट लोक;
म्हारुं त्हारुं भूली हंसा, करतुं शाश्वत गुणनो प्यार,
निर्भय देशी सिद्ध समोवड अनंत गुणनो छे दातार. ॥ २ ॥
इष्टानिष्टपणु सहु मिथ्या, पुद्गलमां भासे नहि सार,
स्थिरोपयोगे वीर्य शक्तिनी, प्राप्ति चेतनमां छे धार;
शक्ति अनंति चेतन प्रकटे, करतां पिंडस्थादिक ध्यान,
नमुं नमुं हुं चेतनराया, शुद्ध बुद्ध त्राता भगवान्. ॥ ३ ॥
अकल कला जगजीवन त्हारी, महिमा त्हारो अपरंपार,
श्वासोश्वासे अजपाजापे, अनुभव ज्योति प्रकटे सार;
अहो धन्य तुं आतमराया, निराकार वर्ते साकार,
बुद्धिसागर अवसर पामी, आतम तुं पोताने तार. ॥ ४ ॥

॥ सम्प प्रेरणा ॥

सवैया एकतीसा.

जागो झटपट जैनबन्धुओ, द्वेष क्लेशने त्यजशो खार;
वैर झेरने दूर करीने, एकमेकथी कीजे प्यार;

मत मतान्तर झघडा त्यागी, धर्म्मिजनोनी कीजे व्हार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ १ ॥
सम्यग् ज्ञान विना गोटाळो, वात वातमां पडिया भेद;
सङ्घ चतुर्विध सम्प न वर्ते, ते देखतां प्रगटे खेद,
सम्प करीने खेद नीवारो, सफल करो मानव अवतार;
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ २ ॥
त्रिशलानन्दन वीर जिनेश्वर, विरहे जिनशासन छेदाय;
धार्मिक केळवणी नहि मळतां, मिथ्यात्वी जैनो थइ जाय,
जागो वीरना भक्तो जैनो, करशो जिनशासन उद्धार;
जैन बान्धवो हळी मळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ३ ॥
धर्म धुरंधर पूर्वाचार्यो, थई गया शासन सुलतान,
कमर कसीने जैन पताका, वर्तावी पामीने ज्ञान,
जैन धर्मनी वृद्धि कीधी, हेमचन्द्र जेवा जयकार,
जैन बान्धवो हळी मळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ४ ॥
तन मन धनथी ज्ञान भणावो, सङ्घ चतुर्विध करशो सहाय,
जूनां पुस्तक फेर लखावो, जैनाभ्युदय सरल उपाय;
सहाय करीने श्रमण भणावो. उपदेशे करवा तैयार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ५ ॥
पण्डित थतां मुनिवर मण्डल, जैनोन्नतिनां करशे काम,
व्याख्यानोने कथी रचीने, पूर्व सूरिवर राखे नाम;
ते माटे मुनिमण्डल म्हाये, धन खर्चो श्रावक नरनार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ६ ॥
जागो भव्यो आळस त्यागी, शिक्षा मारी सुणजो कान,
धर्मप्रेमने दीलमां धारी, त्याग करीने मिथ्या मान;
ज्ञानीज्ञानी पेठे जैनो, जागो श्रावकने अणगार,

जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ७ ॥
मिथ्यावादो दूर करीने, धार्मिक सारां कीजे काज,
धर्म फेलावो करशो जैनो, तेथी रहेशे जाति लाज;
बुद्धिसागर जैनोदयनां, कार्यो करवां थइ हुंशियार,
जैन बान्धवो हळीमळीने, सम्पीने चालो संसार. ॥ ८ ॥

मुनि सद्गुरु स्तुति.

सवैया एकतीसा.

नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वैरागी त्यागी शुरवीर,
पञ्च व्रतोने प्रेमे पाळे, धर्म ध्यानमां वर्ते धीर;
देशो देश विहार करीने, उपदेशे छे नर ने नार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ १ ॥
सङ्घ चतुर्विधमां जे म्होटा, जिनशासनमां जे सुलतान,
जैनोन्नतिमां जीवन गाळे, धर्मरत्ननुं देता दान;
साचुं जंगम तीर्थ मुनीश्वर, भवोदधि तारे नरनार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ २ ॥
श्रावकने मुनिवरनुं अन्तर, छिल्लरने सागर उपमान,
परम प्रभुमां मुनिवर भाख्या, करता पिण्डस्थादिक ध्यान;
त्रिज्ञानी पण वीर जिनेश्वर, दीक्षा लेवे मुनिनी सार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ३ ॥
मुनिवर वैयावृत्ये राचो, करशो मुनिवरनुं बहु मान,
मुनि विना नहीं सङ्घ कहावे, आवश्यकमां मुनि भगवान,
सुरि वाचक पण मुनिवर वेषे, सङ्घ चतुर्विधना आधार,
नमो नमो मुनिवर सुखराजा, वन्दन होजो वारंवार. ॥ ४ ॥
व्रत उच्चरवां मुनिनी पासे, आगममां भाख्युं छे स्पष्ट,

परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय. ॥१॥
नय सप्त ने चार प्रमाणे, षड् द्रव्यो भाख्यां निर्धार;
सप्त भङ्गीमां रचना कीधी, अनेकान्तमतनी सुखकार;
देशोदेश विहार करीने, समजाव्या तें सत्योपाय;
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय. ॥ २ ॥
दर्शन ज्ञान चारित्रे मुक्ति, विस्तारे समजाव्युं तेह;
श्रावक साधु धर्म बताव्या, समजाव्या छे पञ्च देह,
औदयिक आदि पञ्चभावने, कथिया सुखथी तें जिनराय;
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय. ॥ ३ ॥
दया धर्मना धोरी स्वामी, तीर्थंकर भव तारणहार;
सङ्घ चतुर्विध महा तीर्थने, स्थापी कीधो छे उपकार,
द्रव्य क्षेत्र ने काल भावथी, तत्त्व कथ्यां छे तें जिनराय,
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय. ॥ ४ ॥
बहु उपकारी शिव सुखकारी, गुण त्हारा छे अपरंपार;
तवगुण ध्यातां ध्येय स्वरूपे, ध्याता थावे छे निर्धार,
बुद्धिसागर करुणा करशो, शरण शरण तुं छे सुखदाय;
परम महोदय जिनवर वन्दु, बे कर जोडी लागुं पाय. ॥ ५ ॥

नवतत्त्वस्वरूप.

सवैया एकत्रीसा.

जड चेतन आस्रव ने संवर, निर्जर बन्ध अने छे मोक्ष,
सप्त तत्त्व ए चित्त विचारी, समजीने प्रत्यक्ष परोक्ष;
अजीव आस्रव बन्ध त्रण ए, हेय विजाणि हृदये धार,
समजी चेतन सम्यग ज्ञाने, भवजलधि तरशो नरनार. ॥ १ ॥
जीव संवर निर्जर ने मुक्ति, उपादेय तत्त्वो छे चार,



अनुभवामृत क्षण क्षण पीवो, शुद्धस्वरूपे निशदिन जीवो.
. आतम. ॥ ५ ॥
क्षायिकभावे निजपद मळवुं, बुद्धिसागर निजपद भळवुं.
आतम. ॥ ६ ॥

असल फकीरीनी खुमारी.

गजल.

फकीरी त्यां न दीलगीरी, फकीरी अर्पती सिरि;
फकीरी दुःख हरनारी, फकीरी सुख करनारी. फकीरी. १
फीकरनी फाकीओ भरवी, फकीरी दीलमां धरवी;
फोगट नहि फंदमां फूलुं, भणीने भाव नहि भूलुं. फकीरी. २
जगत्मां जागतुं ज्योतिः, खरुं शोधुं जीवनमोति;
अमारे शोधवुं साचुं, हमारे छोडवुं काचुं. फकीरी. ३
हमारे चालवुं देशे, हमारे आत्मना वेषे;
हमारे सर्वनुं सहेवुं, भलामां नित्य चित्त देवुं. फकीरी. ४
अलखना प्रेममां तरवुं, अलखना प्रेममां फरवुं;
बुद्ध्यब्धि प्रेमना प्यारा, फकीरी वेष छे न्यारा. फकीरी. ५

ओधवजी संदेशो कहेशो श्यामने-एराग

रामपद.

राम राम रटना लागी छे ज्ञानथी,
पिंडे परगट वसियो आतमराम जो. रामराम. ॥ १ ॥
निजगुण रमतो राम कहायो आतमा;
जीव चेतन आतम सहु एनां नामजो. रामराम.

कृष्णस्तवन.

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने—ए राग.

औदयिक जलधिमां शुं उंघो कृष्णजी,
रत्नत्रयी लक्ष्मीना स्वामी धीर जो,
अनन्त निजगुण सृष्टिपालक विष्णुजी,
गिर्वाणी धारक गिर्धारी वीर जो, औदयिक. ॥ १ ॥
समकित चक्र सुदर्शन हृदये धारता,
मोहारि जागो अलवेला नाथजो,
जागतां दुष्टो सहु दूरे भागशे,
कोइ न शत्रु भरशे तुजथी बाथजो. औदयिक. ॥ २ ॥
प्राणपति परकर्त्ता भोक्ता तुं थयो,
परस्वभावे रमतां श्रीभगवानजो,
आप स्वभावे रमतां सुखडां सहु लहे,
जाग जाग चेतनजी लावी भानजो. औदयिक ॥ ३ ॥
परकर्त्ता परभोक्ता स्वामी नहि हुवे,
आप स्वभावे रमतां आतमरामजो,
निजगुण कर्त्ता परगुण हर्ता ध्यानथी,
कृष्ण विष्णु ए छे सहु आतम नामजो. औदयिक ॥ ४ ॥
अनेकान्त दर्शनथी चेतन कृष्ण छे,
शुद्ध चेतना गोपी विनवे व्हालजो.
बुद्धिसागर सप्त नयोथी आतमा.
ध्यावो गावो प्रगटे मङ्गल माल जो. औदयिक ॥ ५ ॥

॥ आत्मविज्ञप्ति ॥

॥ वीरचन्दुं भक्तिनां भार नाणां ए राग. ॥

आतमा अरजी आ उरमां स्वीकारो. ध्याने पोताने तो तारोरे.
आतमा.

साह्य करोने प्रभु शरणुं तमारु, तारोने सांभळी पोकारो,
बुद्धिसागर व्हारे आवोने बापजी, करजो सेवकनो उद्धारोरे.
नेमजी ॥ ४ ॥

आवश्यकस्मृतिः

अर्ह अर्ह समरतां, लहिए भवनो पार;
सत्यदेव अरिहन्त छे, तेनो मुज आधार. ॥ १ ॥
सूतां खातां वेसतां, चालतां अरिहन्त;
जे भवि प्राणी समरशे, थाशे शर्म्म अनन्त. ॥ २ ॥
अरिहन्त महामन्त्र छे, समरजो नर ने नार;
मङ्गल मोटुं जाणिए, होवे जग जयकार. ॥ ३ ॥
मनुष्य भव पामी भवी, दो करवानां काम;
देनेका टुकडा भला, जपना आतमराम. ॥ ४ ॥
बुद्धिसागर ज्ञानथी, वे वातो दिल धार;
दयाधर्म हृदये धरि, जपवो श्री नवकार. ॥ ५ ॥
बुद्धिसागर वात दोय, समजी घटमां धार;
दया धर्मनी सेवना, करवो परउपकार. ॥ ६ ॥
मुसाफर जीव जगतमां, दान धर्म कर भाइ;
आंख मिचाए कल्पना, जूठी एह सगाइ. ॥ ७ ॥
आतम ते परमातमा, घट घट रहे समाइ;
बुद्धिसागर प्रेमथी, कुंचि गुरुए वताइ. ॥ ८ ॥
करवानुं वहु काम छे, पामी मनु अवतार;
मोहे मुंझी शुं मरे, चेती आतम तार. ॥ ९ ॥
ज्ञान विण जीव अंध छे, सान विना ते ढोर;

सद्गुरु शिक्षा लोपिने, मूर्ख शिष्य परताय;
फोग्या काननी कुतरी, पेठे ठाम न पाय. ॥ २३ ॥

श्रावकहितशिक्षा.

म्हाला वीर जिनेश्वर–ए राग.

श्रावक हितशिक्षा तुं हृदये सारी धारजे रे,
हिंसा चोरी चुगली निंदा दोषो वारजे रे;
साची श्रद्धा जिननी राखी, आतम अनुभव,
अमृत चाखी, पोताने तुं भवजलधिथी तारजे रे. श्रावक. १
श्रावकनां व्रत उच्चरी टेके, करजे कृत्यो धर्म विवेके;
कर्माष्टक क्रोधादिक शत्रु विडारजे रे. श्रावक. २
जिन शासनने बहु अजवाळी, द्वेष क्लेश इत्यादिक टाळी;
चित्तवृत्तिने आत्मस्वरुपे ठारजे रे. श्रावक. ३
सद्गुरुशरण ग्रहीने सारुं, त्यज तुं लागे जेह नठारुं;
बुद्धिसागर सद्गुरु शिक्षा धारजे रे. श्रावक. ४

अनुभवद्वासप्ततिः

छपायाछन्द.

परम महोदय श्री परमेश, वन्दु भावे श्री जिनेश;
भजन स्मरण कीर्तन तव सेव, शाश्वत अनुभव अमृतमेव,
अन्तर तव सरखो मुज देश, परम महोदय श्री परमेश. ॥१॥
सत्ताथी जोतां नहि भेद, सिद्धसमो वर्ते छे वेद
स्वरूप भूली हार्यो रत्न, कर्यो न किंचित् चेतन यत्न;
परस्वभावे पामुं खेद, सत्ताथी जोतां नहि भेद. ॥ २ ॥

अंधा आगळ दर्पण फोक, समजे नहि त्युं मोही लोक;
मोहीने प्रगटे नहि ज्ञान, बहिरा आगळ जेवुं गान. ॥ ११ ॥
दृष्टिरागी मोही मूढ, समजे नहि अन्तरनुं गूढ;
सद्गुरुवाणी सुणे न कान, तेने प्रगटे नहि निज भान,
अशुभ व्यवहारे छे रूढ, दृष्टिरागी मोही मूढ. ॥ १२ ॥
जिनवाणीनो मनमां वास, श्रद्धा साची समजे खास;
वर्ते निश्चयने व्यवहार, सद्गुरु आणा ग्रहीने सार,
उत्तम तेनो छे संन्यास, जिनवाणीनो मनमां वास. ॥ १३ ॥
भिन्न भिन्न जड चेतन ग्रहे, उपादेय चेतन सद्दहे;
भिन्न भिन्न लक्षणथी बोध, गुणनो अन्तर करतो शोध,
औदयिकथी न्यारो मन रहे, भिन्न भिन्न जड चेतन ग्रहे.॥१४॥
रागद्वेष छे बाहिर योग, ए नहि साचो भव्यो जोग;
क्षायिक भावे केवल योग, सत्य योगने जाणो लोक,
सुख दुःख बाह्य विषयमां रोग, रागद्वेष छे बाहिर योग.॥१५॥
रागद्वेषादिक दुःख मूळ, अज्ञाने वर्ते ए भूल;
अनंत भवनां कीधां पाप, चतुर्गति पाम्या संताप,
अज्ञाने मोटुं ए शूळ, रागद्वेषादिक दुःखमूळ. ॥ १६ ॥
राग दोषने त्यागे त्याग, धरजो चेतन तत्त्वे राग,
चेतन वस्तु साची खरी, ते में हृदये भावे धरी;
भाखे छे जिनवर वीतराग, राग दोषने त्यागे त्याग. ॥ १७ ॥
समजो षड्द्रव्योनुं ज्ञान, तेथी जाशे ममता मान;
अन्तरनुं अजवाळुं ओर, मिथ्यातम व्यापे नहि घोर,
आत्मानुभव अमृतपान, समजो षड्द्रव्योनुं ज्ञान. ॥ १८ ॥
चेतन भावे चेतन रहे, शुद्ध चेतना चेतन लहे;
अन्तर दृष्टि स्थिरोपयोग, आतम भोगवतो सुख भोग;

चेतनना उपयोगे धर्म, बाहिर भावे बांधे कर्म;
बाहिर्हेतु संयम वेश, व्यवहारे छे मुनिनो वेष,
वाहिर संयमथी छे शर्म, चेतनना उपयोगे धर्म. ॥ २८ ॥
चेतनव्यक्ति माटे सहु, जाणंताने शुं बहु कहु,
शुद्ध भावमां चेतन वसे, तेथी कर्मावरणो खसे;
शुद्ध विचारे संयम ग्रहु, चेतन व्यक्ति माटे सहु. ॥ २९ ॥
साची चेतननी छे भक्ति, भक्तिथी प्रगटे छे शक्ति;
साचो साहिब सेवो भाइ, चेतन भावे सत्य सगाइ,
प्रकटे परमातमनी व्यक्ति, साची चेतननी छे भक्ति. ॥ ३०॥
भक्ति महिमा अपरंपार, चेतन भक्ति सहुमां सार;
भक्तिथी थाशो भगवान, भक्ति सर्व गुणोनी खाण,
तार तार आतमने तार, भक्ति महिमा अपरंपार. ॥ ३१ ॥
भक्तिमां मळशे जो जीव, भक्तिथी थाशे ते शीव;
चेतन भक्तिमां जो प्रेम, हरतां फरतां वर्ते क्षेम;
आत्मानुभव लहे सदीव, भक्तिमां भळशे जो जीव. ॥ ३२ ॥
पर आलम्बन जिनवर देव, साची केवल ज्ञानी सेव,
जिन पूजनथी पूजक थाय, जिन ध्याने तेवो थइ जाय;
मिथ्या मतनी त्यागो टेव, पर आलम्बन जिनवर देव. ॥३३॥
बाहिर विपये हर्प न शोक, फोगट माने मोही लोक,
समभावे करवुं सहु काम, लेवुं श्री जिनवरनुं नाम;
समजे वीरला सज्जन लोक, बाहिर्विपये हर्प न शोक. ॥३४॥
पुष्टालम्बन गुरुने भजी, गुणगण माला अन्तर सजी,
ध्यावो साचो आतमराम, अनेक नामो पण नहि नाम;
पुद्गल ममता ज्ञाने त्यजी, पुष्टालम्बन गुरुने भजी. ॥ ३५ ॥
आत्मप्रभु भजवामां भाव, भवजलधिमां साचुं नाव,

उपाधिने अळगी करी, समता स्थिरता दीलमां धरी,
सत्ता ध्यावो चेतनतणी, प्रगटे व्यक्ति चेतनमणि;
मान मान शिक्षा छे खरी, उपाधिने अळगी करी. ॥ ४५ ॥
सेवो सुखकर चेतनराम, तेथी सरशे सघळां काम,
राम राम चेतन छे साच, ते विण जाणो सघळुं काच,
ठरशो तेथी निर्भय ठाम, सेवो सुखकर चेतनराम. ॥ ४६ ॥
तुज सेवनथी सेव्युं सर्व, तुज सेवनथी नासे गर्व,
तुजमां सर्व समायुं अहो, चेतनभावे चेतन रहो;
तुज रमणता रुडुं पर्व, तुज सेवनथी सेव्युं सर्व. ॥ ४७ ॥
तुज दर्शनथी भ्रान्ति जाय, तुज दर्शनथी शान्ति थाय,
तव दर्शनथी सत्यानन्द, तव दर्शनथी विघटे फन्द;
चेतन दर्शन सन्तो गाय, तव दर्शनथी भ्रान्ति जाय. ॥ ४८ ॥
तव दर्शनथी शाश्वत सुख, तव दर्शनथी जावे दुःख,
तव दर्शनथी जग जयकार, तव दर्शनथी स्थिरता सार;
तव दर्शनथी भागे भूख, तव दर्शनथी शाश्वत सुख. ॥ ४९ ॥
सत्य सत्य दर्शन तव सार, तव दर्शनथी नासे मार,
तव दर्शनने योगी चहे, तव दर्शनने वीरला लहे;
तव दर्शनथी सहुने प्यार, सत्य सत्य दर्शन तव सार. ॥५०॥
श्वासोश्वासे चेतन ध्यान, हरतां फरतां चेतन भान,
रटना हृदये लागे खरी, जन्म मरण तव नावे फरी;
अन्तर अनुभव भासे ज्ञान, श्वासोश्वासे चेतन ध्यान. ॥५१॥
प्रवृत्तिमां पडे न चेन, आतम अनुभव प्रगटे घेन,
द्वेष क्लेश इर्ष्यादिक टळे, चेतनता चेतनमां भळे;
दीवस सरखी भासे रेन, प्रवृत्तिमां पडे न चेन. ॥ ५२ ॥
अनुभवी चेतनमां रमे, चेतन स्मरण मनन मन गमे,

मङ्गलमां मङ्गल छे एह, रत्नत्रयीनुं चेतन गेह,
चेतन पूजे ने पूजाय, अद्भूत आतमनो महिमाय;
शोधो चेतन वसियो देह, मङ्गलमां मङ्गल छे एह. ॥६२॥
चेतन जाण्याविण सहु धूळ, अमूर्त चेतननुं नहि मूळ,
अनाद्यनन्ति स्थिति धरे, चेतन भवसागरने तरे;
चतुर चेतन सत्य अमूल्य, चेतन जाण्याविण सहु धूळ. ॥६३॥
सहज स्वरूपी चेतनराम, क्षायिकभावे ठरतो ठाम;
पुरुषोत्तम जे पुरुष पुराण, षड्द्रव्योनो सम्यग् जाण,
असंख्यप्रदेशी रुडुं गाम, सहज स्वरूपी चेतन राम. ॥६४॥
हेय ज्ञेय छे सहु बाह्यार्थ, सुखकर अन्तर गुणनो सार्थ;
चेतन सेवाथी सुख मळे, मोहमायादिक दोषो टळे;
चेतन आदरवो परमार्थ, हेय ज्ञेय छे सहु बाह्यार्थ. ॥६५॥
जाग जाग अब चेतन जाग, कर तुं शाश्वत सुखनो राग;
धार धार चेतन अब टेक, कर तुं शाश्वत ज्ञान विवेक,
सदुपयोगे धर वैराग्य, जाग जाग अब चेतन जाग. ॥६६॥
आतम धर्मे निशदिन राच, चेतनना धर्मोने याच;
सदुपयोगे निर्मलहंस, चेतन धर्मो सत्य प्रशस्य,
अनुभव योगे हर्षे माच, आतम धर्मे निशदिन राच. ॥६७॥
अष्ट सिद्धि ऋद्धि भण्डार, याचक चेतन छे दातार;
परमातम पोते तुं खास, धर तुं निज शक्ति विश्वास,
पामे भवजलधिनो पार, अष्ट सिद्धिऋद्धि भण्डार. ॥६८॥
वळजे चेतन शिवपुर वाट, चरण करणनुं रचजे हाट;
अन्तर गुणना घडजे घाट, धोजे कर्म मेलनो काट;
बेसीश नहि कुमतिनी खाट, वळजे चेतन शिवपुर वाट.॥६९॥
चाल चाल चेतन शिव पन्थ, वांची सूत्रो ने सद्ग्रन्थ;

मन्त्रतन्त्र फले सहु, शीयलना तेजथकी.
शीयलथी मान सहु, दुनीआमां थाय छे,
शीयलने धारवाथी, स्मरदोष मारवाथी;
भवजलनिधि क्षेम, सहज तराय छे.
देववृन्द गुणगाय, शरीर निरोगी थाय;
ब्रह्मव्रत धारवाथी, सुयश पमाय छे. ॥ १ ॥
विघ्नवृन्द नाश थाय भूत प्रेत वश थाय;
शीयल सुगुण गृह, मङ्गलनुं द्वार छे,
जेवुं बोले तेवुं थाय, सहु दोष दूर जाय.
शीयल धारकजन धन्य अवतार छे;
शीयल सुगन्धि वेश, शियलथी शुभ वेष,
शियलने सागरनी उपमा प्रमाण छे.
नरनारी धरो सहु शियल सन्नाह अंग;
धीनिधि शीयल सत्य जीवननो प्राण छे. ॥ २ ॥

दयामहिमा.

मनहरछन्द.

दया दुःख हरनारी, दया सुख करनारी,
दया गुणगृह वेश, दयाथकी धर्म छे;
दयाविना तप यम ध्यान सहु फोक अहो,
दयाथकी देवगति सिद्धिसौधशर्म छे;
दयाविना व्रत कोइ सफल न थाय भव्य,
दया कल्पवृक्ष अने शेष व्रत वाड छे.
दया कामकुंभ अने दया स्पर्शमणि सत्य;
दयाविना मुक्ति म्हेल बंध तो कमाड छे. ॥ १ ॥

शीदने रह्यो मुंझाइरे. जीवलडा. ॥ १ ॥
मन माने मकलायो, पण स्पर्शमणि नहि पायो;
लाख चोराशी जायोरे. जीवलडा. ॥ २ ॥
मनमां लाग्युं प्यारुं, तेवुं तें दील धार्युं;
पण जीवन जावे हार्युंरे. जीवलडा. ॥ ३ ॥
प्रभुभजनने भूल्यो, मायाना दरिये डुल्यो;
फुलणजी फोगट फुल्योरे. जीवलडा. ॥ ४ ॥
धारीने जोजे धीरा, अन्तरना म्हारा वीरा;
बुद्धिसागर शूरारे. जीवलडा. ॥ ५ ॥

चेतनने उपदेश.

राग थाळः

चेतनजी चेतो प्यारा रे, जंगमना जोगी,
अलखरूप आधारा रे, जंगमना जोगी;
अवधूत स्वरुपे रमवुं, दुनीआमां ज्यां त्यां भमवुं,
आडुं अवळुं खमवुं रे. जंगम. १
औदयिक भावो वारी, अन्तरमां सुरता धारी;
करवी शिव तैयारी रे. जंगम. २
ज्ञानिनी संगे रहेवुं, समभावे सर्वे सहेवुं;
कोइने कांय न कहेवुं रे. जंगम. ३
चेतननी बलिहारी, तेनी छे साची यारी;
बुद्धिसागर धारी रे. जंगम. ४

जीवने जागवानो उपदेशः

थाळ राग.

जीवलडा जोने जागी रे, वेळा बहु वीनी,

भजन करले भजन करले.-ए राग.

चेती ले झट चेती ले जीव, धार जिनवर धर्म रे;
मायामां मस्तान थातां, लहे न शाश्वत शर्म रे. चेती. ॥ १ ॥
अस्तिनास्ति धर्म चेतन, भेदाभेद विचार रे;
अनेकान्त छे आतमनुंरूप, समजी आतम तार रे. चेती. ॥ २ ॥
शुद्धरूपी साहिबो छे, अनन्तगुण आधार रे;
शुद्ध ध्याने ध्याववाथी, आवे भवनो पार रे. चेती. ॥ ३ ॥
आनन्दालय आतमा तुं, जाग झटपट जाग रे;
बुद्धिसागर आत्मध्याने, धरजे दीलमां राग रे. चेती. ॥ ४ ॥

भजन करले भजन करले-ए रागः

जाग जीवडा जाग जीवडा, जाणी लेजे धर्म रे;
भ्रान्तिथी जंझाळ राची, शीदने बांधे कर्म रे. जाग. ॥ १ ॥
भाइ भगिनी पुत्र दारा, जूठो सहु परिवार रे;
जुठां सगपण दुनिआनां, साच चेतन धाररे. जाग. ॥ २ ॥
स्वारथिया संसारमांहि, मोहे बनीने अन्ध रे;
कर्म बांधे अभिनवां तुं, पररमणता बन्ध रे. जाग. ॥ ३ ॥
अनन्तशक्ति साहिबा तुं, चेत चेतनराम रे;
शुद्धभावे सुख अनंतुं, भोगवे गुण धाम रे. जाग. ॥ ४ ॥
ज्ञान दर्शन चरण भोक्ता, चेतन शुद्ध स्वरूप रे;'
बुद्धिसागर आत्मध्याने, विघटे भवभय धूपरे. जाग. ॥ ५ ॥

प्रभुरटन उपदेश.

भजन करले भजन करले · ए राग.

रटन कर मन रटन कर मन, रटन कर अरिहन्तरे;

द्रव्यने वळी भाव भेद, आश्रवनो परिहाररे;
एक चेतन शुद्धरूपे, चेतना सुखकाररे. साच. ॥ ४ ॥
लक्ष्य लक्षण आतमानुं, धरजे प्रेमे ध्यानरे;
द्रव्य गुण पर्याय जाणी, शुद्ध पामो स्थानरे. साच. ॥ ५ ॥
शुद्ध चेतन ध्यावतां भाइ, सत्य सुख निर्धाररे;
बुद्धिसागर ज्ञान योगे, सफल मनु अवताररे. साच. ॥ ६ ॥

सत्य जागृति प्रेरणा.

भजन करले भजन करले—एराग.

जागरे जीव जागरे जीव, आयुष्य चाल्युं जायरे;
अज्ञभावे उंघवाथी, चेतन धन लुंटायरे. जागरे. ॥ १ ॥
अनन्त लक्ष्मी आत्मनी छे, धर तेनो उपयोगरे;
बाह्य लक्ष्मी दुःखदायी, विषयो विषना रोगरे. जागरे. ॥ २ ॥
अनन्त गुणनुं धाम आतम, तुं नहि बाह्य पदार्थ रे;
अरूपी शाश्वत शुद्ध रूपी, चेतन तुं परमार्थ रे. जागरे. ॥ ३ ॥
पश्यन्ति जे ज्ञान भाख्युं, ते पण तुजमां समायरे;
बुद्धिसागर आत्मध्याने, जोतां सर्व जणाय रे. जागरे. ॥ ४ ॥

दिव्यशिक्षा.

भजन करले भजन करले—एराग.

समज दीलमां समज दीलमां, धर्म कर्म एक सारे रे;
आत्मयोगे कर्मोने भाइ, क्षणमां पहुंच वारे रे. समज. ॥ १ ॥
सत्य धन निज आतमनुं छे, अवर न कोइ आवे रे;
चेतन विण सहु मोहदाओ, खोटां ख्याल दवारे रे. समज. ॥ २ ॥
[illegible]
[illegible] समज. ॥ ३ ॥
[illegible]

वीती वेळा पाछी नहि आवे.

भजन करले भजन करले—ए राग.

वीती वेळा आवशे नहि, जीवलडा झट चेतरे,
उंघे उंघण आळसु शुं, काळ झपाटो देतरे. वीती. ॥ १ ॥
रात्री जावे दीवस जावे, व्यतीत वर्षो थायरे;
जाणे मोटो थाय न्हानो, चित्तथी नहि चेतायरे. वीती. ॥२॥
जेवां गगने वादळां छे, तेवां तन धन रूपरे;
जाणी चित्तमां जागतां जीव, होत न भवभय धूपरे. वीती. ॥३॥
बाप चाले मात चाले, वृद्ध युवा ने बाळ रे;
जन्म्या तेने मरण माथे, कबु न मूके काळरे. वीती. ॥ ४ ॥
काल करवुं आज कीजे, कीजे न धर्म वार रे;
प्रभु भजील्यो भावथी भाइ, होवे सफल अवतारेरे. वीती. ५
खूंची खटपटमां अरे तें, कीधो न धर्म लगाररे;
हजी समय छे धर्म माटे, चेतन मनमां धाररे. वीती. ॥ ६ ॥
समज चेतन सानमां अब, जीवन धर्मे गाळरे;
बुद्धिसागर धर्मथी जग, होवे मंगल मालरे. वीती. ॥ ७ ॥

शब्दसृष्टि विद्वत्ता.

भजन करल भजन करले—ए राग.

शब्द सृष्टि बहु बनी जग, भाषानो नहीं पाररे;
चेतन हीरो चूकीने भाइ, आयु न एळे हाररे. शब्द. ॥ १ ॥
बाह्य विद्या वासनाथी, होवत तत्त्वे भूलरे;
मायानी जंझाळथी सहु, होवत अन्ते धूळरे. शब्द. ॥ २ ॥
चतुर चेतन चेतीले चित्त, अनेकान्त मत धाररे;
उपादेयज आतमा एक, जाणीने नहीं हाररे. शब्द. ॥ ३ ॥
शुद्ध चेतन रूप ह्हारु, असंख्यप्रदेशी भूपरे;
भूली वाल्हम भान ह्हारु, शुं पडे भवकूपरे. शब्द. ॥ ४ ॥

समयनो उपयोग.

भजन करले भजन करले-ए राग.

समय पामी समय पामी, चेतन चित्तमां जागरे;
शुद्धभावे रूद्धि त्हारी, कर तुं तेनो रागरे. समय. ॥ १ ॥
बाह्यवृत्ति त्यागीने झट, चंचल योग निवाररे;
असंख्यप्रदेशी तीर्थ त्हारुं, करजे शिघ्रोद्धाररे. समय. ॥ २ ॥
नित्यानित्य स्वभावथी तुं, अनेकान्त मत रूपरे;
निश्चयथी तुं शुद्ध चेतन, शाश्वत ज्ञान स्वरूपरे. समय. ॥३॥
ध्यान ध्याता ध्येय रूपे, चेतन सुखकर एकरे;
हेयोपादेय ज्ञेय ज्ञाने, करजे सत्य विवेकरे. समय. ॥ ४ ॥
बाहिर अन्तर परमरूपे, आतम तुं निर्धाररे;
बुद्धिसागर आत्मध्याने, होवे भवनो पाररे. समय. ॥ ५ ॥

बाह्यममतानो त्याग.

भजन करले भजन करले-ए राग.

चेत झटपट चेत झटपट, जीवलडा झट चेतरे;
भान भुले शुं अरे जीवें, काल झपाटा देतरे. चेत. ॥ १ ॥
जेनी हाके धरणी ध्रूजे, तेवा चाल्या जायरे;
अमर नहि कोइ दुनियामां, मोहे शुं मकलायरे. चेत. ॥ २ ॥
पुण्य योगे पामियो तें, मानवभव सुखकाररे;
हस्त चढियो हीरो आतम, हारिश नहि निर्धाररे. चेत ॥ ३ ॥
चूकिश नहिरे चतुर चेतन. अन्तर करजे शोधरे;
बुद्धिसागर आत्मध्याने, प्रगटे अनुभवबोधरे. चेत. ॥ ४ ॥

वीरस्तवन.

मान मायाना करनारारे-ए राग.

प्रभु वीर जिनेश्वर प्यारारे,
मुज प्राणतणाछो आधारा;
सिद्ध सनातन निर्मलज्योति, शाश्वत सुख निर्धारा;
क्षायिकभावे गुणवर्या सहु, जिनवर जगजयकारारे. प्रभु. ॥१॥
सुखकर दुःखहर चरम जिनेश्वर,
वसियाछो दिलमांहि म्हारा;
बुद्धिसागर विभु वीरना नामथी,
होवे सफल अवतारारे. प्रभु. ॥२॥

अथ श्री सिद्धाचल दुहा.

रत्नत्रयी धारक प्रभु, ऋषभदेव अरिहंत;
नमित सुरासुर इंदचंद, भव भंजन भगवंत. ॥ १ ॥
जयजय आदि जिणंद श्री, केवल कमलानाथ;
सिद्धाचल गिरिमंडणो, सेवक करो सनाथ. ॥ २ ॥
पूर्व नवाणु वार ज्यां, आव्या ऋषभ जिणंद;
ते सिद्धाचल वंदीए, कापे भवभयफंद. ॥ ३ ॥
प्रायः ए गिरि शाश्वतो, महिमा अपरंपार;
सम्यग् दृष्टि जीवने, निमित्त कारण धार. ॥ ४ ॥
चार हत्यारा पातकी, ते पण ए गीरि जाय;
भावे जिनवर भेटतां, मुक्तिवधुसुख पाय. ॥ ५ ॥
द्रव्यभाव दु भेदथी, सेवो तिरथ एह;
उपादान निमित्त योग, समर्थाथी शिवगेह. ॥ ६ ॥
कर्मरोगने टाळवा, उत्तम छे आधार;

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते सिद्धाचल [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते सिद्धाचल [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते सिद्धाचल [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते सिद्धाचल [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते सिद्धाचल [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते तीर्थेश्वर प्रणमिये, [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते तीर्थेश्वर प्रणमिये, [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते तीर्थेश्वर वंदिये, [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

ते तीर्थेश्वर वंदिये, [illegible] ॥ [illegible] ॥

कुमति कौशिक जे जना, आवे नहीं जग पाव.

भविजन देखो मेरुने, पावे मन उल्लास. ॥ २८ ॥

अगनी भाषा नृपति, चंद्रशेखर राजान;

ते तीर्थेश्वर सेवतां, पाम्यो अविचल ठाण. ॥ २९

उत्तम जन ज्यां संचरे, माने जे वीतराग;

ते सीमंधर वंदीए, आवे नहि ज्यां काल. || ३२ ||
सर्वकेर ए नामनी, सगमांहि विख्यात;
ते सीमंधर वंदीए, कहदा मन अवदात. || ३३ ||
अनेक गिरिगुण गावतां, गुणगण घट प्रगटाय;
तेह गणोधर वंदीए, करो अगणर पाप. || ३४ ||
मुनिराज शाश्वत गिरि, सर्व काल अनादि;
विनय विवेके वंदतां, टळशे सर्व उपाधि. || ३५ ||
विजयभद्र नामे भणो, सार्थक नाम सुहाय;
ते सिद्धाचल वंदीए, महिमा नित्य सुहाय. || ३६ ||
गातां गुणद गिरिराजने, गिरिश पद पद थाय;
तेह सिद्धाचल वंदीए, मनुजजन्म भरि पाय. || ३७ ||
मध्यहीन जग स्थानथी, प्राणी पंचे थाय;
अमम गिरिगुण गावतां, उपादान पद पाय. || ३८ ||
अचंल गिरि जपने करे, सेवतां निशदीन;
भविजन मन गुणकर सदा, आत्मस्वभावे पीन. ||३९||
कंचन गिरिने निहाळीए, लही गुरुगमथी ज्ञान;
वंदो सेवो भावथी, आवे निजपद भान. || ४० ||
भावे भक्ति भेर करी, चित्त एक स्थिर ठाम;
सिद्ध क्षेत्र संभाळीने, भाव करु प्रणाम. || ४१ ||
आतम परमातम लही, कर्मनाशने काम;
महागिरिने वंदीए, भवांभोधिमां झाझ. || ४२ ||
अमरकंदने ओळखे, आतम अमर लहाय;
भावे भाविपण भेटीए, जन्म जन्म दुःख जाय. || ४३ ||
वेर झेर विकथा त्यजी, शमभावे भावि जेह।
श्री सिद्धाचल वंदशे, ते पामे शिवगेह. || ४४ ||

त्यजी प्रभुता वाह्यनी, आदीश्वर जिनआण;
धारी गिरि ए वंदीए, वंदन होय प्रमाण. ॥ ४५ ॥
माया तृष्णा परिहरी, शरण ग्रही जिन आण;
श्री सिद्धाचल वंदीए, प्राप्ति पद निर्वाण. ॥ ४६ ॥
तन मन धन ममता त्यजी, भज समता घटमांय;
भाव गिरिने वंदतां, लहीए नहिं दुःख क्यांय. ॥ ४७ ॥
पुण्यराशि शुभ भावथी, मणि कंचन गिरिराय;
शुद्ध भावथी सेवीए, अनेकांत मत पाय. ॥ ४८ ॥
तारक वारक चउगति, अचल महोदय नाम;
ते सिद्धाचल वंदीए, ठरीए निजपद ठाम. ॥ ४९ ॥
जग जयवंतु तीर्थ ए, सहु तीर्थ शिरदार;
भव्यो भाळे भावथी, पामे भवजल पार. ॥ ५० ॥
शांत स्वभावे निर्मला, मुनिवर ए गिरि पाय;
अलख अमरपद पामीया, शुद्ध परिणति ध्याय. ॥५१॥
प्रदेश शत्रुंजयतणा, नयनानंद करंत;
विश्वपूज्य गिरि वंदीए, लहीए भवजल अंत. ॥ ५२॥
राम भरत ज्यां आविया, महिमा सुणी अपार;
गिरिसेवन गिरूआ थइ, लह्या सद्गति निरधार. ५३
पांडव प्रमुखा ए गिरि, आव्या मन उल्लास;
भावे गिरिवर सेवतां, मुक्तिपुरीमां वास. ॥ ५४ ॥
सर्वज्ञ पद साधीयुं, संब प्रद्युम्नकुमार;
ते सिद्धाचल वंदीए, नाशे कर्मविकार. ॥ ५५ ॥
संप्रति काळे आवीया, त्रेविशे जिनराय;
तेवीश विषय शमाववा, भजीए गिरिवर राय. ॥ ५६ ॥
जिनाज्ञा जिनतत्त्वनी, करणी कहे निष्काम;

निरुपाधिपद एहथी, पामे कहे जिणंद;
मतिमंत महिमा स्तवे, शुं जाणे मतिमंद. ॥ ७० ॥
अनेकार्थ पदार्थ तो, सात नये ग्रहवाय;
व्यवहारे निमित्तता, निश्चयथी निजमांय. ॥ ७१ ॥
परस्पर सापेक्षथी, वर्ते नयो सदाय;
नयोथकी शब्दार्थने, कहेता श्री जिनराय. ॥ ७२ ॥
अनेकांत श्रद्धा ग्रही, विमलेश्वर गिरिराय;
वंदो भावे भविजना, कर्म मर्म दूर जाय. ॥ ७३ ॥
निश्चल आत्मस्वरूपनी, सिद्धि जेथी थाय;
ते सिद्धाचल वंदीए, संवर गुण प्रगटाय. ॥ ७४ ॥
द्रव्य भावथी वंदतां, आत्म समाधि पाय;
द्रव्यभाव समज्या विना, गिरिगुण नहि गवाय.॥ ७५ ॥
गिरिवर प्रति पगलुं भरे, ज्ञानपणे जे कोइ;
निर्मल आत्म करे तदा, पापपंक सव धोइ. ॥ ७६ ॥
बाह्यांतरथी शुद्ध थइ, राखे स्थिरोपयोग;
गिरि चढतां समता वरे, पामे निजगुण भोग. ॥ ७७ ॥
आलोयण ले पापनुं, सुणी गुरुमुख उपदेश;
सिद्धाचल गिरि सेवीने, पामे अविचल देश. ॥ ७८ ॥
आलोचे नहि पापने, मूके न माया झाळ;
सिद्धाचल तस शुं करे, जो परपरिणति चाल. ॥ ७९ ॥
कर्यां कर्म आलोचना, श्रद्धाथी करनार;
पामे ते परमार्थने, जिन आज्ञा शिर धार. ॥ ८० ॥
क्रोध न करीए कोइ शुं, धरी मनमां विश्वास;
श्री सिद्धाचल वंदीए, त्यागी पुद्गल आश. ॥ ८१ ॥
विषयोन्मादि चित्तने, वश करवाने हेत;

सत जन पद पूजा करी, मुनि पद मेरुन. ॥ ८२ ॥
यात्रा नवाणुं जे करे, समकी समकितवन्त;
आपत मार्ग छोडता, करे न भवनाप पंथ. ॥ ८३ ॥
विधिपूर्वक पूजन करे, नासे कर्म कलेश;
सेवनारने शिवपति, को राजा कोण रंक. ॥ ८४ ॥
भक्तामर पद भव करे, करता निर्मल देह;
क्षायिक भावे चेतना, चिदानंद गुणगेह. ॥ ८५ ॥
आज सफल दिन माहरो, सफल मनुष्य अवतार;
श्री सिद्धाचल देखता, आनंद हर्ष अपार. ॥ ८६ ॥
अपूर्व फलने आपता, कल्पवृक्ष सम एह;
वंदो पूजो भविजना, थाये निर्मल देह. ॥ ८७ ॥
कामधेनु सम ए गिरि, वंछित फल दातार;
वंदो पूजो भविजना अक्षय पद करनार. ॥ ८८ ॥
कामकुंभ सम एह गिरि, पंचम गतिने देत;
वंदो पूजो भविजना, श्री शत्रुंजय क्षेत्र ॥ ८९ ॥
फरी फरीने नहीं मळे मानव भवनो देह;
वंदो पूजो भविजना, सिद्धाचल गिरि एह. ॥ ९० ॥
मनुष्य जन्म पामी भवि, भेटे नहि गिरि एह;
मानुं मात उदर विषे, रहीया प्राणी तेह. ॥ ९१ ॥
शशी सूर्यवत एह गिरि, करतुं भावोद्योत.
वंदो पूजो भविजना, प्रगटे निर्मल ज्योत. ॥ ९२ ॥
गुरुता मेरु तणी परे, तेनी जगमां थाय.
जे सिद्धाचल वंदता, निर्मल श्रद्धा थाय. ॥ ९३ ॥
ए सम जग कोनो नहि जोतां महा उपकार;
ते सिद्धाचल वंदीए होवे जय जयकार. ॥ ९४ ॥

मोहमायागिरि भेदवा, पविसम तस अवदात;
ते सिद्धाचल वंदीए, करीए निर्मल यात्र. ॥ ९५ ॥
वर्णन वाणीथी कर्युं, कदीय न पूरुं थाय;
ते सिद्धाचल वंदीए, महिमानंत कथाय. ॥ ९६ ॥
अधुना पंचमकाळमां, वर्ते तस महिमाय;
ते सिद्धाचल वंदीए, भव भव भावट जाय. ॥ ९७ ॥
भावे यात्रा जे करे, पामे मुक्ति तेह;
ते सिद्धाचल वंदीए, कर्म रहे नहिं रेह. ॥ ९८ ॥
भवजलधितट पामवा, उत्तम एहज झाझ;
ते सिद्धाचल वंदीए, सिद्धे सघळां काज. ॥ ९९ ॥
विमलेश्वर सेवन थकी, उपजे सिद्धि उदार;
ते सिद्धाचल वंदीए, पंचमगति सुखकार. ॥ १०० ॥
श्री सिद्धाचल स्पर्शना, करीने चरम जिनेश;
योजनगामिनी वाणीथी, दीधो छे उपदेश. ॥ १०१ ॥
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, दिन करशे जे यात्र;
अल्पकाळमां ते भवि, थाशे सद्गतिपात्र. ॥ १०२ ॥
तीर्थेश्वर दर्शन थकी, निर्मल दृष्टि होय;
ते सिद्धाचल वंदीए, अवर नहीं जग कोय. ॥ १०३ ॥
अंतर शुद्धि वाह्यथी, निमित्त कारण भाळ;
अंतर तत्त्व विवर्णना, करशे समजु ख्याल. ॥ १०४ ॥
द्रव्य दुभेदे भावथी, सम्यग् ग्रही अवबोध;
ते सिद्धाचल वंदीए, करी चंचलता रोध. ॥ १०५ ॥
मतिमंदनी वर्णना, तेतो वाळक चाल;
बुद्धिसागर वंदतां, पामे मंगल माल. ॥ १०६ ॥
संवत ओगणीश उपरे, वासठनी शुभ शाल;

शब्दनये दृष्टि करी, विशुद्ध कर व्यवहार;
व्यवहारे शुद्धि करी, समरूढता धार. ॥ ११ ॥
समभिरूढ प्राप्ति करी, एवंभूतता पाय;
शुद्ध पर्याये आत्मनी, सिद्ध बुद्धता थाय. ॥ १२ ॥
अशुद्ध पर्याये करी, आत्माऽशुद्ध कहाय;
रागी द्वेषी आतमा, काल अनादि न्याय. ॥ १३ ॥
वर्ते युं भवचक्रमां, भूली निजपद भान;
सद्गुरु संगे सहजमां, प्रगट्युं शुध्धु ज्ञान. ॥ १४ ॥
भेद ज्ञाननी दृष्टिथी, कीधो निजपर भेद;
निजपर्याय विशुद्धिमां, कदा न वर्ते खेद. ॥ १५ ॥
निजपद अभय विलोकतां, नाठो भय तो दूर;
आत्मिक अनुभव जागतां, वर्ते आनंदपूर. ॥ १६॥
क्षायिक नवलब्धि जगे, करतां निजपद ध्यान;
एम अनंता ज्ञानीए, पाम्या निर्मल स्थान. ॥ १७॥
सार्थकता छे ज्ञाननी, ध्यान सदा सुखकार;
सत्य सत्य जिनवाणीनुं, सार सारमां सार. ॥१८॥
आत्मिक ज्ञान विना कदी, ध्यान कहो क्युं थाय;
ध्यान विना मुक्ति नहीं; कथन करे जिनराय.॥१९॥
जाण्यो आतम एक तो, जाण्या भाव अनेक;
सद्ग्रंथे भाख्युं इस्युं, धरजो आतम टेक. ॥ २० ॥
भूले सहु संसार तो, खुले अंतर्धर्म;
उत्कट ध्यानदशा थकी, होवे शाश्वत शर्म. ॥ २१ ॥
सोऽहं सोऽहं समरतां, सोऽहंमय हो जाय;
परम महोदय पद ग्रही, परम प्रभुता पाय. ॥ २२ ॥
निजोपयोगे धर्म छे, सत्य कहे सौ ग्रंथ;
कष्ट क्रिया करतां थकां, नहीं न मुक्तिपंथ. ॥२३॥

मनमां आवे तेवुं माने, उत्शृंखलता दील घणी;
पापपुंजमां खुंच्या पामर, सद्‌गुरु शिर्षे को न धणी,
मनमां म्हाले मूरख प्राणी, उद्धट वेषे वणी ठणी;
समजण देतां नाक चढावे, छंछेडयां जिम होय फणी. ॥ २ ॥
गाडी वाडीमां मस्ताना, पाप कर्ममां चित्त धरे;
हरतां फरतां बोले जूठुं, पैसा माटे धर्म करे,
पापकर्म व्यापारो वधिया, पाखंडी पूजाय अरे;
नवीन मत जुनाने निन्दे, भवभयथी विरला तो डरे. ॥३॥
कलिकालमां कौतुक कोटि, जोतां जोतां नजर पडे;
धर्मी थोडा पापी पुष्कळ, वात वातमां वहु लडे,
राजन साजन महाजन मोटा, वाळे गोटा व्यवहारे;
बकवादी कै वहु वके छे, अन्यजनोने किम तारे. ॥ ४ ॥
पाखंडी जागे छे पुष्कळ, समजावीने जुठ अरे;
साधुजननी निन्दा करता, भवभ्रमणामां वहु फरे,
सद्‌गुरु साधु आण न माने, पाखंडीना दास वने;
पाखंडीनी पूजा देखी, दूर करे साचा हकने. ॥ ५ ॥
असल रीतमां कोइक रहेवे, भोळा तो भरमाय खरे;
नित्यनेमनो त्याग करीने, भूंडां कामो केइ करे,
स्वारथना भर्या केइ कपटी, नीचा कृत्ये पेट भरे;
पापी धंधा प्रगट्या पापे, धर्मवृत्तिने अल्प वरे. ॥ ६ ॥
श्रद्धा भक्ति दिन दिन घटती, भावी टाळ्युं नहि टळे,
मिथ्या मत वादे घेर्या जन, दुर्गतिमां जइ भळे;
न्यायी धर्मी नृपति वीरला, स्वारथमां तो घणा शळे,
नामो मोटां दर्शन खोटां, जन एवा तो वहु मळे. ॥ ७ ॥
आजकालनी केळवणीमां, धार्मिक श्रद्धा भेळवणी,

नव तत्त्वादिक भजो ज्ञाने, गुणठाणां फेरवणी,
सद्गुरु संगत करवी सहेजे, समकित श्रद्धा दीप धणी,
ते माटे प्रमाद मेलो, आदरजो गुण स्पर्शपणी. ॥ ८ ॥

समयज्ञनी सेवन चाली, गुणठाणी नहीं फरो,
सर्वोत्तम सद्गुरु छे नौका, पामी पामी मंदन सरो;
नन्दी स्याद्वाद अपार स्वामी, चेतन हीरो हाथ चढो,
ज्ञान क्रिया बेथी छे मुक्ति, जिन वचनामृत पान करो.॥९॥

कलिकालमां भक्ति मोटी, देव गुरुनी साचवजो,
षड् द्रव्योनुं ज्ञान करीने, मुक्तिपुरी सन्मुख थजो;
कलिकालनां कौतुक देखी, धर्म क्रियाने नहीं तजो,
जगमां सर्वोत्तम जिन दर्शन, अन्तरंग बाहिरंग भजो. ॥१०॥

परोपकार मनडुं धरवुं, कुड वण नहि उचरवो,
धर्म करतां आड पडे तो, पाछां पगलां नहि भरवां;
धनरक्षा पापि जन देखी, पाप कर्म नहि आचरवुं,
पापे जय धर्मे क्षय रमणा, बेग कदा नहि उचरवुं. ॥ ११ ॥

वात वातमां कदी न पडवुं, कपट कलाने परिहरवी,
धर्मी जनने सहाय करीने, सद्बुद्धि दीलमां धरवी;
परनी निन्दा कदी न करवी, वृद्ध वाक्यने अनुसरवुं,
मोटा जननुं मानज करवुं. विना प्रयोजन नहि फरवुं. ॥१२॥

शत्रु मित्रमां समान दृष्टि, धर्म कार्यमां यत्न करो,
ज्ञान ध्यानमां दिवस गाळो, मुक्तिपुरीनो माग खरो;
आतम ते परमातम साचो, अनन्त शक्ति प्रगट करो,
बुद्धिसागर अवसर पामी, सिद्ध सनातन सत्य वरो. ॥१३॥

वचनामृत दुहा.

अर्हं अर्हं समरतां, लहीए भवनो पार;
सत्य देव अरिहंत छे, तेनो मुज आधार. ॥ १ ॥
सूतां खातां बेसतां, चालंतां अरिहंत;
जे भावि प्राणी समरशे, थाशे शर्म अनन्त. ॥ २ ॥
अरिहन्त महामन्त्र छे, समजो नर ने नार;
मङ्गल मोटुं जाणिए, होवे जय जयकार. ॥ ३ ॥
मनुष्यभव पामी भवी, बे करवानां काम;
देवानो टुकडो भलो, जपवुं आतमराम. ॥ ४ ॥
बुद्धिसागर ज्ञानथी, बे वातो दिल धार;
दया धर्म हृदये धरि, जपवो श्री नवकार. ॥ ५ ॥
बुद्धिसागर वात दोय, समजी घटमां धार;
दया धर्मनी सेवना, करवो पर उपकार. ॥ ६ ॥
मुसाफर तुंहि जगतमां, दान धर्म कर भाइ;
आंख मिचाए कल्पना, जूठी बाह्य सगाई. ॥ ७ ॥
आतम ते परमातमा, घट घट रह्यो समाइ;
बुद्धिसागर प्रेमथी कुंची गुरुए बताइ. ॥ ८ ॥
करवानुं बहु काम छे, पामी मनु अवतार;
मोहे मुंझी शुं मरे, चेती आतम तार. ॥ ९ ॥
ज्ञान विण जीव अन्ध छे, सान विना ते ढोर;
दान विना ते ठुंट छे, विण उपकारे घोर. ॥ १० ॥
देव गुरु नहि सेवीआ, कर्यो नाहि उपकार;
जिनवर जाप कर्यो नहि, फोगट तस अवतार. ॥ ११ ॥
भक्त सन्त सन्तापिया, दीधां दीनने दुःख;
दान धर्म समज्यो नहि, लजवी जननीकूख. ॥ १२ ॥

गुरु निन्दा बहु पापथी, गुरु निन्दा बहु पाप.
गुरु निन्दक मुख देखतां, अशुभ दिन गणनाय. ॥ १३ ॥
दया धर्म जगमां वडो, दया धर्म गुणकार;
दया नहि त्यां धर्म नहि, समजो नर ने नार. ॥ १४ ॥
बुद्धिसागर ज्ञानथी, सत्य हृदयमां धार;
आतम ममता मीठ सहु, समजी कोइ न मार. ॥ १५ ॥
हिंसा जूठ चोरी अने, व्यभिचार महादोष;
दया क्षमा उपकार ए, साचा धर्म सन्तोष. ॥ १६ ॥
जो तुं समजे धर्मने, तो अहिंसी भाव;
बुद्धिसागर प्रेमथी, त्यजो मनथी दाव. ॥ १७ ॥
गुरुकृपाथी पामिए, गुणशान्ति आराम,
गुरुकृपा विण बापडा, लहे न आतमराम. ॥ १८ ॥
गुरुनी आज्ञा लोपिने, चाले निजमति छन्द;
त्यां त्यां भटकी दुःख ले, मायावश मतिमन्द.॥१९॥
बोले ते पाळे नहीं, करे वनिता सङ्ग;
रौरव दुःखो नरकमां, पामे जीव कुरङ्ग. ॥ २० ॥
चित्त स्थिर जेनुं नहीं, करतो तेवां काम;
लोक हसे दुःखो लहे, मूर्ख दुःखनुं धाम. ॥ २१ ॥
मनमां आवे ते करे, पक्ष करे न फोक;
अकळा पाणी बापडा, लहे न सुखडां लोक. ॥ २२ ॥
सद्गुरु शिक्षा लोपिने, मूर्ख शिष्य पस्ताय;
कोथा काननी कूतरी, पेठे ठाम न पाय. ॥ २३ ॥
परमप्रभुनी मानिये, सद्भक्ति हितकार.
ज्ञान ध्यान सदवर्तना, अनन्त गुण करनार. ॥ २४ ॥
जिन वचनामृत पानथी, नासे भव सन्ताप;
बुद्धिसागर ज्ञानथी, कर जिनवरनो जाप. ॥ २५ ॥

जैनबोर्डींगविवेचन.

मराठी साखी.

श्री संखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, जग जय मङ्गलकारी,
जैन बालक विद्योन्नतिमां, सहाय करो सुखकारी;
जैन बोर्डींगनी उन्नति सहु चाहो, विघ्नवृन्द दूर जाओ. जैन. १
अन्न वस्त्र ने विद्यादाने, श्रावकनुं शुभ खातुं;
विद्यार्थिने सहाय करीने, बांधो परभवभातुं. जैन. ॥ २ ॥
व्यवहारिक धार्मिक केळवणी, दिन प्रतिदिन अपाती;
बोर्डींग बाळक केळववामां, चीवट खूब रखाती. जैन. ॥ ३ ॥
निराधारने आश्रय आपे, सगपण श्रावक साचुं;
जैन बालकनी भक्ति मोटी, ते विण सर्वे काचुं. जैन. ॥ ४ ॥
वीर जिनेश्वर पुत्रो सर्वे, सधन निर्धन निरखो;
समान धर्मि बन्धु देखी, हेते मनमां हरखो. जैन. ॥ ५ ॥
लक्ष्मीनो ल्हावो लेवाने, मळियुं उत्तम टाणुं;
नाणुं मळे पण टाणुं मळे नहि, शुभ छे पात्र मजानुं. जैन. ॥ ६ ॥
जन्मीने जैनोना हितमां, खर्ची न लक्ष्मी सारी;
पत्थरथी पण तेह नकामो, जननी भारे मारी. जैन. ॥ ७ ॥
भेदभाव सहु दूर करीने, पोताना सुत जाणी;
साह्य करो साधर्मी बन्धु, उलट मनमां आणी. जैन. ॥ ८ ॥
श्रावक क्षेत्र सुपात्र सदा छे, साह्य करो नरनारी;
बुद्धिसागर बोर्डींगस्कुलनी, शुभोन्नतिं सुखकारी. जैन. ॥ ९ ॥

अलख देशमां हंसने प्रेरणा.

पद.

हंसा चलोरे अलख निज देशमांजी,
ज्यां छे झळहळ ज्योति अपार; हंसा टेक.

शुद्ध भावे करी शुद्ध स्वरूप, हरिया साथिया ओने,
बुद्धिसागर आतम हव, केवल ज्ञानी रांचे. ॥ १ ॥

हुं ने मारुं.

पद राग धोळ.

हुं ने मारुं मानी प्राणी, चार गतिमां भटक्यो रे;
अज्ञाने अथडाणो ज्यां त्यां, भवनी भमिथी भटक्यो रे. ॥ १ ॥
छायामिषे काळ भमे छे, क्षणमां पकडी मारे रे;
कुटुम्ब कबीलो साथ न आवे, आव्या तेवुं जवाने रे. ॥ २ ॥
जगत जंजाळे जकडानो, दुःखना दरिया पोटा रे;
गुरुगमथी समजीने प्राणी, बाळीश नहि तुं गोटा रे. ॥ ३ ॥
जन्म्या तेने जरुर मरवुं, पुण्यने शुं फरवुं रे;
काळसपाटामां नहु सपडाशे, काम न करवुं चरवुं रे. ॥ ४ ॥
पाणीना परपोटा जेवी, काया रोगभरेली रे;
मारी माने मूरख जीवडा, विण शी जाशे मेहली रे. ॥ ५ ॥
जूठी काया जूठी माया, जूठी जगनी मायारे;
पुद्गल बाजी कदु न छाजी, मांहि शुं मकलायारे. ॥ ६ ॥
वीर जिनवर केवलनाणी, साची वाणी जाणीरे;
बुद्धिसागर अन्तरमांहि, आणा जिननी आणीरे. ॥ ७ ॥

पतिव्रतास्त्री.

श्रीमंधरजी संदेशो कहेजो श्यामने ए राग.

प्रमदा पतिव्रता धर्म साचवे, पति पहेलां उठे गणती नवकारजो,
पंजेळे नहि पतिने समता आदरे, वचने हितशिक्षा देवे प्यारजो;
प्रमदा ॥ १ ॥

नवरी बेठी निन्दा लवरी नहि करे, कदी न करती प्राणपतिपर
क्रोधनो
छेल छबीली बनी ठणीने नहि फरे, साहेलीने देवे रुडो बोधनो.
ममदा. ॥ २ ॥
देशी वस्त्रो देशी वेषे पहेरती, विधवालग्ने कदी न करती व्हालनो
सुधाराना वायुथी रहे वेगळी, कदी न देती क्रोध करीने गाळनो
ममदा. ॥ ३ ॥
दान दया आभूषण कंठे धारती, शरीर लज्जा राखे तेवां वस्त्रनो
नीति रीति राखे कुलवट नेकथी, वेण न बोले जेवां तीखां शस्त्रनो;
ममदा. ॥ ४ ॥
विचारीने वदती वाणी मीठडी, शीयलना शृंगारे शोभे देहनो
देव गुरुनी भक्ति करती प्रेमथी, सद्गुनी साथे वर्ते निर्मल नेहनो
ममदा. ॥ ५ ॥
सद्गुणमालाथी शोभे छे सुन्दरी, धर्माचारो पाळे निशदीन प्रेमनो
बुद्धिसागर शोभे सतीयो श्रावीका. जैन धर्मने पाळी पामे क्षेमनो
ममदा. ॥ २ ॥

सुधारा.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने-ए राग.

सुधारो जो करवा इच्छो मानवी,
सुधारामां समजी देशो चित्तनो.
शास्त्राधारे सुधारा नो सत्य छे.
आत्मोन्नतिने पामे मानव नित्यनो. सुधारा. ॥ १ ॥
निर्दोषी आचारने व्हाला देखी,

नित्यनियमथी करवां धार्मिक कृत्यजो;
ब्रह्मचर्य संरक्षा करवी हेतथी,
त्यागी जूठुं वदवी वाणी सत्यजो. सुधारा. ॥ २ ॥

विनये मातपिताने पाये लागवुं,
विनये गुरुने वन्दन करवुं प्रेमजो;
जैनधर्ममां श्रद्धा धरवी नेमथी,
स्वदेशवस्त्रो स्वदेशवेषे क्षेमजो. सुधारा. ॥ ३ ॥

धर्मभ्रष्ट करनारा हेतु त्यागीए,
जिनवाणीनो कदी न करवो लोपजो;
मातपिता ने सुगुरु साधु सन्तपर,
कदी न करवो प्राण जतां पण कोपजो. सुधारा. ॥४॥

व्यसन अने वेश्यानो संग न कीजीए,
धार्मिक तत्त्वो वांचो सुगुरु पासजो;
भाषानी केळवणीथी नहि फुलीए,
धर्मभ्रष्ट कुधारा तजवा खासजो. सुधारा. ॥ ५ ॥

कुत्सितधारा जेवा सुधारा घणा,
एवा सुधारानो करवो नाशजो;
देखादेखी सुधाराना वेगमां,
पडता प्राणी कुधाराना पाशजो. सुधारा. ॥ ६ ॥

चेतनने सुधार्याथी सुधर्या खरा,
करवी धर्मिजनने प्रेमे स्हायजो;
सद्वर्तनथी सुधरो जागी धर्मने,
खर्च नकामां करवां नहि दुःखदाय जो. सुधारा. ॥ ७ ॥

नास्तिकता त्यागीने आस्तिकता भजो,
कदी न मूको जैनधर्मने धीरजो;

भक्ति देवी महिमा भारे, वांछित सर्वे सहेज मळे. ॥ ५ ॥
आवश्यकमां भक्तिमहिमा, जिनवाणी विस्तरथी कहे,
वीरजिनेश्वर पूजामांहि, भक्ति भळतां शर्म लहे;
भक्ति करतां भावज प्रगटे, भावे भव्यो कर्म दहे,
भक्ति छे शूरानी सज्जन, भक्तिने विरला को चहे. ॥ ६ ॥
द्रव्य भाव दो भेदे भक्ति, भक्ति विरला भव्य करे,
भक्ति शक्ति निर्मल चेतन, शाश्वत सिद्धि शर्म वरे;
भक्तिथी जिनशासन देवो, सहाय करे शाश्वतपन्थे,
जिनवरभक्ति देवो करता, भाख्युं छे उत्तम ग्रन्थे. ॥ ७ ॥
चिदानन्दनी लहेरो प्रगटे, भक्ति करतां भव्य खरे,
बुद्धिसागर भक्तियोगे, भवपाथोधि भव्य तरे;
ओगणिश चोसठनी साले, पोष शुक्ल बारस सारी,
जयजय मङ्गलकारक भक्ति, भक्ति ह्हारी बलिहारी. ॥ ८ ॥

गुरुपद स्तुति.

ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने-ए राग.

सद्गुरु मुनिवर परम कृपाळु वंदीए,
परोपकारी परम पूज्य गुणवंतजो;
भावदयाना सागर ज्ञानी सेवतां.
आवे दुःखदावाग्नि बहु भवनो अंतजो. सद्गुरु ॥ १ ॥
पंच महाव्रत धारक वारक मोहने,
भवजलधिथी तारक नायक नाथजो;
सदुपदेशे शिष्यवर्ग उद्धारता,
शिवनगरीना प्रापक सारा साथजो. सद्गुरु. ॥ २ ॥

आत्मोन्नतिना उपायो.

पद.

ओधवजी सन्देशो कहेजो श्यामने—एराग.

आत्मोन्नतिना हेतु सज्जन सांभळो;
विसंवाद नहि जेमां किञ्चित् मात्रजो,
सद्गुरु उपदेशे मन वाळो व्हालथी;
सज्जन संगति करी बनो सुपात्रजो. आत्मोन्नति. १
नाना मोटा जीव वृन्दने पाळजो;
दया धर्मथी करशो आत्म कृतार्थजो,
सत्य शील सन्तोष क्षमादिक धर्मथी;
साधो भव्यो परमगति परमार्थजो. आत्मोन्नति. २
चाडी चुगली चोरी झटपट वारीए;
निन्दा कदी न करवी प्राणी भव्यजो,
दोषीना पण दोषो टाळो प्रेमथी;
समता भावे करवुं सहु कर्तव्यजो. आत्मोन्नति. ३
राखो सहुनी साथे मैत्री भावना;
कदी न भूडुं चिन्तो परनुं लेशजो,
धर्मि देखी हरखो मनमां हेतथी;
कदी न करवो वात वात कलेशजो. आत्मोन्नति. ४
नीति रीति राखो सज्जन नेमथी;
वदो विचारी वाणी सुन्दर सत्यजो,
धर्म अर्थने काम अने परमार्थमां;
कदी न वदवी वाणी लेश असत्यजो. आत्मोन्नति. ५
परधनने पत्थरसम चित्ते धारवुं;
पर ललनाने मातसमाना लेखजो,

सुख दुःख पोताना सम अन्यने जाणीने;
सर्व जीवोने पोताना सम देखजो. आत्मोन्नति. ६
सत्योद्धारक धर्मोद्धारक कार्यमां;
उद्यम करवो मनमां धरीने व्हालजो,
चेतनशक्ति जाणी चेतन सेववो;
सत्य जूठनो करजो मनमां ख्यालजो. आत्मोन्नति. ७
माणांने पण परनी निन्दा त्यागवी;
धर्मीजनने करवी प्रेमे सहायजो,
क्रोध मान माया ने लोभ नीवारतां;
बुद्धिसागर वर्तनथी सुख थायजो. आत्मोन्नति. ८

नीतिपद.

ओधवजी सन्देशो कहेजो श्यामने-ए राग.

हळीमळीने चालो सहुनी साथमां,
व्हालां साथे कदी न करवुं वेरजो;
मातपितानी शिक्षा हृदये धारवी,
नीचोनी साथे करवुं नहि हेरजो. हळीमळीने. ॥ १ ॥
संकट पडतां हिंमत हृदये धारवी,
कदी न करवो दुर्जन साथे प्यारजो;
देन वेरथी विरुद्धवर्तन त्यागवुं,
वात चित्तमां कदी न करवो खारजो. हळी. ॥ २ ॥
म[illegible]नी सेवा साची मानवी,
क[illegible]नथी करो नहीं अहंकारजो;
प[illegible]कारे प्रीति निशदिन राखवी,
दया धर्मने सेवो शिव सुखकारजो. हळी. ॥ ३ ॥

सहुनुं सारु चिंतववाथी श्रेय छे,
सत् संगत करवानी राखो टेवजो;
नवतत्त्वादिक जाणी आतम तारवो,
देवगुरुनी करवी साची सेवजो. हळी. ॥ ४ ॥
गप्पां मारी जीवन व्यर्थ न गाळवुं,
कदी न करवो कारण पामी क्रोधजो;
ज्यां त्यां गुण देखीने गुणने आदरो,
देवो सर्व जीवोने उत्तम बोधजो. हळी. ॥ ५ ॥
क्रोध कपट निन्दादिक दोषो टाळवा,
हरतां फरतां आतममां उपयोगजो;
बुद्धिसागर सद्वर्तन सेव्या थकी,
प्रगटे अन्तर शाश्वत लक्ष्मी भोगजो. हळी. ॥ ६ ॥

कर्तव्यबोध.

पद.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने—एराग.

विनयमन्त्रथी वैरी वशमां थाय छे;
विवेक दृष्ट्या सत्यासत्य जणायजो,
विद्याधन मोटामां मोटुं जाणवुं;
विचारीने कार्य करो सुखदायजो. विनय. ॥ १ ॥
विषसरखा विषयोने जाणी त्यागवा;
विषधर सरखी वेश्या महा दुःखदायजो,
वैरिनो विश्वास न करवो व्हालथी;
व्यसनो सर्वे त्यजवां मन हित लायजो. विनय. ॥२॥
वंठेलानी सोबत करवी नहि कदी;

सहुनुं सारु चिंतववाथी श्रेय छे,
सत् संगत करवानी राखो टेवजो;
नवतत्त्वादिक जाणी आतम तारवो,
देवगुरुनी करवी साची सेवजो. हळी. ॥ ४ ॥
गप्पां मारी जीवन व्यर्थ न गाळवुं,
कदी न करवो कारण पामी क्रोधजो;
ज्यां त्यां गुण देखीने गुणने आदरो,
देवो सर्व जीवोने उत्तम बोधजो. हळी. ॥ ५ ॥
क्रोध कपट निन्दादिक दोषो टाळवा,
हरतां फरतां आतममां उपयोगजो;
बुद्धिसागर सद्वर्तन सेव्या थकी,
प्रगटे अन्तर शाश्वत लक्ष्मी भोगजो. हळी. ॥ ६ ॥

कर्तव्यबोध.

पद.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने—एराग.

विनयमन्त्रथी वैरी वशमां थाय छे;
विवेक दृष्ट्या सत्यासत्य जणायजो,
विद्याधन मोटामां मोटुं जाणवुं;
विचारीने कार्य करो सुखदायजो. विनय. ॥ १ ॥
विषसरखा विषयोने जाणी त्यागवा;
विषधर सरखी वेश्या महा दुःखदायजो,
वैरिनो विश्वास न करवो व्हालथी;
व्यसनो सर्वे त्यजवां मन हित लायजो. विनय. ॥२॥
वंठेलानी सोबत करवी नाहि कदी;

सुख दुःख पोताना सम अन्यने जाणीने;
सर्व जीवोने पोताना सम देखजो. आत्मोन्नति. ६
सत्योद्धारक धर्मोद्धारक कार्यमां;
उद्यम करवो मनमां धरीने व्हालजो,
चेतनशक्ति जाणी चेतन सेववो;
सत्य जूठनो करजो मनमां ख्यालजो. आत्मोन्नति. ७
प्राणांते पण परनी निन्दा त्यागवी;
धर्मिजनने करवी प्रेमे स्हायजो,
क्रोध मान माया ने लोभ नीवारतां;
बुद्धिसागर वर्तनथी सुख थायजो. आत्मोन्नति. ८

नीतिपद.

ओधवजी सन्देशो कहेजो श्यामने-ए राग.

हळीमळीने चालो सहुनी साथमां,
व्हालां साथे कदी न करवुं वेरजो,
मातपितानी शिक्षा हृदये धारवी,
जीवोनी साथे करवुं नहि झेरजो. हळीमळीने. ॥ १ ॥
संकट पडतां हिंमत हृदये धारवी,
कदी न करवो दुर्जन साथे प्यारजो.
देश वेषथी विरुद्धवर्तन त्यागवुं,
वात विनयथी कदी न करवो व्यारजो. हळी. ॥ २ ॥
सद्गुरुना सेवा सारी मानवी,
गुणथी कदी नहीं अहंकारजो.
प्रभु कां प्रीत निशदिन राखवी,
दया धर्मने सेवो नित गुणकारजो. हळी. ॥ ३ ॥

सहुनुं सारुं चिन्तवशो प्रेम धरी,
सत्सुं संगत करवानो रागी रहेजो.
नवतत्त्वादिक जाणी आतम मानजो.
देवगुरुनी करवी सारी सेवजो. हर्षो. ॥ ४ ॥
नरनां सारां जीवन क्यां न गाळवुं.
कदी न करवो कारण पापी कोपलो;
ज्यां त्यां पण दुर्गुणने गणने आदरो,
देवो सर्व जीवोने उत्तम बोधजो. हर्षो. ॥ ५ ॥
क्रोध कपट निन्दादिक दोषो टाळवा,
हरतां फरतां आतममां उपयोगजो;
बुद्धिसागर सद्वर्तन सेव्या थकी,
प्रगटे अन्तर शाश्वत लक्ष्मी भोगजो. हर्षो. ॥ ६ ॥

कर्तव्यबोध.

पद.

ओधवजी सन्देशो कहेजो श्यामने—ए राग.

विनयमन्त्रथी वैरी वशमां थाय छे;
विवेक दृष्टया सत्यासत्य जणायजो,
विद्याधन मोटामां मोटुं जाणवुं;
विचारीने कार्य करो सुखदायजो. विनय. ॥ १ ॥
विषसरखा विषयोने जाणी त्यागवा;
विषधर सरखी वेश्या महा दुःखदायजो;
वैरिनो विश्वास न करवो क्हालथी;
व्यसनो सर्व त्यजवां मन हित लायजो. विनय. ॥२॥
वंठेलानी सोबत करवी नहि कदी;

सहुनुं सारु चिंतववाथी श्रेय छे,
सत् संगत करवानी राखो टेवजो;
नवतत्त्वादिक जाणी आतम तारवो,
देवगुरुनी करवी साची सेवजो. हळी. ॥ ४ ॥
गप्पां मारी जीवन व्यर्थ न गाळवुं,
कदी न करवो कारण पामी क्रोधजो;
ज्यां त्यां गुण देखीने गुणने आदरो,
देवो सर्व जीवोने उत्तम बोधजो. हळी. ॥ ५ ॥
क्रोध कपट निन्दादिक दोषो टाळवा,
हरतां फरतां आतममां उपयोगजो;
बुद्धिसागर सद्वर्तन सेव्या थकी,
प्रगटे अन्तर शाश्वत लक्ष्मी भोगजो. हळी. ॥ ६ ॥

कर्तव्यबोध.

पद.

ओधवजी सन्देशो कहेशो श्यामने—एराग.

विनयमन्त्रथी वैरी वशमां थाय छे;
विवेक दृष्ट्या सत्यासत्य जणायजो,
विद्याधन मोटामां मोटुं जाणवुं;
विचारीने कार्य करो सुखदायजो. विनय. ॥ १ ॥
विषसरखा विषयोने जाणी त्यागवा;
विषधर सरखी वेश्या महा दुःखदायजो,
वैरिनो विश्वास न करवो व्हालथी;
व्यसनो सर्वे त्यजवां मन हित लायजो. विनय. ॥२॥
वंठेलानी सोवत करवी नहि कदी;

गुरुनी कृपा पामी साचा भेदथी.
बुद्धि एवी थजो गुरु सेवनो. सद्. ॥ ४ ॥
सद्गुरुपर पण प्रभु बुद्धि धारवी,
शाश्वत शान्ति पामो जीवनां द्वन्द्वनो:
अनुभवो आतम सम सर्वे आतमा,
टळो विकारो मायाना महाफन्दनो. सद्. ॥ ५ ॥
भूंडानुं पण भूंडुं कदी न इच्छवुं.
वैरिपर पण कदी न करवुं वेरनो:
समभावे वर्तीने आ संसारमां.
सर्व जीवो पर वत्सल दाखो प्रेमनो. सद्. ॥ ६ ॥
वादविवादो टाळी ज्हाला बन्धुओ,
करशो जन्मी आतमनुं कल्याणजो:
बुद्धिसागर वरो शान्ति सर्वने,
एवी बुद्धि आपे शिवनुं स्थानजो. सद्. ॥ ७ ॥

दुर्जनलक्षण.

मनहरछन्द.

गुणनो न राग होय अवगुण देखनार;
पयमांहि पूरा काढे दुर्जन गणाय छे,
सन्तने कुटिल कहे कुटिलने सन्त कहे;
मूकी सत्यपन्थ अने कुपन्थे ते जाय छे.
सज्जन मनुष्य दोष देखवामां शूर होय;
पारकानुं रूडुं देखी मनडुं दुःखाय छे,
चांदो जेम काक देखे पारकाना दोष तेम;
देखवानी बुद्धि जेनी अवळी सदाय छे. ॥ १ ॥

चन्दन अने जल जेवा गुण होय सज्जनमां;
धीनिधि सज्जन जग धन्य अवतार छे. ॥ २ ॥

विद्यार्थि लक्षण.

मनहरछंद.

विनय विवेक होय सरल स्वभाव होय;
भणवानी चीवटमां मनडुं सदाय छे,
आळसने त्यागवामां दोष वृन्द टाळवामां;
नीति रीतभात मनमांहि नित्य न्हाय छे.
प्रभातना पहोरमां ऊठीने अभ्यास करे;
स्थिर एक चित्तथकी भणे सहु पाठने,
ब्रह्मचर्य धारी वारी विषयनो पाप वात;
तजे सहु मोजशोख पारवाना ठाठने. ॥ १ ॥
शिक्षकनी शिखामण हृदयमां धारे सहु;
वक्तव्यान पेटे चित्त विद्यामां सदाय छे,
विचारीने बोले बोल करे मान गुरु तोल;
देशी वेष औषधथी जीवन गळाय छे.
मातपिता नमन करे छे दिन प्रतिदिन;
बीडी आदि व्यसननो जेने नित्य त्याग छे,
मृत्युनो न भयगणे पाठ प्रेमथकी भणे;
धीनिधि सुशिष्य जगमांहि महा भाग्य छे. ॥ २ ॥

शिष्यलक्षण.

मनहरछंद.

विनय सदाय धरे गुरु वैयावृत्य करे,
गुरुने वन्दन करे बहुमान प्रेमथी;



परमकृपावचन.

दुहा.

सत्य सदा जिनधर्म छे, सत्य सदा जिन देव;
सत्य सदा मुनिवर गुरु, करवी प्रेमे सेव. ॥ १ ॥
तीर्थंकर सर्वज्ञ छे, सत्य कहे छे तत्त्व,
श्रद्धा साची राखवी, ज्ञान लही महासत्त्व. ॥ २ ॥
अनुमान आगमथकी, जिनवर वाणी सत्य;
वीतराग सर्वज्ञ छे, वदे न वाक्य असत्य. ॥ ३ ॥
जिनवाणीने जाणतां, समकित निर्मल होय;
सर्वांशे परिपूर्ण छे, जिनवाणी अवलोय. ॥ ४ ॥
जिनवाणीने जाणवा, गुरुगम लेजो भव्य;
सार सार आदेय छे, तत्त्वथकी कर्तव्य. ॥ ५ ॥
जैनधर्म जगमां वडो, आत्मोन्नति करनार;
दंसण नाण चरितथी, भवि शिवपद वरनार. ॥ ६ ॥
पुद्गल बाह्यपदार्थथी, चेतन भिन्न सदाय;
निश्चयथी मन जाणतां, भवभयभ्रान्ति जाय. ॥ ७ ॥
असंख्यप्रदेशी आतमा, वर्ते देह प्रमाण;
प्रतिशरीरे भिन्नभिन्न, अनन्त आतम जाण. ॥ ८ ॥
अप्पा परमप्पा कह्यो, सत्ताथी आ जीव;
क्षायिक भावे व्यक्तितः, होवे जीवनो शीव. ॥ ९ ॥
सात नयोथी जाणीने, अन्तर चेतन देव;
बुद्धिसागर ध्यानथी, साची करवी सेव. ॥ १० ॥

ॐ नमः

मुनि गुरु स्तुतिः

...वजी संदेशो कहेजो, श्यामने—ए राग.

...आगम पंचांगी... :
...गरि मुनि गरु...

परमकृपावचन.

दुहा.

सत्य सदा जिनधर्म छे, सत्य सदा जिन देव;
सत्य सदा मुनिवर गुरु, करवी प्रेमे सेव. ॥ १ ॥
तीर्थंकर सर्वज्ञ छे, सत्य कहे छे तत्त्व;
श्रद्धा साची राखवी, ज्ञान लहो महासत्त्व. ॥ २ ॥
अनुमान आगमथकी, जिनवर वाणी सत्य;
वीतराग सर्वज्ञ छे, वदे न वाक्य असत्य. ॥ ३ ॥
जिनवाणीने जाणतां, समकित निर्मल होय;
सर्वांशे परिपूर्ण छे, जिनवाणी अवलोय. ॥ ४ ॥
जिनवाणीने जाणवा, गुरुगम लेजो भव्य;
सार सार आदेय छे, तत्त्वथकी कर्तव्य. ॥ ५ ॥
जैनधर्म जगमां वडो, आत्मोन्नति करनार;
दंसण नाण चरित्तथी, भवि शिवपद वरनार. ॥ ६ ॥
पुद्गल बाह्यपदार्थथी, चेतन भिन्न सदाय;
निश्चयथी मन जाणतां, भवभयभ्रान्ति जाय. ॥ ७ ॥
असंख्यप्रदेशी आतमा, वर्ते देह प्रमाण;
प्रतिशरीरे भिन्नभिन्न, अनन्त आतम जाण. ॥ ८ ॥
अप्पा परमप्पा कह्यो, सत्ताथी आ जीव;
क्षायिक भावे व्यक्तितः, होवे जीवनो शीव. ॥ ९ ॥
सात नयोथी जाणीने, अन्तर चेतन देव;
बुद्धिसागर ध्यानथी, साची करवी सेव. ॥ १० ॥

ॐ नमः

मुनि गुरु स्तुतिः

ओधवजी संदेशो कहेजो, श्यामने—ए राग.

पिस्तालीश आगम पंचांगी देखतां,
पञ्चमहाव्रतधारि मुनि गुरु होय जो।

व्यवहारे मुनिवेष प्रवाथी सद्गुरु,
पश्चात्तारे मुनिवर साचा जोय जो. चिन्तालीश. ॥ १ ॥
दशवैकालिक आवश्यकमां भाखियुं,
आचारांगे मुनि कह्या गुणरायणो;
सूत्र कृतांगे ठाणांगे वळी देखजो,
पंचमहाव्रतधारक मुनि गुणदायणो. चित्ता. ॥ २ ॥
समवायांगे भगवतीसूत्रे भाखियुं,
मुनिगुणथी शासन चाले पेम जो;
पंचम आरक पर्यंत वीरना शासने,
संघ चतुर्विध वर्ते न धरो भ्रमजो. चित्ता. ॥ ३ ॥
ज्ञाताधर्म कथांगे साधुनी कथा,
वांची मनमां भरमत रागो भव्यजो;
उपासकमां श्रावक रीति सांभळो,
सद्गुरु मुनिवर मानो ए कर्तव्यजो. चित्ता. ॥ ४ ॥
उपासकदशांगे साधु श्रावक आनंद,
व्यवहारे भाख्युं छे कहुं ते सम्यजो;
अंतगडे गुणगिरि सम मत्सर नाशीने,
भाखाने पण थका न केम अमयजो. चित्ता. ॥ ५ ॥
पंचाशा नेटीमां मुनिवर बोलता,
निशीथ महानिशीथे मुनि गुणरायजो;
बृहत्कल्प व्यवहारे मुनि गुण भाखीया,
उत्तराध्ययनमां मुनि गुण गुणदायजो. चित्ता. ॥ ६ ॥
पर्युषणाकल्पे वचन विचारी वर्णीये,
उत्तराध्ययने ग्रन्थे मुनि गुण भाखतो;
नन्दी अनुयोगमां आणो गुणदिक भाखतो.

दीक्षा धारी मुनिवर गुरुजी होय जो. पिस्ता. ॥ ७ ॥
तत्त्वारथ श्वेताम्बर सम्मत सूत्र छे,
दिगम्बर सम्मत ते सूत्र पवित्र जो;
दीक्षाधारी मुनि गुरु त्यां भाखिया,
जो जो तीर्थंकर चोवीस चरित्र जो. पिस्ता. ॥ ८ ॥

त्रिज्ञानी तीर्थंकर दीक्षा ले खरा,
व्यवहारे मुनि गुरु मही जयकारजो;
व्यवहारे वत्याविण तीर्थोच्छेद छे,
धन्य धन्य मुनिवर गुरुनो अवतार जो. पिस्ता. ॥ ९ ॥
योगशास्त्रमां हेमचन्द्रजी भाखता,
पञ्च महाव्रतपालक मुनि गुरु साचजो;
हरिभद्रादिक मुनि गुरुने भाखता,
मुनि गुरु विण बाकी जाणो काच जो. पिस्ता. ॥ १० ॥

भद्र बाहु निर्युक्तिमां मुनिवर गुरु,
आनन्दघननां वचन विचारो भव्य जो;
नमिनाथना स्तवने पंचांगी खरी,
मुनि गुरु मान्या साचुं कर्तव्यजो. पिस्ता. ॥ ११ ॥

व्यवहार अने निश्चयथी साधन साध्यता,
श्रावक साधु इत्यादिक व्यवहार जो;
नीतिनी आचरणा पण व्यवहारमां
सर्वोत्तम साधन साचुं व्यवहारजो. पिस्ता. ॥ १२ ॥

जिन प्रतिमा वन्दन पण व्यवहार छे,
वस्तु त्याग पण व्यवहारे निर्धारजो;
भगवतीमांहि मुनिवर गुरु छे पञ्चधा,
धन्य धन्य मुनिवर गुरुनो अवतारजो. पिस्ता. ॥ १३ ॥

दीक्षा धारी मुनिवर गुरुनी टेव जो. पिस्ता. ॥ ७ ॥
तत्त्वार्थ श्वेताम्बर सम्मत सूत्र छे,
दिगम्बर सम्मत ने सूत्र पवित्र जो;
दीक्षाधारी मुनि गुरु त्यां भाखिया,
जो जो तीर्थंकर चोवीस चरित्र जो. पिस्ता. ॥ ८ ॥
त्रिज्ञानी तीर्थंकर दीक्षा ले त्यारे,
व्यवहारे मुनि गुरु सही जयकारजो;
व्यवहारे वन्दाविण तीर्थंकर छे,
धन्य धन्य मुनिवर गुरुनो अवतार जो. पिस्ता. ॥ ९ ॥
योगशास्त्रमां हेमचन्द्रजी भाखता,
पञ्च महाव्रतपालक मुनि गुरु मानजो;
हरिभद्रादिक मुनि गुरुने भाखता.
मुनि गुरु विण बाकी जाणो कान जो. पिस्ता. ॥ १० ॥
भद्र बाहु निर्युक्तिमां मुनिवर गुरु,
आनन्दघनना वचन विचारो भव्य जो;
नमिनाथना स्तवने पंचांगी खरी,
मुनि गुरु मान्या साचुं कर्तव्यजो. पिस्ता. ॥ ११ ॥
व्यवहार अने निश्चयथी साधन साधना,
श्रावक साधु इत्यादिक व्यवहार जो;
नीतिनी आचरणा पण व्यवहारमां
सर्वोत्तम साधन साचुं व्यवहारजो. पिस्ता. ॥ १२ ॥
जिन प्रतिमा वन्दन पण व्यवहार छे,
वस्तु त्याग पण व्यवहारे निर्धारजो;
भगवतीमांहि मुनिवर गुरु छे पञ्चधा,
धन्य धन्य मुनिवर गुरुनो अवतारजो. पिस्ता. ॥ १३ ॥

दीक्षा धारी मुनिवर गुरुजी होय जो. पिस्ता. ॥ ७ ॥
तत्त्वारथ श्वेताम्बर सम्मत सूत्र छे,
दिगम्बर सम्मत ते सूत्र पवित्र जो;
दीक्षाधारी मुनि गुरु त्यां भाखिया,
जो जो तीर्थंकर चोवीस चरित्र जो. पिस्ता. ॥ ८ ॥

त्रिज्ञानी तीर्थंकर दीक्षा ले खरा,
व्यवहारे मुनि गुरु मही जयकारजो;
व्यवहारे वर्त्याविण तीर्थोच्छेद छे,
धन्य धन्य मुनिवर गुरुनो अवतार जो. पिस्ता. ॥ ९ ॥
योगशास्त्रमां हेमचन्द्रजी भाखता,
पञ्च महाव्रतपालक मुनि गुरु साचजो;
हरिभद्रादिक मुनि गुरुने भाखता,
मुनि गुरु विण बाकी जाणो काच जो. पिस्ता. ॥ १० ॥

भद्र बाहु निर्युक्तिमां मुनिवर गुरु,
आनन्दघननां वचन विचारो भव्य जो;
नमिनाथना स्तवने पंचांगी खरी,
मुनि गुरु मान्या साचुं कर्तव्यजो. पिस्ता. ॥ ११ ॥

व्यवहार अने निश्चयथी साधन साध्यना,
श्रावक साधु इत्यादिक व्यवहार जो;
नीतिनी आचरणा पण व्यवहारमां
सर्वोत्तम साधन साचुं व्यवहारजो. पिस्ता. ॥ १२ ॥

जिन प्रतिमा वन्दन पण व्यवहार छे.
वस्तु त्याग पण व्यवहारे निर्धारजो;
भगवतीमांहि मुनिवर गुरु छे पञ्चधा.
धन्य धन्य मुनिवर गुरुनो अवतारजो. पिस्ता ॥ १३ ॥

ॐ नमः सद्गुरवे.

गुरुप्रभाव.

संघ चतुर्विध मोटा मुनिवर वंदीए,
मुनिवर वंदे कर्म मर्मनो नाश जो;
पुण्योदयथी मुनिवर दर्शन पामीए,
मुनिवरनी श्रद्धाथी शिवपुर वासजो. संघ. ॥ १ ॥

श्री नवकारे पंचम परमेष्ठि कथा,
यथाशक्तिथी साधे संयम योगजो;
कनक कान्ता त्याग कर्याथी त्याग छे,
आतमध्याने साधे शिवपुर भोगजो. संघ. ॥ २ ॥

कुमतिथी मुनिवरनी निन्दा केट करे,
केइक करता मुनिवरनुं अपमान जे;
अज्ञो तेवा कर्म ग्रहे छे चीकणां,
मुनिनिन्दाथी भूले आतमभान जो. संघ. ॥ ३ ॥

केइक कहेता मुनिवर अधुना को नहीं,
कहेवुं एवुं निजमति कल्पनमात्रजो;
आत्मार्थी वर्ते छे मुनिवर मही घणा,
मुनिवर वन्दन करतां निर्मल गात्र जो. संघ. ॥ ४ ॥

द्रव्यादिकथी साधे संयम साधना,
शासन नायक धर्म प्ररूपक धीरजो;
सदुपदेशे भव्यजनोने बोधता,
वैरागी त्यागी मुनिवर गंभीर जो. संघ. ॥ ५ ॥

मुनिवरना दर्शनथी निर्मल नेत्र छे,
मुनिवरदाने पवित्र होवे हाथजो;

निवरना उपदेशे वीर विश्वास छे,
हीतलमांहि मुनिवर सत्य सनाथजो. संघ. ॥ ६ ॥

च विषना उदये पंचम काळमां,
असंयतिनी पूजानुं आश्चर्य जो;
ीक्षा वण संयतनी पेठे पूजना,
ऽघुता पामे संयत सद्गुरुवर्यजो. संघ. ॥ ७ ॥

हिक श्रद्धा मुनिपरथी उठाडीने,
ानमां आवे तेवुं माने लोकजो;
ाश्चिमनी केळवणी कुतर्के भर्यां,
ास्तिक थइने माने सघळुं फोकजो. संघ. ॥ ८ ॥

मुनिवरनी श्रद्धाथी सत्यज संपजे,
मुनिवरनी भक्तिथी शाश्वत शर्मजो,
मुनिवरनी संगतथी नास्तिकता टळे.
मुनिना वैयावृत्त्ये नासे कर्मजो. संघ. ॥ ९ ॥

मुनि करे ते व्रतने श्रावक शुं करे,
मुनिवर जंगम तीरथ गंग समानजो;
मुनिनी सेवा शिवना मेवा जाणीए,
मुनि गुरुथी पामो शाश्वत स्थानजो. संघ. ॥ १० ॥

मुनिनिन्दा करवामां मोटुं पाप छे,
करो नहि मुनिनिन्दा नरने नारजो;
दोषदृष्टिथी दोषज ज्यां त्यां भासशे,
गुणदृष्टिथी गुण भासे निर्धारजो. संघ. ॥ ११ ॥

दोषे भरीओ जाणो आ संसार छे,
सर्व गुणी तो अरिहन्त छे देवजो;

अज्ञानिनो भूंडो छे अवतारजो. संघ. ॥ १८ ॥
आज काल पण मुनिवर बहु विद्वान् छे,
यथाशक्तिथी पाळे पंचाचारजो;
जिनवाणीनो राग घणो छे दीलमां,
संयमना साधनमां साचो प्यारजो. संघ ॥ १९ ॥
मुनि विना नहि श्रावक देखो सूत्रमां,
पुष्टालंबन सद्गुरु मुनि निर्धारजो;
गुरु विना नहि ज्ञान कदापि पामीए,
मुनि गुरुनो साचो जग आधारजो. संघ. ॥ २० ॥
जगमां मोटो मुनिवरनो उपकार छे,
मुनिदर्शनथी कर्म कलंक कटायजो;
प्रत्यक्ष उपकारी मुनिवरने वंदीए,
जन्म जरानां दुःखडां दूरे जायजो. संघ. ॥ २१ ॥
दुनियामां उपकारो सर्वे बहु कह्या,
सहुथी मोटो सदुपदेश उपकारजो;
सदुपदेशे सत्यासत्य जणावता,
धन्य धन्य मुनिवरनो जग अवतारजो. संघ. ॥ २२ ॥
साधु वेषे एक समयमां सिद्धता,
अष्टोतर शत मुनिवर गुणना पात्रजो;
पन्नवणा ने भगवतीमांहि भाखियुं,
करवी साची सुखकर संयम यात्रजो. संघ. ॥ २३ ॥
ज्ञानी ध्यानी आतमार्थी मुनिवर्ग छे,
मात पिता बंधुथी अधिका लेखजो;
दर्शन दुर्लभ मुनिवरनां कलिकाळमां,
जैन धर्मना नायक मुनिवर देखजो. संघ. ॥ २४ ॥

वचनामृत.

भुजंगीछन्द.

सदा संपथी चालवुं शीख धारी,
तजोने कढंगी कुटेवो नठारी;
वदोने विचारी सदा बोल साचा,
सदा शोभती सत्यथी भव्य वाचा. ॥ १ ॥
लडो ना कदा कोइनी साथ क्रोधे,
सदा विश्व शोभो रुडा दील बोधे;
दया दील लावी जनोने सुधारो,
भली हितशिक्षा थकी लोक तारो. ॥ २ ॥
सदा पारकी नारने मात देखो,
सदा पारका वित्तने धूळ लेखो;
तजो दुर्मति दुःख देनार भारी,
सजो सन्मति शर्म देनार सारी. ॥ ३ ॥
दया दान कृत्यो मुदा दील धारो,
तजी दोषदृष्टि लहो धर्म सारो;
भला भावथी सेविये सत्यदेवा,
प्रभु भक्ति छे सत्य आनंदमेवा. ॥ ४ ॥
विचारी करो कृत्य जे होय सारां,
विचारी तजो कृत्य जे छे नठारां;
विचारी सुधारी धरो धर्मधारा;
सदा धर्मथी सर्व सारा थनारा. ॥ ५ ॥
स्वधर्मि जनोने सदा स्हाय आपो,
अदेखाइथी कीजिए ना वळापो;

तजो ना कदी धर्मने टेक राखी,
ग्रहोने व्रतो सद्गुरु सत्य साखी;
भली राखिये मित्रता सर्व साथे,
मुनिने सदा दीजिए दान हाथे. ॥ ४ ॥
दया धर्मने सेविये र्‍हेम राखी,
प्रभुए मुखेथी दया सत्य भाखी;
दयाथी महा पापना वृन्द नासे,
दयाथी खरी शांतता दील भासे. ॥ ५ ॥
दयाथी अहो देवता स्हाय आपे,
दयाथी सदा दीलमां सुख व्यापे;
दयाथी सदा देवता हस्त जोडे,
दया देवता मानिनां मान मोडे. ॥ ६ ॥
वदो सत्यवाणी सदा हित आणी,
प्रभु सत्यवाणी महीमां प्रमाणी;
सदा सत्यथी पामिये सत्य शान्ति,
सदा सत्यथी टाळिये दुःख भ्रान्ति. ॥ ७ ॥
सदा सत्यमां राचवुं टेक धारी,
सदा सत्यमां वर्तवुं मोह वारी;
भजो सत्यने दुःखने शोक वारे,
भजो सत्यने जीवने शिघ्र तारे. ॥ ८ ॥
प्रभु भक्तिमां प्रेमथी नित्य राचो,
प्रभु भक्तिमां प्रेमथी भव्य माचो;
गुरु भक्तिमां शक्ति सर्वे समाती,
गुरु भक्तिथी रुद्धि सर्वे पमाती. ॥ ९ ॥
गुरु भक्तिमां प्रेम छे भव्य भारी,

सहु साथमां प्रेमथी नित्य रहेवुं, भलुं वेण वाचा थकी भव्य कहेवुं;
करो कार्य सारां नठारां तजीने, लहो सत्य शान्ति प्रभुने भजीने. ९
धरी धैर्यने कीजीए धर्मसेवा, धरी भक्तिने पूजीए इष्टदेवा;
कहे धीनिधि सन्नीति धर्म सारो, भला बाळको वात ए तो विचारो. १०

सुधारा.

भुजंगी छन्द.

अहो भव्य लोको विचारो सुधारा,
तजो दुःखदायी नठारा कुधारा;
विदेशी दवाथी थयो भ्रष्टवेडो,
सुता सर्पने जाणिने जेम छेड्यो. ॥ १ ॥
विदेशी दवाथी भलुं ना थनारुं,
अवद्यौषधे धर्म सर्वे जनारुं;
तजोने विदेशी तणा कूट चाळा,
विदेशी वस्त्राथी कदी ना रुपाळा. ॥ २ ॥
धरो वस्त्र देशी स्वदेशीय वेषे,
स्वदेशी वस्त्राथी रहे वित्त देशे;
वणी ने ठगी फोक फूलो न लोको,
विना धर्मथी वागशे दुःखयोगो. ॥ ३ ॥
करीने कुकर्मो अरे जन्म हारो,
धरो धर्म धीरे करो सत्य मार्ग.
कुसंगी कुढंगी तणां वेण काचां,
जिनेन्द्र तणां तत्त्व ते भव्य साचां. ॥ ४ ॥
विदेशी जनोनी तजो टापटीपो,

ॐ नमः

राग मराठी मार्गी.

श्री शंखेश्वर पार्श्वजिनेश्वर, जिनशासन जयकारी,
धरणेन्द्र पद्मावती देवी, सहाय करो निर्धारी;
जिनभक्तिमां प्रेम करो नरनारी, भक्ति दुःख हरनारी. जिन. १
भक्तिथी जिनपदवी मळे छे, भक्ति सुख करनारी;
प्रभुभक्ति सहु कर्म हरे छे, कुमति कलंक निवारी. जिन. २
अष्टापदपर रावण आव्यो, भक्ति करी बहु भारी;
नाटकथी तीर्थंकर पदने, पाम्यो जग उपकारी. जिन. ३
भगवतीसूत्रे जिनवरभक्ति, भाखी छे गुणकारी;
प्रेमावेशे भक्ति करे तस, जाउं हुं बलिहारी. जिन. ४
भक्ति करतां केवल प्रगटे, भक्ति सद्गुण क्यारी;
भक्तिरसमां सुख अनंतुं, भक्ति शिवपुरबारी. जिन. ५
दोष निवारी सद्गुण धारी, माया फंद विसारी;
जिनवर भक्तिमां जीव भळतां, शिवपुरनी तैयारी. जिन. ६
पञ्चमकाळे भक्ति मोटी, भक्ति मनमां प्यारी;
बुद्धिसागर भक्ति सारी, आनंद मंगलकारी. जिन. ७

ॐ नमः

आत्मज्ञान.

मनहरछन्द.

चेतनना ज्ञानविना चेतनना ध्यान विना,
चेतनना भानविना चतुर चुकाय छे;
चेतनना ज्ञानथकी निजनो प्रकाश थाय.

चेतनना ज्ञानथकी लोचन खुलाय छे,
चेतनना ज्ञानथकी भागे मोह दूर थाय.
चेतनना ज्ञानथकी आनन्द जणाय छे.
चेतनना ज्ञानथकी टळे मान मटे मान;
चेतनना ज्ञानविना भवमां भमाय छे.
चेतनना ज्ञानथकी संयम लगन थाय;
चेतनना ज्ञानथकी प्रतीति थाय छे,
चेतनना ज्ञानथकी आनन्द अपार होय.
चेतनना ज्ञानथकी आतमा पुजाय छे.
चेतनना ज्ञानथकी उपाधि अळगी जाय;
चेतनना ज्ञानथकी जिन तो जणाय छे.
चेतनना ज्ञानथकी भव भव समाधता; २
बोधिबीज चेतनज्ञान उत्तम गणाय छे.

श्री पार्श्वनाथस्तवन.

सवैया एकत्रीसा.

पार्श्व जिनेश्वर मंगलकारी, वन्दन होजो वारंवार;
तव सेवन पूजा भक्तिथी, पामे प्राणी भवनो पार.
अलख निरंजन निर्भयदेशी, मंगलमालाना करनार;
जिनपडिमा जिन सरखी मानी, भक्तिथी आवे भवपार. ॥१॥
भगवती रायपसेणी सूत्र, जिनपडिमा वन्दनना पाठ;
जिनपडिमा पूजाथी संवर, समजो टाळी मूको ठाठ.
समवसरणमां जिनवर जेवी, जिनपडिमा वर्ते जयकार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां प्राणी पामे भवनो पार. ॥२॥
धनने माटे कागळ नोटो, काढे छे जेवी सरकार;

नोटोमां रुपैया साचा, जोशो आ जगनो व्यवहार.
जिनपडिमा पण तेवी रीते, जिन सरखी भाखी सुखकार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ३ ॥
समवसरणमां जिनवर वन्दे, फळ पामे जे प्राणी सार;
तेवुं फळ पडिमा वन्दनथी, समजो मनमां नर ने नार.
कलिकालमां जिन पडिमानो, साचो मोटो छे आधार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ४ ॥
सर्पबुद्धिथी दोरी हणतां, पंचेन्द्रिय हत्यानुं पाप;
मन परिणामे फल ए जाणो, एवी जिन वचनोनी छाप.
द्रौपतीए जिनपडिमा पूजी, धन्य धन्य श्रावक अवतार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ५ ॥
सूत्रोना अक्षर छे जेवा, तेवी मूर्ति छे निर्धार;
अक्षर पडिमा वे छे सरखां, स्थापन निक्षेपो जयकार.
अरिहन्तना नामे मुक्ति, स्थापनथी पण तेवी धार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ६ ॥
आगमने युक्तिथी साचो, जिनपडिमा वन्दन आचार;
शाश्वत जिनपडिमाना पाठो, सूत्रोमां वर्ते हितकार.
जिनपडिमानुं स्थापन करवुं, उत्सव तेनो छे गुणकार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ७ ॥
जिनपडिमाथी जिननी यादी, जिननी यादी गुणनुं मूळ;
जिननी सेवा मीठा मेवा, भक्तिथी भागे छे भूल.
बुद्धिसागर सापेक्षाथी समजी निश्चय ने व्यवहार;
वन्दन पूजन भक्ति करतां, प्राणी पामे भवनो पार. ॥ ८ ॥



श्री वीरप्रभुस्तुतिः

भुजंगी छंद.

नमो वीर विश्वेश देवाधिदेवा;
सदा ताहरी शीखमां शर्म मेवा,
प्रभु पादपद्मे रहुं भृंगरूपे;
प्रभु रूपने हुं चहुं छुं उमंगे. ॥ १ ॥
प्रभु तुंहि साचो मुदा पाय लागुं,
मुदा ताहरा ध्यानमां नित्य जागुं,
हॅण्या रागने द्वेष ज्ञानेज भारी,
अहो शक्ति भारी स्वभावेज त्हारी. ॥ २ ॥
जगज्जंतुने तारिया देशनाथी,
गॅण्यो भेदना तें प्रभुरे कशाथी,
अहो ताहरा ज्ञानमां सर्व भासे,
अहो ताहरा ध्यानमां चित्त वासे. ॥ ३ ॥
दिले वीरनी भक्ति लागीज साची,
रहुं वीरनी भक्तिमां नित्य राची,
प्रभु भक्तिथी शक्ति सर्वे पमाती,
प्रभु भक्तिथी द्वेषनी जाय काती. ॥ ४ ॥
प्रभु भक्तिथी दुःखना वृन्द जावे,
प्रभु भक्तिथी सत्य आनंद थावे,
प्रभु ज्ञानथी भक्तिमां भाव सारो,
प्रभु ज्ञान भक्तिथकी दुःख आरो. ॥ ५ ॥
जिने भाखियुं तत्त्व चैतन्य सारुं,
सदा शुद्ध चैतन्य छे तेज मारुं,
चिदानन्दरूपे प्रभु तुं सुहायो,

लही ताहरो बोध आनंद पायो. ॥ ६ ॥
पिता मात ने भ्रात ने इष्ट देवा,
करुं ताहरी प्रेमथी नित्य सेवा,
कहे धीनिधि ध्येयं ध्याने सुहायो,
प्रभु वीरथी वीर्य सम्भाव पायो. ॥ ७ ॥

श्री सद्गुरुस्तुतिः

भुजंगी छंद.

(गुरुने देखी वंदन करतां आ प्रमाणे स्तुति करवी.)

अहो सद्गुरुं दुःखथी तें उगार्यो,
भवांभोधिथी सद्गुरु तेंज तार्यो;
नमुं हुं नमुं हुं नमुं हस्त जोडी,
लघुता सजी माननी टेव मोडी. ॥ १ ॥
भवांभोधिथी सत्य छो तारनारा,
महा दानना सत्य छो आपनारा;
कृपानाथ कोटी गमे कष्ट वारी,
लीधो नाथ तें दुःखथी तो उगारी. ॥ २ ॥
सदा एक आधार छे तुंहि मारे,
कृपानाथ तुं शिष्यनुं भव्य धारे;
अहो सद्गुरु देव तुं उपकारी,
नमुं नाथ देजो मुदा शीख सारी. ॥ ३ ॥

श्री सद्गुरुकृपामहिमा.

भुजंगी छन्दः

सुणो शिष्य सारा कहुं प्रेम लावी,
धरो भव्य शिक्षा सुख वृन्द चावी;

गुरुज्ञानने दीलमांही उतारो,
गुरु ज्ञानथी आवशे दुःखआरो. ॥ १ ॥
गुरुभक्तिमां प्रेमथी चित्त जोडो,
विवेके वहु दुर्गुणोने उखेडो;
गुरुदर्शने दुःख सर्वे टळे छे,
गुरुवंदने भाग्य वेळा वळे छे. ॥ २ ॥
गुरुनी दयाथी टळे कष्ट कोडी,
रहे अष्टसिद्धि सदा हस्त जोडी;
गुरुनी कृपाथी मही मान पामे,
गुरुनी कृपाथी ठरे एक ठामे. ॥ ३ ॥
विनेयो विचारी ग्रहो सत्य साचुं,
ग्रहो ना कदा दुःखदायीज काचुं;
भलामां सदा राखशो र्‌हेम दृष्टि,
सदा जागशे र्‌हेमथी आत्मसृष्टि. ॥ ४ ॥
प्रमादे न पापो करो भव्य प्यारा,
प्रमादे न सारा कदी तो थनारा;
गुरुपाद सेव्या थकी ज्ञान थाशे,
गुरुज्ञानथी राग ने द्वेष जाशे. ॥ ५ ॥
कुतर्को तजीने गुरुने भजीने,
लहो सिद्धनां शर्म शान्ता सजीने;
गुरुवाक्यमां शिष्यने शर्म साचुं,
गुरुनी कृपावीण छे सर्व काचुं. ॥ ६ ॥
सजी सद्गुणोने रहो नित्य राची,
कही शीख ते मानजो दील साची;
अहो धीनिधि सद्गुरु तारनारा,
विचारी विनेयो ग्रहो दील प्यारा.

देवसेवा.

भुजंगी छन्दः

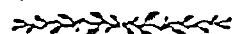
बाने चित्तडुं निर्मळुं धर्मवाळुं,
टळे मोह वासीत जे चित्त काळुं;
ग्रहेथी मळे दीलमां शर्म मेवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ १ ॥
सदा राग ने द्वेष विहीन देवा,
करो सिद्ध सर्वज्ञनी सत्य सेवा;
भजे जेहने सर्व नासे कुटेवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ २ ॥
सदा ज्ञानथी सत्यनो जेह वादी,
कँर्यां तत्त्व साचां सदा जे अनादि
अहो वीर सर्वज्ञ छे देव तेवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ ३ ॥
नहीं शस्त्र हस्ते नहीं संग रामा,
कहे धीनिधि वीत छे लोभ कामा;
अहो जेहमां केवलज्ञान दीवो,
अहो देव एवो सदा भव्य सेवो. ॥ ४ ॥

आत्माने उपदेश.

भुजंगी छन्द.

अरे आतमा चित्तमां जो विचारी,
धरी जन्मने दुर्मति शुं वधारी,
मनुष्य कर्यो धर्म चित्ते न धार्यो,
प्रमादी अरे काळ तें फोक हार्यो. ॥ १ ॥

अहंभावमां मस्त ज्यां त्यां फरे छे,
कूडां कर्मने केम जाणी करे छे,
अरे मोहना तोरमां केम माच्यो,
रूपाळा रमारंगमां शीद राच्यो. ॥ २ ॥
अरे ठाठने माठमां सर्व खोयुं,
विचारी कदी रूप तारुं न जोयुं,
खरे मोहनी धूळथी मुख धोयुं,
अरे जीव तें पाणीने शुं वलोयुं. ॥ ३ ॥
कदी सन्तने दान दीधुं न हाथे,
धरी ना कदी सद्गुरुआण माथे,
कर्यो धर्म ते आवशे एक साथे,
जिनेन्द्रे कॅयुं ज्ञानथी वीरनाथे. ॥ ४ ॥
भॅण्यो ना गॅण्यो धर्मनां तत्त्व सारां,
भॅण्यो ने गॅण्यो तत्त्व जे छे नठारां,
जिनेन्द्रे कहेलुं अरे तें विसार्युं,
फसी मोहमां आयुने फोक हार्युं. ॥ ५ ॥
हवे चेती ले आतमा धर्म जाणी,
गुरु बोधथी जाणी ले जिनवाणी,
कहे धीनीधि धर्मथी शर्म खाणी,
तृपावंतने इष्ट छे जेम पाणी. ॥ ६ ॥



हित वचनामृतम्.

भुजंगी छन्द.

महीमां सदा अंध छे मूढ प्राणी,
महीमां सदा पूज्य छे सत्यवाणी;

महीमां सदा धैर्य धारीज मोटो,
विचार्या विना मानवी थाय छोटो. ॥ १ ॥
कुडा वाक्यमां क्लेश छे दुःखदायी,
भला कार्यमां शान्ति छे शर्मदायी;
अरे हास्यथी दुःख मोटुं थनारुं,
महीमां सदा इष्ट छे वाक्य सारुं. ॥ २ ॥
बुरी कामनाथी कयुं विष मोटुं,
असद्‌वाक्यथी कोण छे जाण खोटुं;
सदा मूर्खनी संगते दुःखगोटा,
दयाना विना आवशे जीव तोटा. ॥ ३ ॥
गुरुवाक्यना लोपथी दुःख भारी,
नथी सन्मतिना विना सत्य यारी;
अरे क्रोधथी अग्नि छे कोण भूंडी,
बुरी कोण तृष्णाथकी अन्य लूंडी. ॥ ४ ॥
नथी शर्म संतोष जेवुं विचारो,
विवेक ग्रहो देहथी ब्रह्म न्यारो;
सहु तीर्थनुं तीर्थ छे आतमा रे,
विवेकी मुदा आतमानेज तारे. ॥ ५ ॥
कळामां कळा धर्मनी एक साची,
कळामां कळा कर्मनी सर्व काची;
कथामां कथा धर्मनी दुःख टाळे,
जुठी मोहनी देवने नेह टाळे. ॥ ६ ॥
सहु वित्तथी ज्ञाननुं वित्त साचुं,
कुडां वेण बोले गुरु तास डाचुं;
करे साधना धर्मनी तेह साचुं,

अहो ढोंगी लोके जगत् फोली खाधुं. ॥ ७ ॥
खरुं ज्ञान ने भक्ति ते विश्व डाह्यो;
धर्यो धर्म ते विश्वमांहि कमायो,
खरो भक्त के शूर दाता गवायो;
खरो शिष्य ते ज्ञानिनो भेद पायो. ॥ ८ ॥
खरी सद्गुरु सेवना दुर्लभा छे,
सहु ज्योतमां श्रेष्ठ ज्ञानप्रभा छे;
सदा उच्च ने पूज्य छे विश्वज्ञानी,
सदा नीच छे विश्वमां दुष्ट मानी. ॥ ९ ॥
सहु मानवी वश्य छे नम्रताथी;
सदा सुख छे विश्वमां शांतताथी.
कहे धीनिधि ज्ञानथी मुक्ति पामे;
जीवो तो ठरे ज्ञानथी एक ठामे. ॥ १० ॥

मूर्ख संगति दुःखरूप छे.

भुजंगी छन्दः

कदी ना करो संगति मूर्ख बूरी,
अहो संगति मूर्खनी दुःख छूरी;
सदा मूर्खनी संगमां दुःख छाया,
अहो मूर्खनी संगमां कोण डाह्या. ॥ १ ॥
वने वास सारो कह्यो सत्य ग्रन्थे,
लही शीख सारी चलो शुद्ध पन्थे;
खरी वातमां मूर्खतो दाट वाळे,
लडे वातमां लातथी मूर्ख गाळे. ॥ २ ॥
महा मूर्खनी वातमां सार काचो,

कहे धीनिधि मूर्खनी संग वारो,
यदि शत्रु छे विज्ञ जाणोज सारो. ॥ ९ ॥

धर्म फल महिमा.

भुजंगी छंद.

रुडा धर्मथी सर्व शांति थनारी,
रुडा धर्थथी सर्व भ्रान्ति जनारी;
रुडा धर्मथी कर्मनो अंत आवे,
रुडा धर्मथी स्वर्ग सिद्धि सुहावे. ॥ १ ॥
रुडा धर्मथी विश्वमां उच्च थावे,
रुडा धर्मथी पापनो लेश नावे;
रुडा धर्मथी लोकमां मान मोटुं,
रुडा धर्मथी थाय ना कांइ खोटुं. ॥ २ ॥
रुडा धर्मथी दुर्गति दूःख नासे,
रुडा धर्मथी ज्ञान साचुं प्रकाशे;
रुडा धर्मथी रागने द्वेष दूरे,
रुडा धर्मथी सन्मति दीलॅ स्फुरे. ॥ ३ ॥
रुडा धर्मथी संकटो दूर जावे,
रुडा धर्मथी देवता स्तोत्र गावे,
रुडा धर्मथी शत्रुओ मित्र होवे,
रुडा धर्मथी स्वर्गनां शर्म जोवे. ॥ ४ ॥
रुडा धर्मथी होय ज्यां त्यां रुपाळुं,
रुडा धर्मथी दुःख तो जाय काळुं

चिदानंदनी लहरियो चित्त वासे. ॥ ४ ॥
खरा ईश देवेश दातार सेवा,
अमारे सदा मोक्षना एज मेवा;
प्रभुध्यानथी प्रेमनो भेद पायो,
प्रभुप्रेमथी सत्य आनंद आयो. ॥ ५ ॥
सदा सेवना देव म्हारी भली छे,
प्रभुप्रेममां चित्तवृत्ति ढळी छे;
प्रभुप्रेममां शांतिनिधि विरमुं छुं,
सदा हस्त जोडी प्रभु हुं नमुं छुं. ॥ ६ ॥

अन्तरप्रदेशध्वनिगान.

गझल.

जगत्ने आंखथी देखुं, जगत्ने ज्ञानथी लेखुं,
जगत्ने देखतां शान्ति, जगत्ने देखतां भ्रान्ति. ॥ १ ॥
जगत्ने देखतां जोगी, जगत्ने देखतां भोगी,
जगत् तो देखतां साचुं, जगत्तो देखतां काचुं. ॥ २ ॥
जगत्ना भाव छे खोटा, जगत्ना भाव छे मोटा.
जगत्मां प्रेमनी वीणा, जगत्ना भाव छे झीणा. ॥ ३ ॥
जगत् छे दुःखनी छाया, जगत्मां कर्मथी काया,
जगत्ना खेल खेलाडुं, जगत्मां तत्वना लाडु. ॥ ४ ॥
जगत्मां मोहनी बाजी; जगत्मां मूढ छे राजी,
जगत्ना जोपमां दोषो, जगत्मां कोणने रोशो. ॥ ५ ॥
जगत्मां राग ने द्वेषो, जगत्मां प्रेम ने क्लेशो,
जगत्मां कोण छे मोटा, जगत्मां कोण छे छोटा. ॥ ६ ॥

जगत्‌ने जाणता योगी, जगत्‌मां मूढ छे भोगी,
जगत्‌मां मोहथी मारु, जगत्‌मां मोहथी तारु. ॥ ७ ॥
जगत्‌मां धर्म छे साचो, जगत्‌मां मोह छे काचो,
जगत्‌मां मोहथी फेरा, जगत्‌मां मोह अन्धेरा. ॥ ८ ॥
जगत्‌मां मूर्ख छे मेला, जगत्‌मां मूढ छे घेला,
जगत्‌मां ज्ञान ने गांडा, जगत्‌मां धर्मि ने वांडा. ॥ ९ ॥
जगत्‌ना प्रेममां फांसी, जगत्‌ना प्रेममां हांसी,
जगत्‌ना क्लेशथी काढु, जगत्‌ने ज्ञानथी भाळु. ॥ १० ॥
जगत्‌मां झेरना प्याला, जगत्‌मां उंघता वाला.
जगत्‌मां जागता सुखी, जगत्‌मां उंघता दुःखी, ॥ ११ ॥
जगत्‌मां प्रेमना मेळा, जगत्‌मां पुण्यनी वेळा,
जगत्‌मां सत्यना तोटा, जगत्‌मां मोहना गोटा. ॥ १२ ॥
जगत्‌मां धर्मना ग्रंथो, जगत्‌मां मोक्षना पंथो,
जगत्‌मां बंध ने मुक्ति, जगत्‌मां ज्ञानथी युक्ति. ॥ १३ ॥
जगत्‌मां भूख छे भूंडी, जगत्‌मां आश छे लूंडी.
जगत्‌ना धर्म भूंडा छे. जगत्‌ना धर्म कूडा छे. ॥ १४ ॥
जगत्‌मां सन्तनी सेवा, जगत्‌मां सत्य छे देवा.
जगत्‌मां धर्म छे छानो, जगत्‌मां धर्म छे मानो. ॥ १५ ॥
जगत्‌मां पुण्य ने पापो, जगत्‌मां धर्मनी छापो,
जगत्‌ने जाणवु न्यारु, जगत्‌ने जाणवुं प्यारु. ॥ १६ ॥
जगत्‌मां साच छे मारु, जगत्‌मां धर्म अंधारु,
जगत्‌मां आत्म छे दीवो, जगत्‌मां ज्ञानथी जीवो. ॥ १७ ॥
जगत्‌मां रंक ने राजा, जगत्‌मां पीर ने ख्वाजा,
जगत्‌ने जाणतां प्यारु, जगत्‌ने जाणतां न्यारु. ॥ १८ ॥
जगत्‌मां ज्ञानथी रहेवुं, जगत्‌मां दुःख सहु सहेवुं,

[illegible] ॥ १५ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥

प्रभुप्रेमलक्षणानो उद्गार.

[illegible].

मस्तको प्रेमथी भक्ति, मस्तको प्रेमथी शक्तिः
मस्तको प्रेमथी विद्या, मस्तको प्रेमथी सेवा. ॥ १ ॥
प्रभुना प्रेमथी शान्ति, प्रभुना प्रेमथी कान्तिः
प्रभुमां प्रेम नो [illegible], प्रभुना प्रेमथी [illegible]. ॥ २ ॥
प्रभुने प्रेमथी वन्दुं, प्रभुमां प्रेमथी रमुं;
प्रभुना प्रेमथी जोगी, प्रभुमां प्रेमथी भोगी. ॥ ३ ॥
प्रभुमां प्रेमथी राचुं, प्रभुमां प्रेमथी माचुं:
प्रभुमां प्रेम जो जागे, प्रभुनो दोष सहु भागे. ॥ ४ ॥
प्रभुमां प्रेमथी शूरो, प्रभुमां प्रेम नव दूरो;
प्रभुने जाणतां प्रेमी, प्रभुने जाणतां क्षेमी. ॥ ५ ॥
प्रभुमां प्रेमथी रमवुं, प्रभुमां प्रेमथी भमवुं;
प्रभुने पूजीए प्रेम, प्रभुने पूजीए नेम. ॥ ६ ॥
प्रभुमां प्रेमथी सिद्धि, प्रभुमां प्रेमथी ऋद्धिः
प्रभु छे सर्व तीर्थेशो, पूजनथी आप छे [illegible]. ॥ ७ ॥
प्रभु आ आतमा साचो, सदा त्यां प्रेमथी राचो:
प्रभुनी सत्य छे यारी, समज नुं दीलमां धारी. ॥ ८ ॥
प्रभु सम सर्वने भाळुं, सदा छे दील अजवाळुं:
प्रभु सम सर्वने जाणुं, दिलें जब संग्रहनय आणुं. ॥ ९ ॥

देहस्थआत्मानी परमात्मावस्थानुं भान.

गजल.

अहो आ देहमां देखो, चेतनजी ज्ञान धन पेखो;
अरूपी तत्त्व छे पोते, अरे तुं बाह्य क्यां गोते. ॥ १ ॥
अनंति शक्तिनो स्वामी, निःसंगी शुद्ध निष्कामी;
सहु देखे सहु जाणे, अनंतां सुख दील माणे. ॥ २ ॥
परमब्रह्म स्वयं शुद्ध, परमयोगी परम बुद्ध;
परमध्याता परमध्येय, परम ज्ञाता परम ज्ञेय. ॥ ३ ॥
परमयोगी परमभोगी, विगतशोकी विगतरोगी;
अखंडानंद अविनाशी, परम पद शुद्ध विश्वासी. ॥ ४ ॥
परमभ्राता परम त्राता, परम नेता परम दाता;
परानो पार जे पावे, योगीश्वर चित्तमां ध्यावे. ॥ ५ ॥
प्रकाशे सर्वने तेजे, रमे जे ब्रह्ममां स्हेजे;
अनित्य नित्य छे हीरो, रमे छे ध्यानमां धीरो. ॥ ६ ॥
प्रकाशे पिंडमां पोते, अनंती ज्ञाननी ज्योते;
बुद्धयब्धि ध्यान पोतानुं, करीने देखीए भानु. ॥ ७ ॥

समय शिक्षाना उद्गार.

गझल.

जगत्ने स्हेमथी देखो, जगत्ने प्रेमथी पेखो;
जगत्मां देखवा ग्रन्थो, जगत्मां धर्मना पन्थो. ॥ १ ॥
जगत्मां जाणवुं सारु, जगत्मां त्यागवुं खारु;
जगत्मां सत्य शोधी ले, जगत्मां सत्य बोधी ले. ॥ २ ॥
जगत्मां दान देवानुं, जगत्मां ज्ञान लेवानुं;
जगत्मां सत्यनु वारु, जगत्मां मोह अंधारु. ॥ ३ ॥

जगत्मां क्लेशथी वैरी, जगत्मां क्लेश छे झेरी;
जगत्मां क्लेश करनारो, सदा ते दुःख धरनारो. ॥ ४ ॥
जगत्मां क्लेश छे पापी, जगत्मां क्लेश छे व्यापि;
जगत्मां क्लेशथी भूडुं, कदा नहि क्लेशथी रुडुं. ॥ ५ ॥
जगत्मां युद्ध छे क्लेशे, जगत्मां क्लेश छे द्वेषे;
महा छे क्लेश खारीलो, थतो तो क्लेश वारी ल्यो. ॥ ६ ॥
बने छे क्लेशथी खोटो, बने छे क्लेशथी गोटो;
दीले तो क्लेश छे दारु, कदी नहि क्लेशथी सारु. ॥ ७ ॥
मळे नहि क्लेशथी पाणी, करे छे क्लेश धूळ धाणी;
कुटुंबो क्लेशथी भागे, नगारां दुःखनां वागे. ॥ ८ ॥
करेलां पुण्य तो नासे, हृदयमां क्लेशना वासे;
करो नहि क्लेशथी यारी, समज आ दीलमां धारी. ॥ ९ ॥
बुरामां क्लेश छे बूरो, बूरामां क्लेश छे शूरो;
बुद्ध्यब्धि क्लेशने वारी, सदा सुसंप दील धारो. ॥ १० ॥

मल्लिजिन स्तुति.

गझल.

मल्लिजिन देवना देवा, भली छे सत्य तुज सेवा;
तमारा रूपमां राचुं, सदा छे रूप तुज साचुं. ॥ १ ॥
अहो इश देवतुं प्यारो, जगत्मां सत्य तुं सारो;
तमारी भक्तिमां भळशु, तमारी भक्तिमां हळशु. ॥ २ ॥
तमारी तेज मारी छे, हृदयमां वात धारी छे;
तमारी भक्ति छे प्यारी, अखंडानंद गुण क्यारी. ॥ ३ ॥
प्रभु तव बाळ छे छोटो, करोने रहेमथी मोटो;
कपटना फंदने कापो, सदा सुख सिद्धनां आपो. ॥ ४ ॥

सुसंपे वित्ततो आवे, सुसंपे दीनता जावे,
सुसंपे धर्मने थापे, सुसंपे क्लेशने कापे. ॥ ९ ॥
सदा सुसंपमां रहेवुं, कोइने दुःख नहि देवुं.
बुद्ध्यब्धि संप बलिहारी, अमारे संपथी यारी. ॥ १० ॥

चिदानंदोद्गार.

गझल.

हमारे एक छे देवा, हमारे प्रेमथी सेवा;
हमारे प्रेमथी मळवुं, हमारे प्रेमथी हळवुं. ॥ १ ॥
जगत्मां प्रेमथी रहेवुं जगत्मां प्रेमथी कहेवुं;
जगत्मां प्रेम मोटो छे, जगत्नो प्रेम खोटो छे. ॥ २ ॥
खरेखर प्रेमथी योगी, अखंडानंदना भोगी;
प्रभुने प्रेमथी गावा, प्रभुना प्रेमथी चावा. ॥ ३ ॥
हमोए सत्यने शोध्युं, हमोए सत्यने बोध्युं;
जीवोपर रहेमनी दृष्टि, खरेखर धर्मनी वृष्टि. ॥ ४ ॥
जगत्मां कर्मथी जीवो, करे छे दुःखथी रीवो;
करुणा तेहपर करशुं, खरेखर रहेमथी तरशुं. ॥ ५ ॥
करीशुं सर्वनुं सारु, धर्याविण रहेम अंधारुं;
करुणा धर्म धन हेली, हमारे दील वरसेली. ॥ ६ ॥
हमारे आत्मवत् सर्वे, सरीखा जीव शुं गर्वे;
लघुने मोटका प्यारा, जीवो छे ज्ञानघन सारा. ॥ ७ ॥
कदी नहि वेर को साथे, धरु नहि शस्त्र मुज हाथे;
मळो सहु जीवने सुखो, टळो सहु जीवनां दुःखो. ॥८॥
हमारे आत्मनी प्रीति, धरी में आत्मनी नीति;
जगत्मां जागता तरवुं, जगत्मां ब्रह्मपद वरवुं. ॥ ९ ॥

जगत् सहु स्वार्थनुं रागी, अहो कोइ स्वार्थनुं त्यागी,
बुद्ध्यब्धि स्वार्थने त्यागो, हृदयमां ज्ञानथी जागो. ॥११॥

असार दुनिया सज्झाय.

(श्रीरे सिद्धाचल भेटवा ए राग.)

जगमां कोइ न कोइनुं, जूठ सगपण बाजी,
मारु-मारु त्यां मानीने, केम रहेवुं राची. जगमां. ॥ १ ॥
स्वारथिया संसारमां, जीव नाचे छे कर्मे,
साथ न कांइ आवतुं, वाळ दीलडुं धर्मे. जगमां. ॥ २ ॥
अज्ञाने जीव आंधळो, शुद्ध धर्म न देखे,
विषय वासना नाचमां, पुण्य पाप न लेखे. जगमां. ॥ ३ ॥
गद्धावैतरु बहु करे, मोहमाया भरेलो,
पापनी पोठी बांधीने, जाय नरके एकीलो; जगमां. ॥ ४ ॥
आज काल करतां थकां, वीती आयुष्य जावे,
धर्म कर्म बे साथमां, अंते परभव आवे. जगमां. ॥ ५ ॥
चेत चेत अरे जीवडा, त्याग दुनिया बाजी,
बुद्धिसागर धर्मथी, रहेजे निशदिन राजी. जगमां. ॥ ६ ॥

घडीमां नव नवा रंग.

गझल.

घडीमां सुख आवे छे, घडीमां दुःख थावे छे,
घडीमां चित्त चकडोळे, घडीमां तत्त्वने खोळे. ॥ १ ॥
घडीमां ज्ञाननी वातो, घडीमां शोक नहि मातो,
घडीमां प्रेमना प्याला, घडीमां शोकनी ज्वाला. ॥ २ ॥

चेत चेत अरे जीवडा, सत्य धर्मनुं टाणुं;
बुद्धिसागर धर्मनुं, एक शरणुं मजानुं. माया. ॥ ३ ॥

अन्तर्वृत्ति स्वाध्याय.

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा-एराग.

शुद्ध रमणता आदरो, थाओ निजगुण भोगी;
बाह्यदशा चित्त वारीने, थाओ सहजोपयोगी. शुद्ध. ॥१॥
परमानंद स्वभाव छे, शुद्ध चेतन द्रव्य;
सोहं सोहं ध्यानथी, सेवना कर भव्य. शुद्ध. ॥ २ ॥
नवधा भक्ति जे आत्मनी, करशे ते तरशे;
रत्नत्रयीनी लक्ष्मीने, वेगे ते हि वरशे. शुद्ध. ॥ ३ ॥
निश्चय भावदशा भजी, चेतन थाय सुखी;
अनुभवामृत पीवतां, कदी थाय न दुःखी. शुद्ध. ॥ ४ ॥
बाह्यदशा व्यवहारथी, भटके जीव भारी;
अप्रमत्त दशा विना, जाय उम्मर हारी. शुद्ध. ॥ ५ ॥
शाब्दिक तार्किक पंडितो, बाह्यझघडे राता;
चउद पूर्वी प्रमादथी, भवोभव भटकाता. शुद्ध. ॥ ६ ॥
शुद्ध रमणता प्रीतडी, निश्चय सत्य मानी;
बुद्धिसागर बोधथी, वात कोइ न छानी. शुद्ध. ॥ ७ ॥

कपटमाहिमा.

गजल.

कपटना फंद छे काळा, कपटना चित्र छे चाळा;
कपटथी कर्म छे कूडुं, कपटथी थाय नहि रुडुं. ॥ १ ॥
कपटमां कर्मना दरिया, कपटथी कोइ नहि तरिया;

खरेखर आत्मनो ज्ञानी, खरेखर आत्मनी वाणी;
खरेखर आत्मनी ज्योति, ग्रहीलो पिंडमां मोति. ॥ ३ ॥
खरेखर आत्ममां रमवुं, खरेखर बाह्य नहि भमवुं;
खरेखर आत्ममां प्रीति; खरेखर आत्मवण भीति. ॥ ४ ॥
खरेखर आत्मना रागी, खरेखर ज्ञानथी त्यागी;
बुद्ध्यब्धि आत्मना ज्ञाने, पडे नहि जीव अज्ञाने. ॥ ५ ॥

पुण्यने पापनो फेर.

गझल.

जगत्मां पुण्यथी चढती, जगत्मां पापथी पडती;
जगत्मां पुण्यथी लीला, जगत्मां पापथी खीला. ॥ १ ॥
चहे ते पुण्यथी मळतुं, चहे ते पापथी टळतुं;
बुद्ध्यब्धि सत्यमां रहेवुं, हमारे सत्यने कहेवुं. ॥ २ ॥

धर्म अने पापनो फेर.

गझल.

जगत्मां धर्मथी सुखी, जगत्मां पापथी दुःखी;
जगत्मां धर्मथी शान्ति, जगत्मां पापथी भ्रान्ति. ॥ १ ॥
जगत्मां धर्मथी उंचा, जगत्मां पापथी नीचा;
जगत्मां धर्मथी साचो, जगत्मां पापथी काचो. ॥ २ ॥
जगत्मां धर्मथी भोगी, जगत्मां पापथी रोगी;
जगत्मां धर्मथी ज्ञानी, जगत्मां पापथी मानी. ॥ ३ ॥
जगत्मां धर्मथी तरतो, जगत्मां पापथी फरतो;
जगत्मां धर्मथी रुडा, जगत्मां पापथी भूंडा. ॥ ४ ॥

समय हितोपदेश.

गझल.

गरज छे सर्वथी वहेली, फरज छे सर्वथी पहेली
सुधारो सर्वथी सारो, कुधारो सर्वथी खारो. ॥ १ ॥
भलामां सत्यना पन्थो, भलामां सत्य छे ग्रन्थो;
बुरामां दुर्जनो दोडे, प्रभुमां भक्त मन जोडे. ॥ २ ॥
गुरुनी भक्तिमां शक्ति, अखंडानंदनी व्यक्ति;
समयना जाण छे मोटा, समयना अज्ञ छे छोटा. ॥ ३ ॥
दयानी सत्य छे करणी, दया छे मोक्ष निःसरणी;
समजशो ज्ञानथी मुक्ति, समजशो ज्ञानथी युक्ति. ॥ ४ ॥
दया छे ज्ञानीनी हाथे, क्रिया छे ज्ञानिनी साथे;
दयामां चित्त रंगाशे, तदातो मुक्ति झट थाशे. ॥ ५ ॥
दया छे निर्मली गंगा, दयाथी दील छे चंगा;
दयाथी देवता पासे, दयाथी संकटो नासे. ॥ ६ ॥
परखजो धर्मनुं नाणुं, परखजो धर्मनु टाणुं;
विचार्या वीन ना बोलो, समय वण तत्त्व ना खोलो. ॥७॥
प्रभुने ज्ञानथी परखो, हृदयमां हेतथी हरखो;
बुद्ध्यब्धि सन्तनी सेवा, अमारे शुद्ध ए मेवा. ॥ ८ ॥

चित्तमां चेत.

गझल.

जीवलडा चित्तमां चेतो, झपाटो काळ तो देतो;
अरे तु जागने घटमां, पडे शुं भव्य खटपटमां. ॥ १ ॥
जुए शुं मानवी भोळा, फरे छे मृत्युना डोळा;

विचारो वात आ वेहेली, वखत तो आवशे छेल्ली. ॥ २ ॥
जीवलडा चित्तमां जागो, कपटना फन्दने त्यागो;
भणीने भूल जो थाशे, तदा तो खूब पस्ताशे. ॥ ३ ॥
जगत्मां दुःख छे भारी, जगत् छे दुःखनी क्यारी;
विचारी धर्मने धारो, फोगट नहि जन्मने हारो. ॥ ४ ॥
करे शुं कल्पना कोटी, विषयनी वात छे खोटी;
जगत्मां संपथी चालो, जगत्मां संपथी म्हालो. ॥ ५ ॥
खरे जीव जाय छे आयु, खबर नहि थाय शो वायु;
विचारी चेती ले व्हाला, करे शुं आल पंपाला. ॥ ६ ॥
चलक तुं चेतन ज्ञानी, निरंजन नित्य सुख खाणी;
बुद्ध्यब्धि धारजे सोऽहं, हृदयमां भावजे कोऽहं. ॥ ७ ॥

कामविषयस्वरूप.

गज़ल.

विषयनी वात भूंडी छे, विषयनी वात कुडी छे,
विषयनो वेग छे तेजी, विषयथी लाज नहीं छेजी. ॥ १ ॥
विषयमां चित्तडुं दोडे, चडेलो स्वार ज्युं घोडे,
विषयथी चित्त भटके छे, विषयथी चित्त सटके छे. ॥ २ ॥
विषयथी जूठनी वाणी, विषयथी दोषनी ख्याणी,
विषयथी पाप आवे छे, विषयथी धर्म जावे छे. ॥ ३ ॥
विषय छे दुःखकर हस्ति, करे छे खूब ते मस्ति,
विषय छे विषना प्याला, विषयथी सर्व छे चाला. ॥ ४ ॥
विषयमां दुःखनी श्रेणि, विषयमां दुःखनी रेणी,
विषयथी थाय धूळ धाणी, मळे नहि अन्नने पाणी. ॥ ५ ॥

विषयथी लाजने मूके, विषयथी कीर्तिने चूके,
विषय छे मोहनी वाडी, विषय छे क्लेशनी खाडी. ॥ ६ ॥
विषयनो कूप छे उंडो, विषयनो धूप छे भुंडो,
विषयनी घेन छे गांडी, विषयनी बुद्धि छे आडी. ॥ ७ ॥
विषयमां व्हाल छे खोटुं, विषयथी कोइ नहि मोटुं,
विषयनुं वृक्ष कांटाळुं, विषयमां दुःखने भाळुं. ॥ ८ ॥
विषयनो संग छे पापी, विषयथी सुख शिर व्यापी,
विषयथी दुःखना दरिया, विषयथी कोइ ना तरिया. ॥ ९ ॥
विषयनी वात छे घेहली, विषयथी दुःखनी हेली,
विषयना संगने त्यागो, बुद्ध्यब्धि दीलमां जागो. ॥ १० ॥

विवेक.

गझल.

विवेके सत्य परखातुं, विवेके दुःख सहु जातुं;
विवेके सद्य छे मुक्ति, विवेके सद्य छे युक्ति. ॥ १ ॥
विवेके जाणीए टाणुं, विवेके जाणीए नाणुं;
विवेके ब्रह्म रस चाखे, विवेके सत्यने राखे. ॥ २ ॥
विवेके थाय छे शान्ति, विवेके जाय छे भ्रान्ति;
विवेके सत्यने परखो, नही को तेहना सरखो. ॥ ३ ॥
विवेके सत्य छे मीठुं, विवेके तत्त्वने दीठुं;
विवेके धर्मने पाळे, विवेके पापने खाळे. ॥ ४ ॥
विवेके मूढता नासे, विवेके ब्रह्म तो भासे;
विवेके जात छे उंची, विवेके ज्ञाननी कुंची. ॥ ५ ॥
विवेके मानवी सारो, विवेके मानवी प्यारो;
विवेके दुःखडां जावे, विवेके शर्मने पावे. ॥ ६ ॥

क्षमामहत्ता.

छप्पयछंद.

क्षमा सकल गुणखाण क्षमाथी क्रोध समातो;
क्षमा दयानुं मूळ क्षमाथी सन्त कहातो,
क्षमा मुनिमां वेश क्षमाथी जगमां शोभे.
क्षमा असि धरी हस्त वैरने क्षणमां थोभे,
क्षमा विनानुं मानवी अरे शोभतुं ते नही कदी;
बुद्धिसागर जल विना जेम शोभती जेवी नदी. ॥ १ ॥
क्षमा विना शो सन्त क्षमावण मोटो शानो,
क्षमाविना शी नार क्षमागुण सत्य मजानो;
क्षमाविना शो शिष्य रीसथी जे दिल भरियो.
भवसागरने क्षमाविना नहि को जन तरियो,
क्षमा हृदयमां जेहने छे तेज मोटो जाणीए;
बुद्धिसागर सन्तपुरुषो क्षमा हृदयमां आणीए. ॥ २ ॥
तप जप करणी फोक क्षमावण ग्रन्थे दाखी,
क्रोध कर्याथी संयम गुणनी लघुता भाखी;
धर्म क्षमा छे सत्य राचशो तेमां भव्यो.
दीलमां क्षमा उतारी करशो सहु कर्त्तव्यो;
धनसत्ताना तोरथी अहो क्षमा हृदयथी जाय छे;
सत्समागम ज्ञानथी अहो क्षमा हृदय प्रगटाय छे. ॥३॥
दयातणो ज्यां वास क्षमा त्यां स्हेजे आवे,
दया दिल नहि लेश क्षमा ते क्यांथी पावे;
नहि ज्यां चेतन ज्ञान क्षमा त्यां क्यांथी रहेवे.
ज्ञानी गुणभंडार क्षमानां वचनो कहेवे,

दया क्षमा बे साथ छे ते समजशो दील मानवी;
चंद्र त्यां उद्योत वळी परकाश त्यां होवे रवि. ॥ ४ ॥
तजी क्षमाने मुनिवर क्रोधे नीचा पडिया,
क्षमा धरीने नीचजनो पण स्वर्गे चडिया;
क्षमा विना शुं तेज समावण छे अंधारुं.
क्षण क्षण मांहि क्रोध करे त्यां कदी न सारुं,
पगथीयुं छे मोक्षनुं शुभ क्षमा सदा सुखकार छे;
बुद्धिसागर क्षमा धर्याथी धन्य धन्य अवतार छे. ॥५॥

लोभस्वरुप

छप्पयछंद.

लोभतणो नहि थोभ लोभथी कुमति जागे,
लोभे लक्षण जाय लोभथी लज्जा त्यागे;
लोभे हिंसक थाय, लोभथी जुटुं बोले.
लोभे चोरी थाय, लोभथी कुडुं तोले,
लोभे पापो सहु करेछे. लोभे जन ज्यां त्यां फरे;
बुद्धिसागर लोभथी नीच रंकने पण करगरे. ॥ १ ॥
लोभे छे अन्याय, लोभथी समता नासे,
लोभे शान्ति दूर, लोभथी दया न पासे;
लोभे नहि परमार्थ, लोभथी सत्य न धारे.
लोभे प्राणी तात भ्रातने रहेजे मारे;
लोभ अहो आ जग विषे सहु, महा पाप शिरदार छे,
बुद्धिसागर लोभ नहि जस धन्य तस अवतार छे. ॥२॥
लोभे मीटुं वेन, लोभथी भुंडी बुद्धि,
लोभे कुसुम होय लोभथी कदी न शुद्धि;

लोभे तृष्णा वेर झेरने मनमां कानी.
लोभे जन कुटाय, लोभथी धर्मो न जाती.
लोभे लालच लागणी छे, लोभे तो सन्मति हणी;
लोभे ईश्वर वेगलो छे, मुआ पछी को नहि धणी. ॥ ३ ॥
लोभे व्यसनो होय, लोभथी पापो पूरां,
लोभे छे चंडाळ, लोभथी पापे शूरां;
लोभे मनडुं क्रूर, लोभथी चित्त न चंगा,
लोभ त्यजाथी अंतर प्रगटे समता गंगा;
लोभे दुर्मति उपजे सदा, लोभे नरके जाय छे,
बुद्धिसागर लोभथी जीव चतुर्गति भटकाय छे. ॥ ४ ॥
लोभे मूढ मनुष्य, लोभथी कदी न शान्ति,
लोभे कदी न उंघ, लोभथी प्रगटे भ्रान्ति;
लोभे सन्निपात, लोभथी चित्त न ठरतुं,
लोभे नहि आनन्द, चित्तडुं ज्यां त्यां फरतुं;
लोभ अहो महा भूत छे जग, वळग्युं तेहने दुःख छे;
बुद्धिसागर लोभ छंडे, चित्तमां बहु सुख छे. ॥ ५ ॥
उंच नीचने पाय पडे छे, लोभे जाणो;
लोभ मदीरा पेन चढ्याथी होय न शाणो.
लोभे काळो केर, लोभथी होवे फांसी;
लोभे छे अंधेर, लोभथी थाती हांसी.
लोभना बहु भेद छे ने, लोभ ज्यां त्यां खेद छे;
बुद्धिसागर आतमज्ञाने, लोभनो विच्छेद छे. ॥ ६ ॥
लोभ त्यज्याथी धीर वीरने सन्त कहावे;
लोभ त्यज्याथी शास्वत सुखडां स्हेजे पावे.
लोभ तजीने भव्यजनो आतमने तारो,

गुरुशरणथी लघुता दिलमां प्रगटे सारी,
गुरुशरणथी निर्भय थावे नरने नारी;
गुरुशरणथी मानादिक सहु दूरे नासे,
गुरुशरणथी श्रद्धा साची हृदये भासे;
गुरुशरणथी मानवी तो तत्त्व साचुं पामशे,
गुरुशरणथी जगत्मां अहो कीर्त्ति सघळे जामशे. ॥ ४ ॥

गुरुशरणथी संयम शक्ति प्रगटे भारी,
गुरुशरणथी प्रगटे छे समता सुखकारी;
गुरुशरणथी उद्धत्ताइ पहेली नासे,
गुरुशरणथी कदाग्रहादि दूरे जाशे;
गुरुशरणथी संपजे छे, पंचम गति पलवारमां,
सत्य शरणुं सद्गुरुनुं समजशो संसारमां. ॥ ५ ॥

गुरुनी निंदा करी वदनथी केइक पडीया,
गुरुगुण गाइ शिवपुर महेले केइक चडीया;
गुरुनी आणा लोपी पामर केइक भूल्या,
मायादरिये गुरु विना तो केइक झूल्या,
आत्मज्ञान ज्ञाता गुरुनुं शरण सदा सुखकार छे;
गुरुविनये जे नित्य राता सफल तस अवतार छे. ॥६॥

गुरु ज्ञानथी देव इष्ट तो शिष्यो जाणे,
सद्गुरुगमथी भव्य राचशो आतम ज्ञाने;
सद्गुरुगमथी सहु समजाशे धरजो चित्ते.
गुरुविनयथी खुश रहे छे पण नहि वित्ते,
सद्गुरुना जे सेवको ते भवसागर स्हेजे तरे;
बुद्धिसागर गुरुशरणथी सत् संपत् शिष्यो वरे. ॥ ७ ॥

" शोक विषे. "

छप्पयछंद.

शोके अक्कल जाय शोकथी चिन्ता प्रगटे;
शोके तनुने ताप शोकथी शान्ति विघटे,
शोके भूले भान कशुं नहि हाथे आवे;
शोक कर्याथी आर्त्त ध्यान तो स्हेजे थावे.
शोके सूझे नहि कशुं ने शोके मन दुःखाय छे;
जगत्मांही शोकयोगे हर्ष दूर जाय छे. ॥ १ ॥
शोके नासे प्रेम शोकथी प्रगटे भ्रान्ति
शोके तनुमां रोग बगडती तनुनी कान्ति;
शोके स्थिरता नाश शोकथी जीवन बगडे;
बंध पडे छे कर्म शोकथी वर्ते झघडे.
शोकसागर जे पडया ते चतुर्गतिमां रडवडया;
अशुभध्याने पुष्ट थइने केइक लाखो लडथडया. ॥२॥
शोके अश्रुधार शोकथी हिम्मत नासे,
शोके शत्रु आप शोकथी ध्यानज नासे;
शोके दीनता दीन शोकथी क्यांय न सारुं,
शोके सन्मति नाश शोकथी होय नठारुं;
शोके धीरज जाय छे अहो शोके मूढ कहाय छे;
बुद्धिसागर समजशो अरे शोकथी दुःख थाय छे. ॥३॥

आळदोष.

छप्पयछंद.

परने देवे आळ बाळ तेनुं मुख भूंडुं;

निन्दा.

छप्पयछंद.

निन्दानो करनार जगत्मां पापी पूरो,
निन्दानो करनार जगत्मां दोषे शूरो;
निन्दानो करनार जगत्मां मोटो पापी,
निन्दानो करनार जगत्मां जूठ विलापी;
नाम देइ निन्दा करे ते जगत्मां चंडाळ छे,
निन्दानो करनार खरेखर जगत्मां विकराळ छे. ॥ १ ॥
परनी लवरी जे जन करतो ते नहि रुडो,
परलवरीमां रक्त जगत्मां सहुथी भूंडो;
इर्ष्याने अभिमान थकी जे निन्दा करतो,
क्रोधथकी निन्दक नर कदीय न ठामे ठरतो;
निन्दा लवरी जे करे जन वदन तेहनुं वाळवुं,
दोषदृष्टि कागडा जन वदन नहि तस भाळवुं. ॥ २ ॥
पर अपवादे भव्य जाणजो मुखडुं दोषी,
कहेतो परना दोष बने छे निज निर्दोषी;
चोथो छे चंडाळ जगत्मां निंदक नागो,
निंदक सहुथी नीच संगथी दूरे भागो;
जबतक दृष्टि दोषनी छे बहु तबतकतो अंधेर छे,
जगत् जीवो जाणजो अरे निंदा मोटुं झेर छे. ॥ ३ ॥
निन्दाथी छे वैर झेरने हिंसा मोटी,
निंदा दुःखनी खाण जगत्मां निन्दा खोटी;
निन्दाना करनार जनोना नहि छे तोटा,
गप्पां मारी जूठ वचनथी वाळे गोटा;
निन्दक नरके जइ पडे अहो दुःख रौरवथी रडे,

ज्ञाने नासे ताप ज्ञानथी प्रगटे शांति,
स्याद्वादनय अपेक्ष ही से ज्ञाने नय प्रकार छे.
बुद्धिसागर ज्ञानी ना पदमांहे पूजाय छे. ॥ २ ॥
ज्ञाने दोष छेद ज्ञानथी साचुं सूझे,
ज्ञाने आतमदेव ज्ञानथी हृदये दरसे.
ज्ञाने कर्म विनाश ज्ञानथी केवलभोगी.
ज्ञाने तप जप ध्यान ज्ञानथी अंतरयोगी.
ज्ञाने शांति आत्मनी बहु प्रगटी निजगुणनी.
ज्ञानपण नहीं ग्रंथ भण्यो समजको संसारनी. ॥ ३ ॥
सम्यग् आत्मज्ञान विना कदी होय न शांति,
आत्मज्ञान विना छे जगमां ज्यां त्यां भ्रांति;
ज्ञानविना नहि ज्ञान ज्ञान पण तत्त्व न पावे,
ज्ञाने उच्च प्रकार ज्ञानपण सौने भावे;
प्रगटे ज्ञानप्रकाश तो घट सर्व शांति संपजे,
आत्मज्ञानी विश्व मोटो सर्वे हृदयने गमे. ॥ ४ ॥
आत्मज्ञाने राग टळे छे द्वेष नासे,
आत्मज्ञाने नवतत्त्वादिक सम्यग् भासे;
आत्मज्ञान त्यां ध्यान कहे छे ज्ञानी गावे,
पण कोइ विरला आत्मज्ञानने दिल पचावे;
अनंत शक्ति आत्मनी तो आत्मज्ञाने जागती.
अशुद्ध परिणति आत्मनी तो आत्मज्ञाने भागती. ॥ ५ ॥
आत्मज्ञानथी भाव चरणमां रस तो लागे,
रंगातो रंग नहीं आत्मज्ञानी जागे;
आत्मानुभवरंगे सुखदा सर्व विकासे.

रागादिकनो कर्ता नेहज शरीर कर्ता;
कर्ता हर्ता एकज पण परिणाम भिदेथी.
निद्रामां जे होय सुतो जाग्रतमां ते छे;
सुत्ते सुतो हुं कहीने जाग्रतमां जे जागतो;
कर्ता हर्ता कर्मनो ते आतम एकज छाजतो. ॥ ३ ॥

कर्ता भोक्ता कर्म तणो आतम अज्ञाने,
देह दृष्टिनो कर्ता हर्ता सुज्ञ वखाणे;
शरीर व्यापक आतम ईश्वर कर्म करे छे,
शरीर व्यापक आतम ईश्वर कर्म हरे छे;
आतम ईश्वर कर्मनो तो बंधकर्ता जाणिये,
शुद्धोपयोगे आत्म ईश्वर कर्महर्ता मानिये. ॥ ४ ॥

कर्माष्टकनो नाश कर्याथी सिद्ध स्वरूपी,
सिद्ध सनातन निर्भय देवी रूपारूपी;
कर्माच्छादन दूर गयाथी अनंत शक्ति,
कर्माच्छादन दूर गयाथी निर्मल व्यक्ति;
कर्म सहित संसार छे ने कर्मरहित भव पार छे;
कर्म टाळे आत्म ध्याने सफल तस अवतार छे. ॥ ५ ॥

रागादिकथी कर्म कर्मथी प्रगटे काया,
पुद्गल रूपे अष्ट कर्म छे नहि पडछाया;
कर्म योगथी रूपी आतम कर्म ग्रहे छे,
स्थिति अनादि काल कर्मने एम लहे छे;
पण विभाविक कर्म छे ते आतमध्याने झट टळे,
बुद्धिसागर ध्यानयोगे चिदानंद मेळो मळे. ॥ ६ ॥

सद्गुरुना सेवकोए सत्य मारग अनुसर्यो. ॥ ४ ॥
विनयवंत ने धीर वीर भक्तिमां शूरा,
गुरुमां साचो प्रेम सदा छे धर्मे पूरा;
गुरुवचने नहि शंक विवेके साचुं परखे,
गुरु आवे के ऊभा थइने मनमां हरखे;
हस्त जोडी प्रेमथी अहो वन्दन करता ते मुदा;
बुद्धिसागर गुरुविनयथी शिष्य ले सुख संपदा.

"दारु विषे"

छप्पयछंद.

दारु छे दुःखकार दारुए दाटज वाळ्यो,
दारु दीनतामूळ दारुथी देशज हार्यो;
दारु दुर्मति मूळ दारुथी जीवनी हानी,
दारु छे महा झेर दारुथी बने तोफानी;
तन धन लक्ष्मी नाशनुं अरे कारण दारु जाणजो;
भूतनो पण भूत दारुज समजु जन पीछानजो ॥ १ ॥
दारुपानी पाप करे छे जगमां भारे,
दारुपानी वेश्या संगे जीवन हारे;
दारुपाने सघळा दोषो स्हेजे आवे,
प्रगट्यो पण जे लेश गुण ते क्षणमां जावे;
दारुमां कंकास छे अहो दुर्मति झट उकले,
दारुथी तो देखी लेशो भाग्य वेळा नहि वळे. ॥ २ ॥
दारुनो पीनार कदी नहि ठामे ठरशे,
भुली आतमभान पापनां कामो करशे;
थहुने मात कहे छे जननीने वहु कहेवे,

चोरी दुःखनी खाण भाखने केई ज्ञाने,
चोरी करतां पातक बहु बांधे प्राणे,
चोरीनो करनार पलकमां जीव फसावे:
धणी नहीं रो चोरना ने चोरीथी मन धूजतुं,
दुर्व्यसनथी धर्मकरणी मरण मरम न सूजतुं. ॥ १ ॥
चोरीनो करनार नरकमां रहेशे नाशे,
चोरीनो करनार कदी नहि निर्भय थाशे;
चोरी करतां कुल कलंकी कीर्ति नाशे,
मले न साची टेक सुजन नहि बेसे पासे;
अढार वांका ऊंटना छे चोरना तो लाख छे;
लाखनुं पण चित्त अन्ते चोरीथी तो राख छे. ॥ २ ॥
जेवुं सरिता पूर चोरनी लक्ष्मी तेवी,
जेवो जल बुदबुद गगनमां विद्युत जेवी;
परनी लक्ष्मी जेनां परना प्राण हणे छे,
परनी लक्ष्मी लोभे दुःखनी खाण खणे छे.
परलक्ष्मी पत्थर समी गणी चोरी व्यसन निवारीए,
समजीने अहो भव्य लोको चेतनने झट तारीए. ॥ ४ ॥
जूठ बोले असत्य पापे चोर कहावे,
चोरीनो करनार दया शुं ? दिलमां लावे;
चोरीनो करनार जगतमां समजो नागो,
चोरीनो करनार तेहथी धर्म ज आघो.
दिवस चोरो छे घणाने रात्री चोरो घोर छे,
चोरवृत्ति चतुर लोको चोरना पण चोर छे. ॥ ५ ॥
मन वच काया थकी चोरीनो त्याग करे जे,
भव पाथोधि दुःखदायिने सहेज तरे जे;

चोरीमां नहि सुख जाणजो सज्जन लोको,
जगमां मोटुं पाप जाणजो यमनो धोको.
चोरी त्यागे जे जनो ते मंगल माला पामन
बुद्धिसागर जगतमां जश कीर्त्तिथी खूब ज

" उद्यममहिमा. "

छप्पयछंद.

उद्यमथी सहु थाय जगतमां जाणी लेजो,
उद्यम धरीने धंग अनुद्यमने शिख देजो;
उद्यम सुखनुं मूळ खरेखर शक्ति मोटी,
उद्यम इश्वरतुल्य वात नहिं किंचित् खोटी;
उद्यम इच्छित आपतो अहो उद्यम संगे आ
बुद्धिसागर मुक्तिनो मुख्य उद्यम झट माणीए.
पुण्य पाप बे कर्म अहो उद्यमथी लागे,
पुण्य पाप बे कर्म अहो उद्यमथी भागे
पुण्यकर्मनो उद्यम करतां पुण्य ज थाय,
पापकर्मनो उद्यम करता पाप ज थाय;
शुभाशुभ परिणामथी तो पुण्य पाप बंधाय छे
आत्मज्ञान आत्मध्याने द्विविध कर्म कपाय छे
अशुभ विचारे पाप ज बगडे दिलमां धारो,
शुभ परिणामे पुण्य बंध छे इष्ट विचारो;
शुद्ध विचारोद्यमथी जीवो अनन्त तर्या,
अशुभ विचारोद्यमथी तो भवमांही फर्या
धर्मध्यानोद्यमथकी अहो पुण्य पाप बे तो ना

पापथकी पुण्य ज छे सारुं शुभ व्यवहारे,
पुण्यथकी संवर छे सारो आतम तारे;
प्रसन्नचंद्र राजर्षि पेठे मनथी पापो,
अशुभ विचारो प्रगट थाय ते क्षणमां कापो;
मनसंयमथी कर्मनी तो वर्गणा नहि आवती,
ध्यान किरिया अशुभ कर्मो शुभपणे वदलावती. ॥ ४ ॥
शुद्ध विचारो शुद्ध ध्यान छे उद्यम मोटो,
शुद्ध विचारो करतां आवे कदी न तोटो;
दीलथी शुद्ध विचारो एहिज साची किरिया,
शुद्ध विचारो क्रिया करिने अनंत तरीया;
मन वाणी काया थकी अहो शुभोद्यम सुखकार छे,
धर्म यत्ने कर्म नासे जगतमां जयकार छे. ॥ ५ ॥
आत्मस्वरुपनी किरिया उद्यम साचो जाणो,
रमणता किरिया उद्यम पर्याय पिछाणो;
पिंडस्थादिकध्याने उद्यम प्रेमे करीए,
कर्मदलिकनो नाश करीने शिवपुर वरीए;
अंतरना उपयोगमां झट रमणता उद्यम खरो,
परम महोदय मार्ग जाणी भव्य जीवो अनुसरो. ॥ ६ ॥
जेने जेवो उद्यम फळ तो तेवुं मळशे,
समजीने सुपात्र जीवशिव पन्थे वळशे;
मनुष्यक्षेत्रमां शिव वस्तु मानव व्यापारी,
उद्यम करवो सत्य भव्य आलसने वारी;
आत्मव्यक्ति प्राप्त करवा, उद्यम अनुपम एक छे,
बुद्धिसागर हृदय दिनमणि ज्ञानकारण छेक छे. ॥ ७ ॥



अहो आज हुंतो वॅन्यो ब्रह्म योगी. ॥ ३ ॥
अहो आज हुंतो दयागंग न्हायो,
अहो आज हुंतो खरुं त व पायो;
खरा शुद्धरुपे अहो हुं सुहायो,
परावेगथी आपने आप गायो. ॥ ४ ॥
विकारो तमामो टळ्या एकताने,
बुरी आश छूटी खरा ब्रह्मभाने;
खरा शुद्ध चैतन्यमां दृष्टि लागी,
प्रभुप्रेमथी आतमनी ज्योत जागी. ॥ ५ ॥
प्रभुप्रेमथी ध्याननो भेद पावे,
धरी ध्यान ने सिद्धरुपे सुहावे;
कहे धीनिधि ध्यानमां काळ गाळो,
खराब्रह्ममां मानवी नित्य म्हालो. ॥ ६ ॥

सत्संग.

गझल.

करोने संग संतोनी, करोने संग भक्तोनी;
करोने संग ज्ञानिनी, करोने संग ध्यानिनी. ॥ १ ॥
करोने संग साचानी, तजोने संग काचानी;
करोने संग मोटानी, तजोने संग खोटानी. ॥ २ ॥
करोने संग योगिनी, तजोने संग शोकिनी;
करोने संग पूरानी, तजोने संग अधुरानी. ॥ ३ ॥
करोने संग समजुनी, तजोने संग खूनीनी;
करोने संग सारानी, तजोने संग नठारानी. ॥ ४ ॥
करोने संग चेतननो, तजोने संग अचेतननो;

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥

॥ धन्यवाद आपवा योग्य ॥

छप्पय छंद.

धन्य धन्य भरथार जगतमां जे उपकारी.
धन्य धन्य ते भव्य धरे जे सत्ज्ञानधारी;
दया दानमां रक्त धरे है सज्जन विचारी.
चोरी चुगली त्याग नेम ए सज्जन धारी.
धन्य धन्य जगमां अहा ते आप तरे ने तारता.
पापकारक मूर्ख जनने सदुपदेशे वारता. ॥ १ ॥
धर्मिजनो पर प्यार जिणमां धर्मज धारी,
निन्दा चुगली त्याग करी नहि द्रोह नठारो;
विप छतां नहि मान करूणा अन्तर धारे,
दुःखी जनोने दान खरचवा दुःख निवारे.
जुवानीना जोरमां जे विषयविकारो टाळतां,

[illegible] मानमें भयो है [illegible], ॥ २ ॥
[illegible] में मोह [illegible],
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible], ॥ ३ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥

चोरी जारी चुगली दोषो मोह करावे,
मोहे जगमां दास छे सहु मोह महा जगपाश छे;
मोहपुत्री दुःखदायी जगत्मांहि आश छे. ॥ २ ॥
जगजन मनमां मोह विराजे गडगडगाजे,
मोहे जगजन चाले वोले स्वारथ काजे;
मोहे दूरे धर्म मोहथी दुनिया चाले,
पशु पक्षियो प्रेमधरी वच्चांने पाळे;
मोह शत्रु वळवान् छे जग मोहे नाटकतान छे,
मोहनृपति राज्य भारे जगत्नो सुलतान छे. ॥ ३ ॥
मोहे मूके लाज मोहथी अक्कल बूरी,
मोहे लुंटे चोर मोहथी मारे छूरी;
मोहे भासे जूठ मोहथी ठरी न वेसे,
मोहे वधतो लोभ मोहथी जीवन क्लेशे;
चोल मजीठना रंग सम, मन मोहे निशदिन व्यापियुं,
मोहनुं तो जोर भारे मलीन मनडुं पामीयुं. ॥ ४ ॥
मोह महा छे काळ जाळमां सहु जकडाया,
अंतर वाहिर दुःख मोहथी कोइ न डाह्या;
कोलेराने प्लेग थकी पण मोहज खोटो,
मोहे वाळ्यो दाट मोहथी ज्यां त्यां गोटो;
मोहभूतना दास जे जन चतुर्गतिमां अडवडे,
मोहनी जंजाळमांहि कुदीने प्राणी पडे. ॥ ५ ॥
मोहे ज्ञान न थाय मोहथी सान न शांति,
मोटो छे चंडाळ मोहथी कबु न क्षान्ति;
मोहे वाधे दुःख मोहथी विष न मोटुं;
मोहे मोटां पाप मोहथी मनडुं खोटुं,

[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ २ ॥
[illegible]
ज्ञान ध्यानमां [illegible]
[illegible] अने आचार ज्ञानथी [illegible]
[illegible] ज्ञानियुं ध्यान सदा [illegible],
साधु सद्गुरु [illegible], [illegible] छे.
धन्य धन्य ते मुनिवरा जग, ध्यानमां [illegible] छे. ॥ ३ ॥
समजे नहि निज तत्त्व कदापि तुं आतम साधे.
समजे नहि निज तत्त्व अहो ते पंथ विरोधे,
ज्ञान विना क्रिया पाखंडे ते जन [illegible].
तथा साधु मुनि [illegible] सहु छे [illegible];
सदुपदेशे सत्यने जे समजावे तेम [illegible].
बुद्धिसागर सन्त साधु मानवा इष्ट [illegible]. ॥ ४ ॥

शुद्धस्वरूपप्रेममां सर्वनी गणना.

पेहेलुं भक्तिनां भाव भाजो. ए राग.

प्रेमथी लागे जगत सहु प्यारं,
मुज आतम सम जीव धारुं रे; प्रेमथी.

प्रगटे हृदय शुद्ध देवा;
बुद्धिसागर पीवे प्रेमना प्याला,
मीठा अमृतरस मेवा रे. प्रेम. ॥ ७ ॥

" गुरुस्तुति. "

व्हेचशुं भक्तिनां भाइ नाणां,-ए राग.

ज्ञानना दाता गुरुजी उपकारी, नमुं भावे सदाय सुखकारी रे; ज्ञानना०
दया करीने झट तत्त्व बतावी, दीलमांथी तम सहु टाळ्युं;
ब्रह्मस्वरुपनो भेद बतावी, ममतानुं मूळ खूब बाळ्युं रे. ज्ञा० १
आतमस्वरुपनुं ध्यान करावी, शाश्वत सुख चखाडयुं;
समतासरोवरे आतमहंसनुं, चित्तडुं वेग थकी वाळ्युं रे. ज्ञा० २
उपकार आपनो कदी न विसरुं, समकित दायक स्वामी;
प्रत्युपकार कदी आपनो न थावे, नमन करुंछुं शिर नामी रे. ज्ञा० ३
शरण शरण गुरु त्हारुं सदाय मुज, प्रभुछो प्राण थकी प्यारा;
दया करीने गुरु आशिष देशो, दीलमां वस्याछो गुरु म्हारा रे. ज्ञा० ४
विषयवासना दूर निवारी, आपी अंतर ज्ञानकुंची;
जीवनो शीव गुरु आपे बनाव्यो, करीने जात मुज उंची रे. ज्ञा० ५
जय जय जय गुरु देव कृपाळु, धन्य मनुष्य अवतारी;
बुद्धिसागर गुरु स्मरण करुंछुं, वन्दन वार हजारी रे. ज्ञानना० ६

शुद्ध स्वरूपविचार.

व्हेचशुं भक्तिनां भाइ नाणां-एराग.

आत्मन् शुद्ध स्वरुप जो विचारी,
जाय मानव भव केम हारी रे. आत्मन्०

असंख्य प्रदेश मय शास्वत सुखमय,
आलसथी थाय केम ढीलो;
अंतर् उद्यम थकी शुद्ध स्वरूपमय,
कर्मपातक सहु पीलोरे. आतम. ॥ १ ॥
तारा प्रकाशता चंद्र प्रकाशतो,
सूर्य प्रकाश करे भारी;
अनंत ज्ञान थकी सहुने प्रकाशे,
तेजनो तेज तुं विचारी रे. आतम. ॥ २ ॥
बाह्यमां सुख नहीं अंतर्मां सुख छे,
चेतन थाय शुं हठीलो;
ब्रह्मा शंकर हरि आतमराम तुं,
सत्ताए सरस छबीलो. आतम. ॥ ३ ॥
निज पर दोषना भानने विसारी,
अंतरमां थाजे एकीलो;
बुद्धिसागर गुरुवाणी विचारी,
था तुं खंतीलो टेकीलो रे. आतम. ॥ ४ ॥

आनंदघन.

वहेचशुं भक्तिनां भाइ नाणां-ए राग.

आनंदघन आतमना गुण गाशो, तमे शाश्वत सुखडां पाशो. आनंद.
आतमना प्रेमथी आतमना नेमथी, रुद्धि अनंति कमाशो;
अन्तर प्रदेशमां क्लेश न लेश छे, जागीने झटपट जाशो. आनंद. १
आतमना देशमां शाश्वत सुख छे, विवेकवंतनोज वासो;
नित्य अनित्य शुद्ध बुद्ध अविनाशी, वैखरीथी केम कळाशो. आनंद. २

बुद्धिसागर सिद्ध ध्येयना ध्यानथी,
सिद्ध स्वरूप जयकारी रे. भावना. ॥ ९ ॥

ध्यानजीवन.

व्हेंचशुं भक्तिनां भाइ नाणां ए राग.

ध्यानमां नक्की जीवन जीव गाळो,
दोषो सकळ झट टाळोरे. ध्यानमां०
संकल्प श्रेणि निवारीने क्षणमां,
वृत्ति चेतनमांहि वाळो;
असंख्यप्रदेशमां चित्त रमावो,
कदी न लेश कंटाळोरे. ध्यानमां. ॥ १ ॥
दोषोने खाळवा ने रोगोने टाळवा,
छंडोने क्रोध महा काळो;
सद्‌गुण दृष्टि धारी हृदयमां,
त्यागो निंदानो तो टाळोरे. ध्यानमां. ॥ २ ॥
सामर्थ्य योगथी ध्यान लगावतां,
रुद्धि अनंत दिल भाळो,
बुद्धिसागर प्रभु ध्यान प्रतापथी,
मुक्ति पुरीमांज म्हालोरे, ध्यानमां. ॥ ३ ॥

भक्तिमेवा.

व्हेंचशु भक्तिनां भाइ नाणां-ए राग.

भाळजो भक्तिनो योग खूब भारी,
भक्तिथी भूल ना थनारीरे भक्ति; भाळजो.
भक्तिना भावमां आनंद उपजे,

चार गतिमांहि वहेर्ता.
चेतो चतुर जीव जलदीज चेतो,
पाणीना पूरथी कहेतीरे. आतमा. ॥ १ ॥
बाह्य विषय विष जेवा गणीने,
करशो अंतर गुण खेती;
सुमतिना संगे रंगे तो रीजीए,
शाश्वत सुख जे देतीरे. आतमा. ॥ २ ॥
आतमनी धारणा आतमना ध्यानमां,
सुरता सहज भाव रहेती;
बुद्धिसागर गुरु तत्त्वस्वरुपमां,
रहेजो वाणीज एम कहेतीरे. आतमा. ॥ ३ ॥

दुनियादारी.

वेहेंचशुं भक्तिनां भाइ नाणां-ए राग.

दुनियादारी जरुर दुःखकारी,
चेतो भविक नरनारी रे. दुनिया०
स्वप्न समान मोह मायानी बाजी,
कोइनी कदी न थनारी;
मायामां मुंझी फुली फरे शुं,
जाय उमर अरे हारी रे. दुनिया. ॥ १ ॥
अंतरना शोधथी अंतरना बोधथी,
शाश्वत सुखनी खुमारी;
अन्तर प्रदेशमां ध्याने प्रवेशतां;
सिद्धि समाधि थनारी रे. दुनिया. ॥ २ ॥
बाह्य प्रदेशमां मोह मलीनता,

व्यक्तिथी भिन्न विचारो;
सापेक्षताथी ब्रह्मस्वरुपने,
जाणीए सत्य आधारो रे. ब्रह्म. ॥ ४ ॥
रत्नत्रयिनी रुद्धि विचारो,
ध्यावो परमब्रह्म पोते;
बुद्धिसागर प्रभु ब्रह्मस्वरुपमय,
वीजे तुं शीद्ने गोतेरे. ब्रह्म. ॥ ५ ॥

सद्गुणदृष्टिभावना.

वैहचशुं भक्तिनां भाइ नाणां-ए राग.

सद्गुणदृष्टि धरीने सुख लीजे,
गुणिनुं मान वहु कीजे रे. सद्गुण.
सद्गुणिंजननुं गान कर्याथी,
प्रगटे छे गुण तेज दीले;
जेवा विचार दिल संस्कार तेवा,
संस्कार फळ मन खीले रे. सद्गुण. ॥ १ ॥
कृष्णनी दृष्टि छे कूतराना दंतमां,
उज्वलरुपने वखाणे;
सद्गुणदृष्टिथी संस्कार गुणना,
युक्तिथी योग्य जीव जाणे रे. सद्गुण. ॥ २ ॥
दीवसमां खीना विचारथीज प्रगटे,
स्वप्नामां खीज निरखेली;
जेवा विचार संस्कारतोज तेवा,
तत्त्वनी वात आ ठरेली रे. सद्गुण. ॥ ३ ॥
विकथा विवादमां दोष विचारथी,

सद्विचार सद्भावना प्रसरी.
परमस्वरूप लयकारी रे. सद्गुण. ॥ १० ॥

॥ विचारीने सर्व करवुं. ॥

संतनां भक्तिनो भाव भालो-ए राग.

बोधथी बोलो विचारी सुधारी,
नको बोलीने पछी विचारी रे. बोधथी.
नाम ज्ञान बाटमां विचारी बोलीए,
विचारे वात थाय सारी.
विचारी बोलतां शोक न संपजे,
थाशे न मोटी खुवारी रे. बोधथी. ॥ १ ॥
विचारी चालीए विचारी म्हालीए,
विचारी देखीएज ठामे;
विचारी खोलीए वातो हृदयनी;
कीर्ति जगतमांहि जामे रे. बोधथी. ॥ २ ॥
विचारी ऊठवुं विचारी ऊंघवुं,
शिक्षा विचारीने दीजे;
द्रव्य ने काल भाव क्षेत्र विचारी,
कृत्यथी श्रेष्ठ सुख लीजे रे. बोधथी. ॥ ३ ॥
विचारी पूजीए विचारी सुझीए,
विचारी पादनेज मूको;
पस्तावुं पाछळथी पडशे न भाइओ,
चतुर चित्तमां न चूको रे. बोधथी. ॥ ४ ॥
विचारी शोधीए विचारी बोधीए,
विचारे भूल ना थनारी;

धर्मनी सज्झाय.

श्रीरे सिद्धाचल भेटवा-एराग.

रे जीव धर्मने धारीए, वारीने मोहमाया;
हुं ने मारु फोक छे, पाणीना पडछाया. रे जीव. ॥ १ ॥
पृथ्वी थइ नहि कोइनी, गाडी वाडीने लाडी;
भ्रान्तिमां भटके अरे, पडियो मोह खाडी; रेजीव. ॥ २ ॥
जेवी संध्या वादळी, जलमध्य पतासा;
कायानी माया तेहवी, दर्पणगत छाया. रेजीव. ॥ ३ ॥
पूर नदीनुं जेहवुं, जेवी स्वप्नानी सृष्टि,
झांझवाना जल जेहवी, जूठ मोहनी दृष्टि. रेजीव. ॥ ४ ॥
पुद्गल वाजांथी भिन्न तुं, शुद्ध चेतनराया,
बुद्धिसागर जागता नर, रत्न कमाया. रेजीव. ॥ ५ ॥

॥ परम प्रभु गान. ॥

नाथ कैसे गजको बंध छोडायो-ए राग.

परम प्रभु अन्तर आतम परखो, ध्याने जोइ जोइ हरखो परम.
दर्शन ज्ञान चरण गुण धारी, शुद्ध बुद्ध अविकारी,
शक्ति अनंति स्थिरता योगे, प्रगटे छे जयकारी. परम. ॥ १ ॥
आपो आप विचारे प्रगटे, व्यक्ति स्वरुप विलासी,
शोधो वोधो आतम देवा, त्यां छे गंगा काशी. परम. ॥ २ ॥
आतम अनुभव निश्चय स्थिरता, प्रगटावो सुखकारी,
हरिहर ब्रह्मा इश्वर पोते, तरतम योग विलासी. परम. ॥ ३ ॥
षड् दर्शननो झघडो भागे, भेद ज्ञान झट जागे,
शुद्ध स्वरुपे रहेतो रागे, पर परिणतिने त्यागे. परम. ॥ ४ ॥

ध्यावो गावो आतम देवा, मुख कर करशो सेवा,
बुद्धिसागर अनुभव मेवा, ध्याने झटपट लेवा. परम. ॥ ५ ॥

चिद्घनगान.

व्हाला वीरजीनेश्वर-ए राग.

प्यारा चिद्घन चेतन शुद्ध स्वरुप तन धारजोरे,
पामी हीरो हाथे अलबेला नहि हारजोरे;
निराकार निःसंगी ज्ञानी, अनंत दानादिकनो दानी,
दिल आदर्शे चिदानंद अवधारजोरे. प्यारा. ॥ १ ॥
उपशम क्षयोपशमनी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगटे व्यक्ति,
निश्चल ध्याने पोताने झट तारजोरे. प्यारा. ॥ २ ॥
अलख खलकमां साचो समजो, सुरतायी रहेजे त्यां रमजो,
विषय विकारो वेगे दीलथी वारजोरे. प्यारा. ॥ ३ ॥
कर पोतानी प्रेमे भक्ति, खीलवजे तुं निजगुण शक्ति,
चेतन चेती झटपट कर्म कलंक विदारजोरे, प्यारा. ॥ ४ ॥
अलबेलो साहिब तुं प्यारो, पोताने पोते ध्यानारो,
बुद्धिसागर परम प्रभु संभारजोरे. प्यारा. ॥ ५ ॥

श्रीयशोविजयजीस्तुति.

व्हाला वीर जीनेश्वर-ए राग.

व्हाला यशोविजयजी व्हेला दीलमां आवजोरे,
जाणी बाळक म्हारो करुणा दीलमां लावजोरे,
अपूर्व ज्ञानी धर्मधुरंधर, वाणी सारी छे शिव सुखकर,
तुज वाणीनो शुद्धाशय बतलावजोरे. व्हाला. ॥ १ ॥

तव पुस्तक साचां में परख्यां, रोम रोम मेम सहु हरख्यां,
म्हारा हृदय समुद्रे प्रवेश मुज करावजोरे. व्हाला. ॥ २ ॥
सात नयोना ज्ञाता पूरा, नहि को वातें प्रभो अधुरा,
तुज ग्रन्थोनो बोध हृदयमां ठावजोरे. व्हाला. ॥ ३ ॥
तुज भक्तिथी सत्य निहाळुं, विषय विकारो वेगे टाळुं,
याचक दीनबंधो तुं सेवक स्हाये धावजोरे. व्हाला. ॥ ४ ॥
अनेकान्त मतना प्रभु ज्ञाता, अनेकान्त आतमना ध्याता,
बुद्धिसागर करुणा दिल प्रगटावजोरे. व्हाला. ॥ ५ ॥

अन्तरमां सुख.

व्हाला वीरजिनेश्वर-एराग.

खरेखर सत्य सुख छे अंतरमां अवधारजेरे,
साचुं समजी व्हाला विषय विकारो वारजेरे;
माटीनी मानी जे ऋद्धि थाशे नहि तेथी कंइ सिद्धि;
व्हाला समजी वेगे अंतर्धनने धारजेरे. खरेखर. ॥ १ ॥
बाह्य विषयमां सुखनी आशा, मोह बुद्धिना जाण तमासा;
व्हालम समजी साचुं जीवन व्यर्थ न हारजेरे. खरेखर. २
जे जे अंशे स्थिरता धारे, ते ते अंशे धर्म वधारे;
तारक भवजलधिथी पोताने झट तारजेरे. खरेखर. ॥ ३ ॥
सामग्री पामीने चेतो, चेते ते शिव सुखने लेतो;
वाल्हम शुद्ध स्वरुप तारु ते दील विचारजेरे. खरेखर. ॥४॥
प्रगटे छे उद्यमथी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगटे व्यक्ति;.
वाल्हम बुद्धिसागर पोताने संभारजेरे. खरेखर. ॥ ५ ॥

चेतचेत आतम तुं चटपट, दूर करी दुनियानी खटपट;
प्रेमे बुद्धिसागर सद्गुरु संगत स्हायछेरे;
पामी अंतर्धनने आतम तो हरखायछेरे. चेतन. ॥ ४ ॥

" अमूल्य शिक्षा "

व्हाला वीर जीनेश्वर-एराग.

सुखकर अमूल्य शिक्षा मानवी होय तो मानवीरे,
फोकरनी फाकी करीने फकीर होय तो फाकवीरे;
मौन विना मुनिवर ते शानो ? दान कर्या वण शानो दानो ?
छबीलो होय तो दिलमां सत्य वातने छापवीरे. सुख० ॥ १ ॥
न्याय विना राजा नहि दीपे, तृपा छींपे नहि समुद्र टीपे;
धर्म विना नहि सुखनी वात पिछानवीरे. सुख० ॥ २ ॥
नाक विना शोभे नहि काया, शोभे शुं ? तरुवर विण छाया;
धर्म विना तेवी जींदगानी जाणवीरे. सुख० ॥ ३ ॥
अक्कल वण जेवी छे शक्कल, मेघविना शोभे नहि मरुथळ;
धर्म विना तेम भूंडी वेळा भाळवीरे. सुख० ॥ ४ ॥
हळी मळी आनंदे चालो, बोल्युं तेवुं निश्चय पाळो;
रसने निंदाथी राखो रसनाने जाळवीरे. सुख० ॥ ५ ॥
देश वेषं ने कदीन त्यागो, अन्तरना उपयोगे जागो;
बूरी परनी वातो दूर थकी ते वाळवीरे. सुख० ॥ ६ ॥
जननी जुओ न वाजु काळी, अवगुण दृष्टि टेवो टाळी;
जीवन वेळा सर्व सज्जन साथे गाळवीरे. सुख० ॥ ७ ॥
नीतिनी रीतिमां प्रीती, धर्म करतां कदी न भीति;
वेगे वेळा सारी ब्रह्मज्ञानथी वाळवी रे. सुखकर० ॥ ८ ॥
सर्व कार्यमां राखो समता, उत्तम सज्जन सहेजे नमता;

देह सृष्टि वर्तमाननी रे, कर्ता तेनो पिछान रे. जीव० ॥ ९ ॥
देह सृष्टि रचना करे रे, राग द्वेषना योग;
राग द्वेषना नाशथी रे, सृष्टि देह वियोग रे. जीव० ॥ १० ॥
सृष्टि कर्ता नहि हुवे रे, निर्मळ इश्वर देव;
राग द्वेषाभावथी रे, बने न एवी टेवरे. जीव० ॥ ११ ॥
राग द्वेष सद्भावथी रे, इश्वर नहि कहेवाय;
शुद्ध इश्वर निर्मला रे, सृष्टिना कर्ता न थाय रे. जीव० ॥ १२ ॥
सहु जीवो परमातमा रे, सत्ताथी कहेवाय;
ध्याने कर्म विनाशथी रे, सिद्ध सदा परखाय रे. जीव० ॥१३॥
पिंडस्थादिक ध्यानथी रे, ध्यावो आतम राय;
बुद्धिसागर गुरु लही रे, केवळ कमला पाय रे. जीव० ॥ १४ ॥

" आत्माध्येय. "

माढ राग.

प्रगटे आतम भान रे, दील प्रगटे छे भगवान्,
होवे जब एक तान रे, दील प्रगटे छे भगवान्.
आत्म प्रदेशो ध्यावतां रे, शक्ति प्रगटे सर्व;
ध्यान क्रिया अभ्यासथी रे, नासे मिथ्या गर्व रे. दि० ॥१॥
अगम अगोचर वस्तुनो रे, वीरला पामे पन्थ;
गुरुगम वण केइ प्राणिया रे, थाक्या भणीने ग्रन्थ रे. दि० ॥२॥
ज्ञानविना श्रद्धा नही रे, श्रद्धा वण शी सेव;
अनेकान्त नय योगथी रे, सेवो आतम देवरे. दि० ॥३॥
उपयोगे आतम भजो रे, असंख्य प्रदेशी राय;
सहज समाधि संपजे रे, अंतर सुख परखाय रे. दिल. ॥४॥
शक्ति अनंति शाश्वती रे, प्रगटे नासे रोग;

चेतनदर्शन.

जीव जोइले निज रूपने झट शुद्ध परखी तत्त्वनिश्चय धारजे;
संसार छे पण नास्तिभावे आतममां अवधारजे. जीव०
भान भूली मनमां फूली, झुल्यो सहु संसारजी;
भूतकालिक विषय भूली, मोह निंदा वाररे. जीव. ॥१॥
आतमहीरो हाथ आव्यो, देखीने तुं देखजी;
मोहबाजी त्यां शुं राजी, प्रेमथी झट पेखरे. जीव. ॥२॥
खुदा विष्णु राम तुं छे, अर्थभेदे भेदजी;
शब्दभेदे अर्थ एके, अनेकान्तनय वेद रे. जीव. ॥३॥
स्याद्वादभावे सत्य जाणी, सेवीए आतमरामजी;
ब्रह्म गुण आधार आतम, ब्रह्मनुं ते धामरे. जीव. ॥४॥
एकनयथी दृष्टिभेदे, भेद प्रगटे जाणजी;
स्याद्वाद समज्या विन जगमां, धर्म ताणंताणरे. जीव.॥५॥
चित्तवृत्ति स्थिरताथी, आतमभक्ति थायजी;
आतम ते परमातमा छे, ध्यानथी परखाय रे. जीव.॥६॥
आनंदलहेरो ऊछळेजी, ध्यानसागरमांहिजी;
ज्ञान दर्शन चरण स्थिरता, एकचित्त प्रवाहरे. जीव.॥७॥
ध्यान सरवर हंस खेले, आनंद अपरंपारजी:
बुद्धिसागर भक्तिभावे, थयो सफल अवताररे. जीव.॥८॥

" गुरुशरण "

गुरुशरणथी जीव जागजे झट मोह माया क्लेश निंदा वारजे:
गुरुचरणनी सेवनाथी आतमने अरे तारजे. गुरु०
गुरुकृपा वण जीवडा अहो, ठरे न एके ठामजी;

केवल ज्ञान अंते प्रकाशे;
धर्मउत्साहथी वीर्य शक्ति जगे,
वीर्य शक्ति अनंति प्रभासे. रुद्धि. ॥ ४ ॥
योग उद्योगथी मुक्ति सोपानमां,
आतमा धैर्यथी पाद मूके;
प्रेमथी भावना भावतां आतमा,
कदी नहीं धैर्यथी भव्य चूके. रुद्धि. ॥ ५ ॥
शक्तिना योगथी व्यक्ति शुद्धि जगे,
सत्य आनंदनी घेन आवे;
भक्ति विश्वासथी आतमा उच्च छे,
शुद्ध अभ्यासथी दुःख जावे. रुद्धि. ॥ ६ ॥
जागीये क्षण क्षणे लागीए ध्यानमां,
बाह्य संसर्ग सर्वे निवारी;
शुद्ध चैतन्यना रुपमां राचवुं,
आतमा जाणजो शक्तिधारी. रुद्धि. ॥ ७ ॥
उच्चमां उच्च तुं रायनो राय तुं,
जागजे दीनता भाव टाळी;
आतमना प्रेममां परम इश्वर प्रभु,
जागजे चित्तने ध्यान वाळी. रुद्धि. ॥ ८ ॥
जागजे आतमा जागजे आतमा,
शुद्ध उपयोगथी ध्यान धारी;
बुद्धिसागर सदा जागजे ध्यानथी,
भक्तिउत्साहथी मुक्ति सारी. रुद्धि. ॥ ९ ॥

वैखरीथी केम कहायरे. मन.
यम नियम आसन करी रे, प्राणायाम अभ्यास;
प्रत्याहार धरी धारणा रे, ध्याने थयो विश्वासरे. मन.॥१॥
अध्यातमज्ञाने करी रे, शुद्ध चरणमां स्थिर;
सत्यसमाधि ते वरी रे, थयो छे चेतन धीर रे. मन.॥२॥
क्षयोपशमज्ञाने करी रे, चेतन ध्यान कराय;
स्थिरतायोगे संपजे रे, आत्मसमाधि को पाय रे. मन.॥३॥
अनेकान्तनयवादथी रे, नासे भ्रान्ति दूर;
आपोआप विचारतां रे, वागे मंगल तूर रे. मन.॥४॥
आतमअनुभव ज्ञानथी रे, नासे मिथ्या क्लेश;
चेतन शुद्धोपयोगथी रे, होवे जीव परमेशरे. मन.॥५॥
सहजयोग सद्गुरुथी खरो रे, उपदेशे छे जिन;
देश सर्व विरति थकी रे, आतम होवे पीन रे. मन.॥६॥
उपशम क्षयोपशम ने क्षायिक, भाव साचो धर्म;
साधन साध्यस्वरुप छे रे, टाळे सघळां कर्म रे. मन.॥७॥
नवतत्त्वादिक ज्ञानथी रे, प्रगटे छे उपयोग;
सहज रमणता योगथी रे, प्रगटे क्षायिकभोग रे. मन.॥८॥
ज्ञानोत्तमथी साधना रे, करवी धरी उमंग;
शाश्वतसिद्धिसुखनो रे, अनुभव आवे अंगरे. मन.॥९॥
अंतरमां निश्चय धरी रे, चाले जे व्यवहार;
चढते भावे संपजे रे, शाश्वतसिद्धि उदार रे. मन.॥१०॥
आत्मिकशुद्ध स्वभावनो रे, प्रगटे धर्म अनंत;
शांति आतममां खरी रे, भाखे वीर भदंतरे. मन.॥११॥
सेवो ध्यावो आतमा रे, आतम सिद्धस्वरुप;
आतमध्याने आतमा रे, टाळे भवभय धूप रे. मन.॥१२॥

राग द्वेष जीत्या थकी रे, होवे सघळा जिन;
जिनउपासक जैन छे रे, जाणी न थावो दीन रे. घट. ॥१०॥
हर रेचक कुंभक हरि रे, ब्रह्मा पूरकरुप;
द्रव्यभाव बे भेदथी रे, प्राणायामस्वरुप रे. घट. ॥ ११ ॥
स्याद्वाद समज्या विना रे, दुनिया सहु कूटाय;
आतमज्ञान विना कदी रे, भेदभाव नहि जायरे. घट. ॥१२॥
वैखरी वाणी शुं कहे रे, चिन्मय चेतन खास;
परा पश्यंति पामीने रे, प्रगटे साचो भास रे. घट. ॥ १३ ॥
साकर सरिता जळ मळीने, तन्मयताने पाय;
बुद्धिसागर धर्मथी रे, आपोआप समाय रे. घट ॥ १४ ॥

जाहेरचेतवणी.

मुखडा क्या देखे दर्पणमें-ए राग.

जीवडा चेती ले तुं मनमां, भटके शुं भववनमां. जीवडा.
अमृतने त्यागी चेतन तुं, नाहक मूरख बन मां;
विषयापिपासा, विषसम तेने, अमृत मूरख गण मां. जीवडा १
पुद्गलनी इच्छाने छंडो, मुंझे शुं परधनमां,
बुद्धिसागर अन्तर शोधो, व्याप्यो चेतन तनमां. जीवडा. २

प्रभातभावना.

प्रभाती राग.

करुणा करजे सर्व जीवोपर, भाव दया चित्त धारी रे;
सत्ताए छे सिद्ध समा जीव, अंतरमां अवधारी रे.
करुणा० ॥ १ ॥
सर्व जीवोनुं सारु इच्छो. तेथी उच्च थवाशे रे:

धर्मध्यानना चार प्रकारो, प्रगट करावो धर्म रे. प. ॥ ७ ॥
शुक्लनी मन भेद चारे न चुके, शुक्लमां जिन भेद धरंरे,
शुक्लध्यान जे साधक भावी, पामे नहि फिर अवंरे प. ॥ ८ ॥
षड्दर्शनना भेद विचारी, शुद्ध करो परमार्थरे,
सम्यग्दर्शने शुद्ध कषायी. हेय करो स्वार्थरे. प. ॥ ९ ॥
क्षयोपशम, उपशम ने क्षायिक, औदयिकना जे भेदरे,
पारिणामिक रूप विचारी, टाळो मिथ्या खेदरे. प. ॥१०॥
आपस्वभावे आत्मस्वरूपे, स्थिरता पामो वेगरे,
बुद्धिसागर सद्गुरु वाणी. आनंद होय हमेशरे. प. ११ ॥

साची शिक्षा.

मुखडा क्या देखे दर्पनमें-ए राग.

शिक्षा धारी ले मन म्हारी—खटपट सर्व वारी. शिक्षा
विकथा निन्दामां जीवलडा, उमर जाये हारी;
लक्ष्मी ललनानी लालचमां, कर्म करे शुं भारी. शिक्षा. ॥१॥
जूठे मार्ग जडमां मानी, सत्य न वात विचारी,
मायानी खटपटमां मूरख, धर्मवात नहि धारी. शिक्षा. ॥२॥
ज्ञानवात तो दील न गमती, प्यारी वेवर यारी,
दुनियामां स्वारथनां सगपण, दुनिया दुःखनी क्यारी. शिक्षा. ३
करजे मुनिवर गुरुनी यारी, श्रद्धा भक्ति वधारी;
बुद्धिसागर गुरुकृपाथी, मंगलनी तैयारी. शिक्षा. ४

उपाधि.

गजल.

उपाधि दुःखनी क्यारी, उपाधि मूर्खने प्यारी;
उपाधि स्वस्थता टाळे, उपाधि धर्मने खाळे. ॥ १ ॥

रह्यो हुं शांतरस झीली, रह्यो हुं शांतरस खीली;
बुद्ध्यब्धि तत्त्वमां रंगी, थशो सहु जीव सत्‌संगी. ॥ ८ ॥

आत्माना दयाना उद्गार.

गझल.

दयामय दृष्टिथी देखुं, दयामय दृष्टिथी पेखुं;
दयामय देश छे म्हारो, दयामय देश छे प्यारो. ॥ १ ॥
दयामय मेघ छे वृष्टि, खीले छे धर्मनी सृष्टि;
दयामय चित्त गंगा छे, दयामय चित्त चंगा छे. ॥ २ ॥
दयामय तीर्थ चेतन छे, दयामय धन्य ते मन छे;
दयामय दील छे देवा, दयामय दीलनी सेवा. ॥ ३ ॥
दयाथी सुखने शान्ति, दयाथी जाय छे भ्रांति;
दया त्यां धर्मनो वासो, दयानो रंग छे खासो. ॥ ४ ॥
दयाना संगमां रहेवुं, दयाथी तत्त्वने कहेवुं;
दयाथी बोलवुं सारुं, दयाथी बोलवुं प्यारुं. ॥ ५ ॥
दयाथी सर्व धर्मो छे, दयामां धर्म कर्मो छे;
दयाने प्रेम लावे छे, दयाथी सुख थावे छे. ॥ ६ ॥
दयाथी धर्म प्रगटे छे, दयाथी कर्म विघटे छे;
बुद्ध्यब्धि चित्तमां प्यारी, दया माता सदा सारी. ॥ ७ ॥

सूती वखते आत्मोद्‌गार.

धीराना पदनो राग.

शरीरनो तुं संगी रे, आतम अवधारजे,
शुद्धरूप समजी रे, विषयाविष वारजे; शरीर०
नाना मोटा वृद्ध युवा नर, नारीना पर्याय;

वैरी हर्या छे ज्ञानयोगे वर्त्यां ते दलवारमां. ॥ ९ ॥
स्वात्मदर्शीनो भिन्न छे आ स्थल,भो संसारमां;
पामी अने हुं मनुष्य भव देशोन्नतिने हारमां,
देशोन्नतिनो लाभ करतां सर्व देवो भरणां:
देशोन्नति दीक्षा थशे ते प्रभु धर्मो मे नेमणी. ॥ १० ॥
निज देशना शुभ ग्रंथ वांची देशनी हानि हरो;
निज अतुल बळथी आत्मयोगे प्रभुनी माफे वधो,
जय नादथी देशोन्नतिमां बुद्धिसागर धर्म छे;
अध्यात्म भावे भव्य शिक्षा समजनां शिव मर्म छे ॥ ११ ॥

ॐ

सद्गुरुनुं सारं इच्छो.

धीरानां पदनो राग.

इच्छो सहुनुं सारुं रे, कल्याना करनारा,
सारुं छे सहुने प्यारुं रे, दया दिल धरनारा. इच्छो०
कर्माधीन दोषी छे दुनियां, खेले माया खेल,
मोह मदिरा दोषे घेरा, दोष न जुवे समजेल;
दोषीना दोष टाळो रे, सकल जीव दिल प्यारा. इच्छो० १
कोइ न शत्रु जीवो जाणो, निमित्त कारण होय,
दुःख सुख कारण कर्म खरुं छे, ज्ञानथकी अवलोय;
दोष दृष्टि टाळो रे, सत्यने समजनारा. इच्छो० २
जेवुं दीलमां तेवुं पामो, गुण अवगुणनी दृष्टि,
दोष दृष्टिथी दोषी थाशो, गुण दृष्टि गुण सृष्टि;
मातानी दृष्टि राखो रे, भवोदधि तरनारा. इच्छो० ३

परनी खटपटनी लटपटमां, भूलीश आतम भान,
परपंचाते पडतां गांडो, थाइश जीव नादान;
पंचातना वखेडे रे, गमारतो जीवन गाळे. परनी० ॥ २ ॥
चार गतिमां भटके प्राणी, तेनी नहि पंचात.
परनी निंदा लवरी करतां, भवमांहि भटकात.
समजण साचीरे, समजी सुजन चाले. परनी. ॥ ३ ॥
परमां पेठाथी जीवलडा, पामीश भारे खेद,
जोड जोडने जोड लेजे, समजी साचो भेद;
खस खूरी जाणीने, कहो कोण पंपाळे. परनी. ॥ ४ ॥
परपंचाते तत्त्व न मळशे, जीवन जावे फोक,
अंतरमां उतर्या वण भटके, पामर मूरख लोक;
चित्तनी चंचळतारे, चिंता क्षण क्षण बाळे. परनी. ॥ ५ ॥
परनी पंचातो करवाथी, आर्त रौद्र बे ध्यान,
दुर्लभ मानव भवने हारे, मिथ्यामति अज्ञान,
लींट पडी माखीरे, तेनुं कंइ नहि चाले. परनी. ॥ ६ ॥
माखीनी अवस्था पेठे, पंचाते जंझाल,
समजीने शिखामण दीलमां, मनडुं धर्मे वाळ;
दुनिया दीवानीरे, परम धन नहि भाळे. परनी. ॥ ७ ॥
घुमाडाना बाचक भरतां, कांइ न आवे हाथ,
राग द्वेषे परपंचाते, भूलीश नहि जगनाथ,
बुद्धिसागर योगीरे, ध्यानथी आनंद म्हाले. परनी. ॥ ८ ॥

म्हारु कोइ नथी.

धीराना पदनो राग.

नथी कोइ म्हारुरे, म्हारु म्हारी पास खरे,
मायाथी मानी म्हारुरे, फोगट केम फुली फरे, नथी.

लाज तुज हाथेरे, श्रद्धा धरी दील खरी. इष्ट. ॥ २ ॥
तुज भक्तिथी मंगल माला, धार्यां थावे काम.
ऋद्धि सिद्धि विजय पताका, फरको ठामो ठाम;
बुद्धिसागर ध्यानेरे, वांछीत वस्तु वरी. इष्ट. ॥ ३ ॥

पैसा.

पैसा पैसा पैसा त्हारी वात लागे प्यारी रे;
रात दिवस पैसाने माटे भटके नरने नारी रे. पैसा. ॥ १ ॥
भणवुं गणवुं पैसा माटे, पैसे घेवर धारी रे;
पैसाथी वालुडां छानां, पैसानी मोटी यारी रे. पैसा. ॥ २ ॥
पैसाथी परमेश्वर न्हानो, पैसो देव वेचावे रे;
पैसानी पूजारी दुनिया, पैसो नाच नचावे रे.पैसा. ॥ ३ ॥
हिंसा चोरी पैसा माटे, पैसाथी सर्वे व्हालुं रे;
आजीजी पैसाने माटे, वचन बोलवुं कालुं रे. पैसा. ॥ ४ ॥
पैसा माटे नोकर रहेवुं, पैसा माटे शेठो रे;
पैसा माटे राजा रैयत, पैसा माटे वेठो रे. पैसा. ॥ ५ ॥
पैसा आगळ गुरु नकामा, पैसा माटे दोडे रे;
पैसा माटे गांडो पैसा, माटे माथुं फोडे रे. पैसा. ॥ ६ ॥
पैसाथी व्हाला छे बापा, पैसा माटे छापा रे;
पैसाना लोभे छे टंटा, युद्धे कापंकापा रे. पैसा. ॥ ७ ॥
पैसाथी दूरे जे रहेता, ते जन साचा त्यागी रे;
बुद्धिसागर निर्लोभी जन, मुनिवर छे वैरागी रे.पैसा.॥८॥

गप्पां.

गप्पां गप्पां गप्पां मारे, कदी न सारु थाशे रे;

नाठी सकळ उपाधी. चिदानंद. ॥ ३ ॥
केवल ज्ञानी निजगुण दानी,
आपोआप प्रकाशी;
पूज्यने पूजक ध्येयने ध्यानी,
शुद्ध चरण विलासी. चिदानंद. ॥ ४ ॥
सहज स्वरूपी रुपारूपी;
जलपंकजवत् न्यारा;
बुद्धिसागर ऋद्धि सिद्धि,
शुद्धानंद अपारा. चिदानंद. ॥ ५ ॥

राजानुं लक्षण.

छप्पयछंद.

नृपति ते कहेवाय न्यायथी रैयत पाळे;
नृपति ते कहेवाय प्रजानां संकट टाळे;
नृपति ते कहेवाय लोभथी रहेवे दूरे,
नृपति ते कहेवाय प्रजानां दुःखो चूरे;
पुत्र पेठे पाळतो जे रैयतने निशदिन सदा,
प्रजापाळक तेज साचो जूठ वदतो नहि कदा. ॥ १ ॥
पीडे नहि तलभार कोइने कपट करीने,
पीडे नहि तलभार लोभथी वित्त हरीने;
परप्रियाने जननी सम लेखे छे मनमां,
अन्याये मुंझे नहि नृपति रैयत धनमां;
दगा प्रपंची लांचीआने योग्य शासन आपतो,
गरीब जनने सहाय आपी दुःख सर्वे कापतो. ॥ २ ॥
साधु संगत करे सदा निज कुमति हरवा,

नाटिकना शिरदार देखवुं मनमां न लावे,
वेश्या साथे प्यार विनाशक नेह न लावे;
“ब्रीस्ताति” धर्मनुं आचरवुं के ग्रुहे साचा भाखो,
अखंड धर्मे आणे ते सम दृढ जोवो. ॥ ७ ॥

सर्व वसतुं धीर देशनी दाझ न लागे,
वहिवाटमां वेपार करीने ठेठ नाखे;
कुमारी ने नारी वनीनी योग्य माने,
सहस्त्रनी ने संग करीने सार न जाणे;
देशनी के कोक भेने कुर भरना दावना,
देशनो उद्धार नवथा लक्षणा शुं पामना. ॥ ८ ॥

परदेशिनी नकल पण अकलथी थाया,
परदेशीना वेष,ना गमे ते दाया;
“गुरमी” पार्टी “बिल” कारी शोभतने नाके,
उघाडे शुं देशनगुं जुवान ने पाके;
भान घाट पदन नृपनुं शीयल पछे गालना,
भानभंगी नृपतियो शुं मर्यादा उजालना. ॥ ९ ॥

नहि धर्मनो रंग भलुं तेनुं शुं थाशे,
दया तणो नहि नेम हृदयमां शुम शुं थाशे;
प्रभु उपर नहि प्रेम स्रोपथी जे धगधगता,
फावनतांनी झाळ फरी रंगतने ठगता.
नृपति एवा जनीयाथी देशना बेहाल छे,
वीरल्या कोइ सत्य नृपति क्यांथियो कलिकाल छे ॥१०॥
देशोद्धारक यत्न करे तेनाथी अळगा,
देशतणी नहि दाझ व्यसनमां फेरक वळगया.
धर्मनी वातो वहेम करीने जे उठावे,

एवा नृपति जन्म धरीने सत्य न पावे;
गप्पां हांके सोगठां ने हिंमत धारे भीमनी,
एकला तो रजनीमांहि बहिर् जाय न सीमनी. ॥११॥
परदेशीनो वेष धर्यो पण संप न धार्यो,
परदेशीनी नकल करतां जन्मज हार्यो;
रोफ धरीने पैसानो धुमाडो करता,
हाजी हा करता नरनी साथे जे फरता.
नृपति एवा जागवाथी भाग्य वेळा शुं वळे,
देशनां जो भाग्य होय तो उत्तम नृपति नीकळे. ॥ १२ ॥
रैयतने दंडीने तेना पैसे म्हाले,
विना विचारे खर्च करीने दाटन वाळे;
विधाना वैरीने ढेरी हूमर वाटे,
वात कहुं छुं साची नृपति शिक्षा माटे;
चतुरनृपति चेतीने भट धर्मपन्थे चालजो,
बुद्धिसागर सत्य समजी भाग्यवेळा वाळजो. ॥ १३ ॥

शाश्वत चेतन.

अब मैं साचो साहिब पायो. ए राग.

चेतन तुंहि शाश्वत शिव सुख दरियो,
तुं तो ज्ञानादिक गुण भरियो. चेतन.
क्षयोपशम उपशम ने क्षायिक, भावे निजगुणभोगी,
अंतर अनुभव अमृतस्वादी, योगी पण तुं अयोगी चेतन २
केवल कमला ऋद्धि प्रकाशी, सिद्ध बुद्ध अविनाशी,
जाग जाग हवे तत्त्व स्वरुपे, तुजने दउ शाबासी. चेतन. २
अजरामर निर्मल सुखकारी, अकळ कळा जयकारी,

पोताने तारे तुं प्रेमे, सत्ता शुद्ध समारी. चेतन. ॥ ३ ॥
प्रभु वाणी जयनाद करीने, सत्य स्वरुप बतावे,
निर्मल समता सरवर हंसा, झीले शुद्ध कहावे, चेतन. ॥ ४ ॥
अंतर परिणति वण व्यवहारे, शोधे पार न आवे,
बाह्य क्रियामां झगडा भारी, तत्त्व न कोइ पावे, चेतन. ॥५॥
अंतर परिणति लक्ष्य विचारी, साधनथी तेह साधे,
बुद्धिसागर चढते भावे, ध्यानदशा मुख वाधे. चेतन. ॥६॥

इश्वरस्तुति.

हरिगीत.

जय सत्य इश्वर विश्व वत्सल सत्य ज्योतिः सुखकरा,
शक्ति अनंति व्यक्तिमय तुं पाप टाळे दुःखहरा;
ज्ञानथी तुं ज्ञेयनो भासक प्रभो छे सर्वदा,
नत सुरा सुर वन्त्रि पदकज वंदुं छुं वीरजिन सदा. ॥ १ ॥
जय विश्व पूजित विश्व तारक धर्म धारक देव छे,
जय सत्य ज्ञानी परम योगी शुद्ध त्हारी सेव छे,
हे देवना पण देव व्हेला दया करी उगारजो,
सम्यक्त्व स्थिरता शिघ्र आपी बाळने झट तारजो. ॥ २ ॥
मन रागने द्वेषज सदा संसारनुं तो मूळ छे,
जिन तत्त्वने जाण्या विना तो जाणवुं ते धूळ छे;
सहु दोषनां तो मूळ नासे ज्ञान एवुं आपजो,
निज बाळने प्रेमे करीने धर्ममां स्थिर थापजो. ॥ ३ ॥
हे परम करुणावंत व्हाला ध्यान त्हारु सार छे,
परमात्म व्यक्ति परम व्यक्ति भोगी तुं निर्धार छे,
निज दीलमां तुं आवतो प्रगटावतो सुख ल्हेरियो,

कीर्तिना मोहे जो पडशो, तो अंते बहु रोशो रे. कीर्ति.८
कीर्ति गांडाने पण व्हाली, कीर्ति छे लटकाळी रे;
कीर्ति कामणगारी जगमां, कीर्ति छे महाकाली रे. कीर्ति.९
कीर्तिनी पूजारी दुनिया, सन्तो समजे साचुं रे;
नाम कर्मना उदये कीर्ति, तेमां शुं हुं राचुं रे. कीर्ति.१०
कीर्तिनी लालचने छंडी, सद्गुण कीर्ति करशो रे;
बुद्धिसागर मंगलमाला, धर्मोदयथी वरशो रे. कीर्ति. ११

काया अने चेतन चर्चा.

राग धीराना पदनो.

बोले काया शाणीरे, चेतन तमे क्यां वसिया,
मारु मारु मानीरे, मायावश केम फसिया:
चेतन तुं मुसाफर जगमां, वसियो मारे घेर,
तुं नहि मारो हुं नहि तारो, माने शुं मन ल्हेर.
चेत चेतन ज्ञानेरे, अन्तर अनुभव रासिया. बोले. ॥ १ ॥
चेतन हवे बोलेरे, व्हाली काया शुं बोले,
प्राण थकी प्यारीरे, नहि कोइ तुज तोले,
खवरावुं पीवरावुं तुजने, नवरावुं बहु पेर;
हवा दवाथी तुजने पोषुं, वसियो त्हारे घेर,
वस्त्रोथी शणगारुरे, मारे तुं मुंघा मोले. चेतन. ॥ २ ॥
हरतां फरतां तारी खबरो, लउं छुं वारंवार,
रंग रसीली अमरकाया, तुं छे प्राणाधार;
बोल नहि खाटुं रे, मन मारु बहु डोले. चेतन. ॥३॥
काया पाछी कहेती रे, चेतन हुंतो नहि त्हारी:
तने हुं नथी परणी रे, हजी हुं बाळकुंवारी:

अलख स्वरुपी आतम देवा, शक्तिथी भगवान;
बुद्धिसागर ध्याने रे, वात सत्य निर्धारी. चेतन. ॥१०॥

विषय.

ओधवजी संदेशो कहेशो श्यामने-ए राग.

विषय पिपासा विषथी भुंडी जाणजे,
विषयेच्छाथी चित्त चंचळता थायजो;
विषयेच्छाथी कर्म ग्रहण संसारमां,
विषयेच्छाथी दुःख घणां प्रगटायजो. विषय. ॥ १ ॥
विषय वेगमां कुमतिनुं साम्राज्य छे,
विषय वेगथी कीर्ति धननो नाश जो,
विषय वेगथी रौरव दुःखो संपजे,
विषय जोरथी वधती निशदिन आशजो. विषय. ॥ २ ॥
विषयेच्छाथी अशुभ वधती भावना,
विषयेच्छाथी प्रगटे खोटां ध्यानजो,
विषयेच्छाथी आधि व्याधि संपजे,
विषयेच्छा छे महाउपाधि स्थानजो. विषय. ॥ ३ ॥
विषयेच्छाथी ठाम ठरे नहीं दीलडुं,
विषयेच्छाथी मूरख परआधीन जो;
विषयेच्छाथी नफफट नागो जन कहे,
विषयेच्छाथी उच्च जनो पण हीन जो. विषय. ॥ ४ ॥
उत्तम जन तो विषय वृक्षथी वेगळा,
करता प्रेमे अनुभव आतम ध्यानजो;
बुद्धिसागर मंगलमाला पामशो,
वैराग्ये वाळो मनडुं गुण वानजो. विषय. ॥ ५ ॥

आनन्दल्हेर.

धीरानां पदनो राग.

आनंद ल्हेरो प्रगटी रे, परमरूप परखायुं;
अंधारु दूर नाठुं रे, सहजरूप निर्धार्युं. आनंद०
अजपाजापे रटना लागी, झळकी रुडी ज्योत,
झरमर झरमर मेहुला वरसे, थयो महा उद्योत;
अंतरमां उलटथी रे, मन मारु हरखायुं. आनंद० ॥ १ ॥
अनुभव दर्शन प्रेमे कीधां, भ्रान्ति नाठी दूर,
सहज स्वरूपे स्थिरता योगे, सुख प्रगट्युं भरपूर;
परखीने हीरो लीधो रे, निर्भयपद आयुं. आनंद० ॥ २ ॥
अलखदेशमां प्रेमे खेलुं, निश्चय आतमदेश.
असंख्य प्रदेशे क्षायिकभावे, वसतां लेश न क्लेश;
ज्ञानियोनी वातो रे, ज्ञानथकी ए गायुं. आनंद० ॥ ३ ॥
अनंतभवनी भागी भ्रमणा, गुरु कृपाए खास,
पावे ते छुपावे एवो, आव्यो मन विश्वास;
अगम ज्ञान मीठुं रे, छुपे नहि छुपाव्युं. आनंद० ॥ ४ ॥
गुरु कृपाथी ध्याने रहीने, रीझवशुं जगनाथ,
न बोल्यामां नवगुण समजी, रहीशुं अनुभव साथ;
बुद्धिसागर प्रेमे रे, अनुभव पद पायुं. आनंद० ॥ ५ ॥

वीर जिन दर्शन स्तवन.

प्रभु पडिमा पूजीने पोसह करीए रे-ए राग.

जिनवर वीर प्रभुनां दर्शन कीजेरे,
त्यागीने दुःखदायी संसारने;
बार वर्ष निःसंगे चेतन ध्यायोरे,

ध्यान थकी सफल कर्यो अवतारने.
समताए तजीया मोह विकारने,
धर्म क्षमा धरीने तजीया खारने,
धन्य धन्यरे वीर प्रभु अणगारने.
समजीने चेतन शिक्षा धारने. ॥ १ ॥
गुण स्थानक सोपाने ध्याने चढीयारे,
मुक्तिना महेलेरे प्रभुजी विराजीया;
कर्म कटक संहारी जिनपद लीधुंरे,
लोकांते सिद्ध थइने गाजीया. समता. ॥ २ ॥
क्षायिक भावे नवरुद्धिना भोगीरे,
उपयोगी समये समये सर्वना;
रुपारुपी सहज स्वरुपी योगीरे,
भावथकी महा वीररे वर्ते गर्वना. समता. ॥ ३ ॥
कृपा करीने ध्याने दीलमां आवोरे,
विषयादिक वैरि शिघ्र निवारजो;
गांडो पण आ बाळ तमारो जाणीरे,
भव सागरनी पारे प्रभुजी उतारजो समता. ॥ ४ ॥
बाळ तमारो कहीने प्रभु बोलावोरे,
व्हाला वीर सेवक व्हारे आवजो;
जिनवर दर्शन स्पर्शन करवा रसीयोरे,
अंतरना स्वामीरे करुणा लावजो. समता. ॥ ५ ॥
म्हारो करी बोलावो हस्त ग्रहीनेरे,
सेवकने तारेरे शोभा आपनी.
बुद्धिसागर वीर जिनेश्वर तारोरे,
भक्ति एक साचीरे, वीर मावापनी. समता. ॥ ६ ॥

पिंडस्थादिक चार ध्यानने धरीए रे,
वरीए रे धर्म शुकल वे ध्यानने;
आर्त रौद्र वे ध्यान बुरां परिहरीए रे,
तजीए रे माया ममता मानने. अंतर. ॥ ३ ॥
धर्म ग्रन्थने भणीए गणीए भावे रे,
विकथानी वातो लेश न कीजीए;
द्रव्य गुण पर्याये वस्तु विचारी रे,
वस्तुस्वभाव धर्म ग्रहीने रीझीए. अंतर. ॥ ४ ॥
स्थिर उपयोगे ध्यान समाधि वरीए रे,
झळकेरे ज्योति आतमरामनी;
श्वासोश्वासे अजपा जापे स्मरीए रे,
वाटेरे चालो अविचळ धामनी. अंतर. ॥ ५ ॥
आत्मज्ञानथी सत्य समाधि पामोरे;
वामोरे राग द्वेष बे दोषने,
मैत्री प्रमोद करुणा माध्यस्थ विचारो रे;
धारोरे निरुपाधि सुख पोषने. अंतर. ॥ ६ ॥
नय निक्षेपे सामायकने समजी रे;
कीजीए सामायक शिववेलडी,
समतामृतभोजनथी प्रगटे शान्तिरे;
समतानी आगेरे शुं छे? शेलडी. अंतर. ॥ ७ ॥
सिद्ध समा समताथी सर्व जीवोरे;
भटकेरे कर्मथकी संसारमां,
कर्म दोष त्यां जाणी जीव खमावोरे;
समतानो ल्हावोरे मनु अवतारमां. अंतर. ॥ ८ ॥
जाग जाग चेतन तुं सामायकमां रे;
मुंझीश नहि मुसाफर मायाझाळमां,

बुद्धिसागर सामायक उपयोगे रे;
गाळोने जीवन सहु कल्याणमां. अंतर.

श्री वीरप्रभुस्तवनम्.

नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीआं-ए राग.

वर्धमान जिनराम कृपाळु तारजो,
शरणागत वीतराग सेवकने उद्धारजो;
सत्ताए छुं समान अनादि काळथी,
व्यक्तिथी नहि शुद्ध बहिरातम चालथी. वर्धमान
शुद्ध रमणता ध्यानथी सिद्ध प्रभु थयो,
परपुद्गलना रागथी सेवक भव रह्यो;
क्षायिकभावे निश्चय मंगल तें वर्युं,
भावमंगल पद जाण्युं में न अनुसर्युं. वर्धमान.
आविर्भावे रुद्धि थइ तुज शाश्वती,
केवलज्ञाने सत्यवचननी भगवती,
वीर्यशक्ति उपयोग चरणमां लीनता,
तुज सेवनथी गुणगणनी होय पीनता. वर्धमान.
अनुभव दर्शन स्पर्शन जो ढील थाय छे,
त्यारे वीरपणुं झट मन परखाय छे,
अंतर्यामी देव सेव छे ध्यानमां,
परमातमनी सेव खरी छे ज्ञानमां. वर्धमान.
आतमनो उपयोग शुद्ध मुज जागशे,
मिथ्यापरिणति दुष्ट तदा दूर भागशे,
उपशमादिक भाव वीरता आवशे,
बुद्धिसागर जीतनगारां वागशे. वर्धमान.

सुधारो.

धीराना पदनो राग.

सुधारानी वातोरे, नरनारी प्रेम करे,
करणी जेनी रहेणीरे, जगत्मांहि कोइ धरे,
सुधाराना नामे जगमां, बगड्या छे बहु,
देश वेषनी वात न जाणे, तेनी वात शी कहुं.
बाळलग्नहोळीरे, बळीने तेमां बाळ मरे. सुधारा. ॥ १ ॥
देशी जाडां टकाउ वस्त्रो, छोड्यां दीसे आज,
बहुमूलां झीणां परदेशी, वरे नाठी लाज;
शरीरबळे हार्यारे, भारतवासी आज खरे. सुधारा. ॥ २ ॥
मीयां पड्या पण टंगडी ऊंची, राखे फोगट मान;
बोली वणगां फूंके भारे, रहेणीमां नहि तान;
गाजंता मेघ जेवारे, भाषणनी भवाइ करे. सुधारा. ॥ ३ ॥
पदवी पुच्छे पशुओ थावा, मनमां बहु ललचाय,
धनीक विद्वानो स्वार्थी, देशोदय शुं थाय;
रोफ वध्यो भारेरे, खर्च नकामां अरे. सुधारा. ॥ ४ ॥
बी. ए. भण्या के आंखो नबळी, कळवणीमां भेद.
एम. ए. नी आंखे अंधारां, शरीर नबळां खेद;
शरीरनो कुधारोरे, कारज केम एम सरे. सुधारा. ॥ ५ ॥
उडाउ खर्चो खूब वधारे, छेडे धार्मिक पाठ,
सुधरेलानो फांको राखे, ठाली राखे ठाठ;
सुधरेल एवारे, सुधर्या न तेह खरे. सुधारा. ॥ ६ ॥
स्त्री वर्गमां निरखी जोशो, पतिव्रता दुकाळ,
पतिआज्ञाने लोपे ललना, सासुने देवे गाळ,
टापटीप भारेरे, सद्गुण कोइ धरे. सुधारा. ॥ ७ ॥

मिथ्या अभिमाने रे, संसारमांहि दुःख भारी. मनुष्य० ॥३॥
आत्मोन्नति उपायो साचा, जिनवाणी गुरुराय,
आत्मज्ञान वण विद्वत्ता शुं, समज्यार्थी सुख थाय;
बुद्धिसागर वाणी रे, समजशो नरनारी. मनुष्य० ॥ ४ ॥

नृपति कृत्य.

अली साहेली जंगम तीरथ जोवा उभी रहेने-एराग.

शुभ लक्षणथी उत्तम राजा परखो नर ने नारी;
रैयत रंजे धर्म कर्मने धारी सहु सुखकारी,
शुभ नवाब राजा ने राणा, ठाकोरो राज्य करे शाणा;
शुभ राज्य सुधारे छे दाना. शुभ. ॥ १ ॥
विद्या केळवणीमां प्रीति, खर्चे छे लक्ष्मी शुभरीति;
परधनमां दुष्ट न आसक्ति. शुभ. ॥ २ ॥
रैयतने प्रेमथकी पाळे, नृपति कूळवटने अजवाळे;
चोरी जारी दोषो खाळे. शुभ. ॥ ३ ॥
नीतिथी न्याय खरो आपे, प्राणांते चित्त न दे पापे;
नीतिनां वेण न उथ्थापे. शुभ. ॥ ४ ॥
रैयतनी आंतरडी ठारे, देशोदय सेवा चित्त धारे;
शुभ कृत्यथकी रैयत तारे. शुभ. ॥ ५ ॥
औषधशाळा कन्याशाळा, अन्नाश्रम छे मंगलमाला;
एवा राजा जन मन व्हाला. शुभ. ॥ ६ ॥
जे परदारा वेश्या त्यागी, कदी लांच लीए नहि गुणरागी;
शुभमति जेना दिलमां जागी. शुभ. ॥ ७ ॥
जे पापथकी निशदिन डरता, कदी मांसनुं भक्षण नहिं करता;
कदी मुखमां मदिरा नहि धरता. शुभ. ॥ ८ ॥

अक्कलथी पूजाता माणस, अक्कलनी बलिहारीरे. अक्कल. ॥ २ ॥
अक्कलथी सुजे छे सारु, समजो नर ने नारीरे,
वेचाती पण मळती अक्कल, अक्कल वीन खुवारीरे. अक्कल. ३
अक्कलथी तो मीलो सुझी, फोनोग्राफ विचारीरे;
अग्नि गाडी अग्नि नौका, अक्कल हुन्नरक्यारीरे. अक्कल. ४
टोरपीडो पण अक्कलयोगे, अक्कल वात हजारीरे,
अक्कलना दुष्मनथी जगमां, थाय खुवारी भारीरे. अक्कल. ५
दुःखनी क्यारी दुनियादारी, अक्कल वण अवधारीरे,
अक्कलथी समजाव्युं समजे, अक्कल धर्मे सारीरे. अक्कल. ६
अक्कलथी संकटथी छूटे, मतिज्ञान श्रुत धारीरे,
बुद्धिसागर केवलज्ञाने, सिद्ध बुद्ध अवतारीरे. अक्कल. ॥ ७ ॥

नीति.

नीति नीति नीति जगमां, नीति छे सुखकारी रे;
नीतिनी रीतिमां प्रीति, राखो नर ने नारी रे. नीति०
नीतिनी केळवणी मोटी, शांतिनी करनारी रे;
नीतिथी मानवनी कीर्ति, नीति दुःख हरनारी रे. नीति० ॥१॥
राज्यपाट नीतिथी स्थायी, व्यापारे जयकारी रे;
नोकरीमां पण नीति उंची, नीतिनी बलिहारी रे. नीति० ॥२॥
हिंसा चोरी जारी छंडो, बोलो वेण विचारी रे;
जननी सम देखो परनारी, नीति साची धारी रे. नीति०॥ ३ ॥
नीतिथी संपीली दुनिया, नीति वण खुवारी रे;
यम नियम नीति छे साची, नीतिनी करवी यारी रे. नीति० ॥४॥
नीतिथी राजा ने रैयत, पामे सुखनी क्यारी रे;
अनीतिनी लक्ष्मी जल्दी, पाणी पूर जनारी रे. नीति० ॥ ५ ॥

खोटा दस्तावेजो करवा, कुव्रत टेव नठारी रे;
पापण पत्नी ओळववाथी, जाशो जीवन हारी रे. नीति० ॥६॥
अनीतिना पगले चाली, कौरव मूल्या भारी रे;
परनारी हरवाथी रावण, हार्यो संपत् सारी रे. नीति० ॥ ७ ॥
नीतिनी रीति छे न्यारी, सन्तजनोने प्यारी रे;
बुद्धिसागर नीति सारी, मुक्तिपुरनी बारी रे. नीति० ॥ ८ ॥

हिंमत.

हिंमतनी किंमत न जगमां, हिंमत काम करावेरे,
हिंमत धारी कार्य करतां, जय लक्ष्मी झट पावेरे. हिंमत.
हिंमतथी भय सघळा नासे, हिंमत शत्रु हठावेरे,
हिंमतथी मंत्रोने साधे, देवो वशमां थावेरे. हिंमत. ॥ १ ॥
हिंमतथी व्यापारे लक्ष्मी, हिंमत भाग्य जणावेरे,
हिंमतथी युद्धे जय लक्ष्मी, हिंमत शूर चढावेरे. हिंमत. ॥ २ ॥
हिंमतथी कंपे छे पर्वत, हिंमत दान अपावेरे,
हिंमतथी संकट तो नासे, हिंमत कीर्ति वधावेरे. हिंमत. ॥ ३ ॥
हिंमत देवी सेवा साची, जय वाजां वगडावेरे,
हिंमतथी तो दीक्षा देवी, कीर्तिध्वज फरकावेरे, हिंमत. ॥ ४
पाप कर्ममां हिंमत भूंडी, धर्मे हिंमत सारीरे,
धर्म कर्ममां हिंमत धारे, तेनी छे बलिहारीरे. हिंमत. ॥ ५
हिंमत धारी, दुःखो वेठी, आत्मध्यानने ध्यावेरे.
बुद्धिसागर हिंमत धरतां, जग जय मंगल थावेरे. हिंमत. ॥

अभिमान छाजतो नथी.

छप्पयछंद.

छाज्यो नहि अभिमान कोइनो आ दुनियामां;
छाज्यो नहि अभिमान कोइनो मोज मझामां,
छाज्यो नहि अभिमान कोइनो उमर आखी;
छाज्यो नहि अभिमान कोइनो सत्ता राखी,
छाज्यो नहि कदी छाजशे नहि अभिमान महा नीच छे;
बुद्धिसागर समजशो जन निरभिमाने उच्च छे. ॥ १ ॥
राज्य मळ्याथी छाके जे अभिमाने भारी;
रावण जेवा नृपति पण चाल्या सहु हारी,
देह सुकोमल कदली जेवी झट करमाशे;
फूले शुं नृप फोक मळ्युं सहु चाल्युं जाशे,
चक्रवर्ति पण चालिया तो तारो शो जग भार छे;
बुद्धिसागर समज रे नृप धर्म कर्म एक सार छे. ॥ २ ॥
शेठो थइ जे दान न आपे शाना शेठो;
कंजुस थइ पैसाने माटे करता वेठो,
गाडी वाडी ललना धनने देखी म्हाले;
गरीब जन मागे पण तेने कांइ न आले,
धर्म कर्म शुभ सार छे एक समजशो जग शेठिया;
धर्म करणी दान विना तो शेठिया पण वेठीया. ॥ ३ ॥
सत्ता धारी थइने जे जन गरीब दंडे,
अभिमानना तोरे फूली नीति छंडे;
गरीब जननुं बुरु ताके ते नहीं सारा,
सत्ताधिकारी एवा तो जग जाण नठारा;
अभिमान करशे जगतमां तेज दुःखी जाणजो,
बुद्धिसागर समजीने शिख सत्य मनमां आणजो. ॥ ४ ॥

रहनेमि मुनिवर वैरागी, तेने पण भरमाव्यारे;
पडिया पंडित मुनिवर मोटा, आपणमां जे डाह्यारे. काम. ॥१३॥
जुओ कबुतर चकली जोडां, विषय वासना भोगीरे;
मारा वेगे अंधा सर्वे, बाळा बुड्ढा योगीरे. काम. ॥ १४ ॥
नाच नचावुं दुनियाने हुं, विविध करावुं चाळारे;
इन्द्र चंद्रने नागेन्द्रादिक, भूल्या सहु धाराळारे. काम. ॥ १५ ॥
माराथी दुनिया सहु चाले, वीरला केइक छुटयारे,
मारी निंदा करता जनने, दाव पेचथी कूटयारे. काम. ॥१६॥
ब्रह्मचारिनुं नाम धरावी, जे जन मनमां फुलेरे;
ते पण दीलमां मुजने राखे, चारगतिमां झूलेरे. काम. ॥१७॥
डाह्या डमरा पंडित साधुं, तेना दीलमां पेसुरे;
भूत तणी पेठे भरमावुं, लाग जोइने वेसुरे. काम. ॥१८॥
लाख चोराशी जीवायोनि, तेमां मारो वासो रे;
भला भलाने पीसी नाखुं, मारो ओर तमासोरे. काम. ॥१९॥
कालीने भैरवथी मोटो, सहुने हुं धुणावुं रे;
काळी भैरवने धुणावुं, नाम जगत्मां चावुंरे. काम. ॥२०॥
मुजथी चोखा कोइ न जगमां, काळ अनादि संगीरे;
मारा जोरे कोइ न वचिया, मोह पिपासा रंगीरे. काम. ॥२१॥
मारी पूजा करवा माटे, घरमां लावे लाडीरे;
गाडी वाडीमां मस्ताना, केइक पीवे ताडीरे. काम. ॥२२॥
त्रेवीस विषयो मारा पुत्रो, ते पण मारा जेवा रे;
जगमां ज्यां त्यां तेनी पूजा, जगमां जेवा देवारे. काम. ॥२३॥
जटाधारी लिंगनी पूजा, करतां नरने नारीरे;
मारा माटे तेनी पूजा, वात भली शणगारीरे. काम. ॥२४॥
ब्रह्मा विष्णुने सपडाव्या, वळी जोशो महादेवारे;

सूर्य बुधने जोइ लेशो, भरमाव्या छे एवारे. काम. ॥२५॥
व्यास रुषि पण वशमां लीधा, केइक रुषि पंजेव्यारे;
ललनानी लालचमां लोको, लाज तजी थया घहेलारे. काम.२६
केइक स्त्रीओने पीडयाथी, रात्री नदी तरंतीरे;
पंच बाणथी विंध्याथी केइ, अग्नि वण बळंतीरे. काम. २७॥
राधावेधी महारथीओए, पृथ्वी वशमां कीधी रे;
तेवानी पण थोळे दहाडे, लाज स्हेजमां लीधीरे. काम. ॥२८॥
फुंकेथी पर्वत उडाडे, पादे मही धुजावेरे;
तेवा पण मारा छे चाकर, परवशताने पावेरे. काम. ॥२९॥
आषाढाभूति आचार्य, जेनी मोटी सत्तारे;
भोगावलिथी वशमां कीधा, खवराव्या में खत्तारे. काम. ॥३०॥
पुनर्लग्नमां मारी सत्ता, मारा माटे परणेरे;
मारा सामा उठया तेने, कीधा मारा शरणेरे. काम. ॥३१॥
बाळलग्ननी होळी मोटी, ते पण में सळगावीरे;
नाना बाळकने होमीने, मुज सत्ता वर्तावीरे. काम. ॥३२॥
दांत पडयाने आंखे ओछा, देखे धरडा डाह्यारे;
माथे पळीयां आवेलाने, वृद्ध विवाहे छाया रे. काम. ॥३३॥
एक छतां पण बीजी परणे, त्रीजी परणे नारीरे;
तेमां पण मारी छे सत्ता, जीवो जाता हारीरे. काम. ॥३४॥
ब्रह्मचारी संन्यासी योगी, जेनी कीर्ति मोटीरे;
स्वप्नामां पण धात जवाथी, वगडे छे लंगोटीरे. काम. ॥३५॥
मारा वणतो पुत्रो क्यांथी, मारा वण नहि बापारे;
मारा वण दुनिया नहि चाले, मारा ज्यां त्यां छापारे. काम.३६
गोर करे छे बाळीकाओ, तेपण मारा माटे रे;
मारा माटे नोकर रहेवुं, वेसे रुडा हाटे रे. काम. ॥ ३७ ॥

तप तपता जन मारा माटे, करवत लेवे-काशी रे;
हीमाळो गळता जन कोइ, मारा माटे फांसी रे. काम. ॥ ३८ ॥
दोडे छे केइ मारा माटे, केइकने दोडावुं रे;
मारा वशमां लावी जनने, ललना पाय पडावुं रे. काम. ॥३९॥
मारा उपर जेवी प्रीति, तेवी क्यांय न दीठी रे;
मारी वातो जोशो जगमां, सहुने लागे मीठी रे. काम. ॥४०॥
पाटण धणीनुं राज्य पडाव्युं, परनारीना प्रेमे रे;
करण राजा घेहलो जगमां, तेपण मारा नेमे रे. काम. ॥४१॥
हिंदु राज्यतणी जे दीप्ती, तेपण जुओ पडावी रे;
मुसलमानमां फाटफुटा, तेपण में गगडावी रे. काम. ॥ ४२ ॥
क्षत्रियोनुं राज्य पडाव्युं, मुसलमानने मार्या रे;
मराठाने नवाब राजा, राजपाट सहु हार्या रे. काम. ॥ ४३ ॥
कोटी धननो नाश करीने, नचावता केइ वेश्या रे;
मारा वेगे तपिया केइक, मोकलता संदेशा रे. काम. ॥ ४४ ॥
प्यारी प्यारी हुं बोलावुं, प्राणपति बोलावुं रे;
मारा महिमानी ख्यातिमां, नाटकने विरचावुं रे. काम. ॥४५॥
काव्य करीने केइक कवियो, मारां गाणां गावे रे;
शृंगार रसमां लदबद थइने, केइक खत्ता खावे रे. काम.॥ ४६ ॥
तोपोथी रणशूरो केइक, मारे अग्नि गोळा रे;
तेपण मारा वशमां आव्या, देखी ललना डोळा रे. काम. ॥४७॥
चार वेदना ज्ञाता पंडित, वाद विवादे फरता रे;
तेने पण में वशमां लीधा, ललनाने करगरता रे. काम. ॥४८॥
केइक चलवी डाकडमाळो, गुफामां जइ वेठो रे;
तुर्तवारमां लाग ताकीने, तेना दीलमां पेठो रे. काम. ॥ ४९ ॥
क्षय रोगी में केइक कीधा, केइ बनाव्या गांडा रे;



मन परिणामे वाचा काया, उपर सत्ता भारी रे;
स्वप्नामां धातु जावाथी, काया होय नठारी रे. काम. ॥ ६३ ॥
माराथी दोषी छे मनमां, जगमां नरने नारीरे;
मनथी सृष्टि मनथी मुक्ति, मन दोषे संसारीरे. काम. ॥६४॥
रुषभादिक चोवीश तीर्थंकर, जीत्या मुजने देवारे;
ते माटे ते जिन कहेवाया, पाम्या मुक्ति मेवारे. काम. ॥६५॥
तेना भक्तो सुरिवर वाचक, साधु मंडळ मोटुंरे;
युक्तिथी ते जीते मुजने, वेंण कहुं नहि खोटुंरे. काम. ॥६६॥
चौदभुवनमां मारी सत्ता, ज्यां त्यां मारी वातोरे;
रावण जेवा महीपतिने, हुं मारु छुं लातोरे. काम. ॥६७॥
मारा जेवो वळी नहि को, शत्रुने संहारुरे;
काळ अनादि राज्य अमारुं, नहि कोने गणकारुंरे. काम. ६८
मुजने जीत्या कोइ न योद्धा, दुश्मनने झट मारुंरे;
प्रचंडयोद्धो हुं दुनियामां, कोइ थकी नही हारुंरे. काम. ६९
शीयल योद्धो वात सुणीने, करी गर्जना बोलेरे;
मारा आगळ काम करे शुं, नहि कोइ मारा तोलेरे. शीयल.७०
तारां मारां लक्षण जुदां, तुं छे दुःखनो दातारे;
तारा वशमां भलुं न कोनुं, प्राणी दुःखडां पातारे. शीयल.७१
भूंडुं करवामां दुर्जनता, तारी नजरे दीठीरे;
दुर्जननी शक्ति छे भूंडी, जेवी फांसी चीठीरे. शीयल. ॥७२॥
पशु पंखीमां तारो वासो, तेमां शुं छे सारुरे,
तारा संगे खत्ता खावे, मनडुं होय नठारुंरे. शीयल. ॥ ७३ ॥
मारी संगत सुखकर मोटी, शाश्वत सुखडां आपुंरे,
मारा भक्तोने हुं क्षणमां, मुक्तिपुरीमां थापुंरे. शीयल. ॥ ७४ ॥
योगी यति संन्यासी त्यागी, तुज संगतथी दुःखीरे,

पतिव्रता द्रौपती शाणीनां, संसद्मां चीर ताण्यांरे,
मारा तेजे देवोए तो, पूर्यां वस्त्र मजानांरे, शीयल. ८८
सुभद्राए ब्रह्मचर्यथी, जाती कीर्ति राखीरे,
द्मयंतीए पतिव्रताथी, उमर काढी आखीरे. शीयल. ८९
शीयलना प्रतापे सतीओ, शाश्वत सुखमां म्हालेरे,
मारा संगे वचनसिद्धियो, कर्म दोषने खालेरे. शीयल. ९०
मोटा ज्ञानी साधु त्यागी, शीयल तेजे दीपेरे,
तारा तेवीस पुत्रोने तो, क्षणमां ध्याने जीपेरे. शीयल. ९१
कामीने निष्कामी बनावी, शिवपुरमां पहोंचाडुंरे,
तारु त्यां तो कांइ न चाले, दूर रहे तुज धाडुंरे. शीयल. ९२
तुज संगतथी दुःखी जीवो, मारा शरणे आवेरे,
द्रव्यभावथी मुज संगतथी, सहेजे शिवपुर जावेरे. शीयल. ९३
त्यागी साधु हृदये पेसी, करतो तुंतो चोरीरे,
मारी नजरे पडतां तारी, कांइ न चाले जोरीरे, शीयल. ९४
जटाधारिने लिंगनी पूजा, ते पण मुज वियोगेरे,
मारी संगत थातां जीवो, कामवेगने रोकेरे. शीयल. ९५
ब्रह्मा विष्णुने सपडाव्या, मारा संग अभावेरे,
मारी नजरे पडतां पामर, वळी भस्म झट थावेरे. शीयल. ९६
सूर्य चंद्र ने व्यास रुपि पण, तुज संगतथी पडियारे,
मारा शरणे आव्या तेतो, तुर्त वारमां चडियारे. शीयल. ९७
मुज संगतविहीन रुपिने, पापी तुं पंजेळेरे,
मुजने वोळाव्याथी पामर, पाछुं पगलुं मेलेरे. शीयल. ९८
निर्बळ जन पण मुज संगतथी, बळीया जगमां गाजेरे,
फुंकेथी पर्वत उडाडे, ते पण मारा राजेरे. शीयल. ९९
तारा संगे नवळो थावे, नवळाइ त्यां तारीरे;

नवळानी संगतथी नवळा, जगमां नरने नारीरे. शीयल. १००
काळ अनादि निर्बळ जीवो, तेने सवळा करवारे;
मोटाइ तेमां छे मारी, जीवना संकट हरवारे. शीयल. १०१
भोगावलीथी लेशुं तारु, लेनो त्यां न वडाइरे;
तीर्थकरोए वाल्यो तुजने, जोने तुज नवळाइरे. शीयल. १०२
काळी ने भैरवथी मोटा, एवा तुजने वाकुंरे;
स्थूलिभद्रनी आगळ तारुं, वदन थयुं छे कांकुंरे. शीयल. १०३
स्थूलिभद्रजीए खूब पीटयो, नाठो बूमो पाडीरे;
जुओ सुदर्शन शेठे कूटयो, विजय शेठ शेठाणीरे. शीयल. १०४
मोहीनी आगळ तुं फावे, मारा आगे नासेरे;
अंधारानी पेठे क्षणमां, नासे रवि प्रकाशेरे. शीयल. १०५
पुनर्लग्नने वाळलग्नमां, तारुं जोर जणावेरे;
मारो महिमा सांभळवाथी, तारुं जोर न फावेरे. शीयल. १०६
तारा दोषो जे जन देखे, तेतो तुजथी भागेरे;
मारा शरणे आवे त्यारे, जयडंको झट वागेरे. शीयल. १०७
तुज संगतथी मुक्ति न मळती, तुज संगतथी दुःखोरे;
तुज संगतथी जन्म जरा छे, तुज संगतथी भूखोरे. शीयल.१०८
काम काम काम तारी, संगतथी दुःख भारीरे;
चौदभुवनमां दुःख देनारो, तारी बुरी यारीरे. शीयल. १०९
हीमाळो गळवाने माटे, मनुष्यने ललचावेरे;
अनंतगुणनो छे तुं घातक, भवभवमां भटकावेरे. शीयल. ११०
पाटण दीली राज्य पडाव्यां, बूरी तारी शक्तिरे;
मूर्ख मनुष्यो समज्या वण तो, करता तारी भक्तिरे. शीयल.१११
प्यारी माणपनी बोलावे, ए पण तारी मायारे;
भ्रांतिथी भूल्या जीवोने, फोगट तें ललचाव्यारे. शीयल. ११२

मारामां शक्ति छे मोटी, मारो ओर झपाटोरे;
मारी नजरे पडतां तारो, काढी नांखुं आटोरे. शीयल. ११३
दाव पेचमां आव्याथी तो, क्षणमां पीसी नाखुंरे;
तुजने जीत्या सिद्ध अनंता, वशमां करीने राखुरे. शीयल. ११४
मारो महिमा जगमां मोटो, मुजथी जगमां शांतिरे;
मुजने सेव्याथी माणसनी, वधती शरीरकांतिरे. शीयल. ११५
मारा संगे कीर्ति कमळा, मारा संगे पुष्टिरे;
मारा संगे सवळा जीवो, अखूट लक्ष्मी तुष्टिरे. शीयल. ११६
मारी संगतथी तो जाणो, रंक जनो पण राजारे;
मारी संगत करवामां तो, प्रेम जनोना झाझारे. शीयल. ११७
अष्टसिद्धि नवनिधि प्रगटे, संकट वेळा टळतीरे;
ब्रह्मचारिना आशीर्वादे, भाग्य वेळा झट वळतीरे. शीयल. ११८
शरीरसंपत्तिमां पहेलो, केळवणीमां पहेलोरे;
नीति केळवणीमां पहेलो, मुक्तिपुरीमां वहेलोरे. शीयल. ११९
मुजसंगतथी नरनारीनी, कीर्ति प्रसरे सारीरे;
सन्तजनोमां मारी पूजा, जोशो दील विचारीरे. शीयल. १२०
ब्रह्मचर्यना नाम थकी जग, ज्यां त्यां मुजने गावेरे;
चोसठ इन्द्रो मुजने वंदे, ज्ञानीजन मन ध्यावेरे. शीयल. १२१
तुज सेव्याथी कदी न तृप्ति, उलटां दुःखो थावेरे;
काष्टोथी अग्निनी पेठे, शांति कदी न आवेरे. शीयल. १२२
काव्य करीने पामर कवियो, तारां गाणां गावेरे;
गंदी कायामां शुं सारु, समजु मनमां आवेरे. शीयल. १२३
चार वेदना ज्ञाता पंडित, पण माया मस्तानीरे;
तारा फंदामां सपडाता, पण भूले नहि ज्ञानीरे. शीयल. १२४
केइक देवो अवळा राखे, ते पण भूल्या भारीरे;

तीर्थंकरनी वाणी साची, त्रण भुवन तो मानेरे. केव. १५०
केवल ज्ञाने जिनवर देवा, वाणी सत्य प्रकाशेरे,
सत्य तत्त्वने ज्ञाने कहेवे, ज्ञाने सत्य तो भासेरे. केवल. १५१
पापी काम जगत्मां भारे, जन्म मरण दुःखदातारे,
सर्व गुणोमां शीयल मोटो, आपे सुख ने शातारे. केवल. १५२
तीर्थंकर शीयल आराधे, क्षायिक गुणने साधेरे,
द्रव्यभावथी शीयल सार्चु, पाळे गुणगण वाधेरे. केवल. १५३
शीयल सार्चु शुद्ध रमणता, द्रव्य ते भाव निमित्तरे,
भाव शील शुद्धातम साधे, प्राणी होय पवित्ररे. केवल. १५४
निश्चयथी ब्रह्मचर्य धर्याथी, क्षणमां होवे मुक्तिरे,
निश्चयथी निजगुणमां रमवुं, ब्रह्मचर्यनी युक्तिरे. केवल. १५५
तप जप दान थकी पण शीयळ, जाण जगत्मां मोटुंरे,
द्रव्य शीयल पण भाव शीयलनी, आगळ जाणो छोटुंरे. केवल.
केवली कोटी जीव्हाथी पण, ब्रह्मचर्यने गावेरे,
तोपण महिमा पार न आवे, वस्तु सत्य जणावेरे. केवळ. १५१
सर्व गुणोमां ब्रह्मचर्यनो, महिमा जगमां भारेरे,
द्रव्यभाव शीयल छे मोटुं, भवजल पार उतारेरे. केवल. १५८
ब्रह्मचर्यनी त्रण भुवनमां, कीर्ति रही छे गाजीरे,
सद्गुणदृष्टि दीलमां धारी, रहेशो मनमां राजीरे. केवल. १५९
जय जय बोलो ब्रह्मचर्यनी, होवे मंगलमाळारे,
ब्रह्मचर्यथी मुक्ति वधु झट, अर्पे कंठे माळारे. केवल. १६०
परखो मनमां सत्य वातने, अनुभव सुखना प्यासीरे,
शिवसुंदरी पण ब्रह्मचर्यनी, जाणो जगमां दासीरे. केवल १६१
गाम माणसा सुंदर शोभे, माम कल्प करी भावेरे,
बुद्धिसागर गुरुभक्तिथी, मनमां आण्युं गावेरे, गाम. १६२

श्रीसंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, मंगल माला करशेरे,
भणनारा गुणनारा भक्तो, परम प्रभुता वरशेरे. श्री. ॥ १६३ ॥

आत्मज्योति.

धीरानो राग.

जागी झळहळ ज्योतिरे, शोधी लीधुं सत्य मोति;
खलकमां अलखनेरे, फाड्यो मेंतो झट गोती. जागी.
अनंतज्ञानी असंख्यप्रदेशी, चिदानंद घनराय,
अनुभव नयणे नीरखी नेहे, बीजाने न कहाय;
कुमति तो नाठीरे, आघे जइ बहु रोती. जागी. ॥ १ ॥
प्रेम करीने प्रेमी परख्यो, परख्यो आपोआप,
पंचभूतथी न्यारो नक्की, शमिया सहु संताप;
भ्रमणानी खोटीरे, उतरी छे पनोती. जागी. ॥ २ ॥
बीजके झबूके मोति, परोइ ले हुशियार,
शुद्ध चेतना क्षयोपशमनी, बीजली चमके सार;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे, लोकालोक विण्णोति. जागी. ॥ ३ ॥

" संकटमां समता "

धीराना पदनो राग.

संकट पडे समतारे, राख जीव धैर्य धरी;
सुख दुःख कारणरे, कर्म एक दील धरी. टेक.
सुख दुःख वादळछाया पेठे, क्षणमां आवे जाय;
निमित्त कारण अन्यजनो त्यां, क्रोध कहो केम थाय.
धर्मीनी कसोटीरे संकट क्षण भव्य खरी; संकट. ॥ १ ॥
ताप पडयाथी मेघज वरसे, संकट समये धीर,

संकटनी शाळामां भणतां, थावे प्राणी वीर;
श्रद्धानी कसोटीरे, संकट पडे वीरे वरी. संकट. ॥ २ ॥
संकट वेळा उत्सव सरखी, गणता उत्तम जन;
मेरु डगे पण दील डगे नहीं, श्रद्धा राखे मन,
सुख दुःख वेळारे क्षणे क्षणे आवे फरी. संकट. ॥ ३ ॥
प्राण पडे पण तजो न समता, अंते मर्त्तुं थनार,
उच्चाशयथी उच्च थशो सहु, समजो नर ने नार;
बुद्धिसागर समतारे, जग जय विजय करी. संकट. ॥ ४ ॥

देहमां दीवो.

ॐ नमः

राग धीरानापदनो.

देहमां छे दीवोरे, झळहळ ज्योत करनारो,
अनादि प्रकाशीरे, अज्ञान तम हरनारो. टेक.
असंख्यप्रदेशी नित्य स्वरुपी, अनंत गुण आधार,
सहजानंदी शर्ङ्गजय छे. देह पिंड करनार;
जोगीनो पण ते जोगीरे, तारे ने पोते तरनारो. देह. ॥ १ ॥
अनंत नाम धरीने ध्यावे, दुनियां जेने खास;
सर्वविश्व ने सहुथी अळगो, लोकालोक प्रकाश,
एवो इश पोतेरे क्षायिकभाव वरनारो. देहमां. ॥ २ ॥
पिंडमां पिंडमां अनंत व्यक्ति, चिद्घन चेतन राय;
क्षीर नीरनी पेठे व्याप्यो, योगीश्वर दिल ध्याय,
प्रेमीनो पण ते प्रेमीरे, अनेक दुःख हरनारो. देहमां. ॥ ३ ॥
दिल्मां ध्यावो टेडे चर्मीयो, ज्ञाता ज्ञेयस्वरुप;
बुद्धिसागर चिद्घन चेतन, बर्ने रुपारुप,
अनादिनो योगीरे, प्रगटपणे योगी खरो. देहमां. ॥ ४ ॥

सर्वनुं सारु थाओ.

राग धीराना पदनो.

सारुं सहुनुं थाशोरे, सर्वने लागो सत्य प्यारुं,
उच्च सर्वे थाशोरे, दुनियां कुटुंब मारुं;
शान्तिमय दुनिया सहु थाओ, सुखिया थाओ सर्व,
निन्दक जननी निंदा टळशो, नासो जनना गर्व.
परोपकारे पगलुंरे, भरो सहु अणधार्युं. सारुं. ॥ १ ॥
दयागंगमां जगजन झीलो, टळजो सर्वे पाप,
शत्रु मित्रपर समान बुद्धिनी, जन मन वर्तो छाप;
कलेश सहुटळशोरे, धर्मकृत्य करो सारुं. सारुं. ॥ २ ॥
अनंत सुखडां पामो जगजन, थाशो जन कल्याण;
धर्ममेघनी दृष्टि थाशो, ऊगो सत्यनो भाण.
क्षमामय पृथ्वी थाशोरे, टळशो सर्वे नठारुं. सारुं. ॥ ३ ॥
अशुद्ध आचारो विचारो, टळशो वेगे खास,
दुनिया धर्ममयी सहु थाशो, थाशो मिथ्यात्वनो नाश;
सन्तजनोनी सेवारे, थाजो शुभ मन धार्युं. सारुं. ॥ ४ ॥
धर्म भेदनो खेद टळो सहु, आत्मिक श्रद्धा थाओ,
अनंतशक्ति जीवनी प्रगटो, मंगळपद सहु पाओ.
बुद्धिसागर भावेरे थाओ दील अजवाळुं. सारुं. ॥ ५ ॥

मोह उंघ.

" राग धीराना पदनो "

मोह ऊंघ मोटीरे, जीवलडा तुं जो जागी;
मोहे दुःख मोटां रे, विचार जीव वैरागी. टेक.
शो पैशामां प्रेमज करवो, शो रामामां राग,

नात जातमां कांइ न तारुं, धर दिलमां वैराग्य;
विवेकथी विचारीरे थातुं मनमांही त्यागी. मोह. ॥ १ ॥
शाने माटे पाप करेछे, फोगट भूले भव्य;
आतम ते परमातम साचो, करवुं ते कर्तव्य,
चेतन चित्त चेतोरे, समजलें सोभागी. मोह. ॥ २ ॥
चोरी जारी चुगली निंदा, हिंसानो कर त्याग,
दगा प्रपंचो सर्वे छंडी, धरशो धर्मनो राग;
बुद्धिसागर प्रेमेरे, लय प्रभु गुण लागी. मोह. ॥ ३ ॥

चेतजीव.

" धीराना पदनो राग "

जीवलडा चेती लेजेरे, वखत वद्यो जाय छे;
मोहमां शुं मुंझयोरे, भूलण शुं भुलाय छे. जी० टेक.
आधि व्याधि उपाधिथी, जनमां वर्ते दुःख,
लाख चोराशीमां बहु दुःखो, क्यांय न वर्ते सुख;
भूलथी भूलेलारे भव भटकाय छे. जीव० ॥ १ ॥
पर वस्तुथी कदी न शान्ति, निश्चय मनमां धार;
परने पोतानु मान्याथी, थाशे न सुख लगार,
लाकडनो लाडु खातां तो पामर पस्ताय छे. जी० ॥ २ ॥
मृगनी नाभीमां कस्तुरी, पण शोधे छे बहार,
अंतरमांहि सुख घणुं छे, भूले जीव गमार;
भटके छे भारीरे, खत्ता घणा खाय छे. जीव० ॥ ३ ॥
भृगजळना बाचक भरतां, कांइ न आवे हाथ;
मृगजळ तृष्णामां लोभातां, कांइ न आवे साथ,
ज्ञानीपोण गाधुंरे, समजुने समजाय छे. जीव० ॥ ४ ॥

भवजंजाले सुखनी भ्रांति, राखे नाहक लोक,
स्वप्नानी सुखलडी जेवी, दुनीयांबाजी फोक;
बुद्धिसागर ज्ञानेरे परमपद पाय छे. जीव० ॥ ५ ॥

प्रभुस्वरूप.

धीराना पदनो राग.

प्रभुनुं रुप पेखीरे, सात धात रंगाणी;
प्रभुनुं रुप न्यारुं रे, जाणे प्रेम मस्तानी. टेक.
असंख्यप्रदेशी निर्भय देशी, रुपारुप सुहाय,
साकार साचो निराकार पण, अनुभवथी ए जणाय;
प्रभुनी शक्ति साचीरे, लीधी ध्यान थकी ताणी. प्र० ॥ १ ॥
काल अनादि देह सृष्टिनो, कर्त्ता पर प्रयोग,
अनंत निजगुण सृष्टि कर्त्ता, चेतन शुद्ध प्रयोग;
बुद्धिसागर प्रेमेरे, प्रभुनी वात परखाणी. प्र० ॥ २ ॥

उपाधिमां दुःख.

राग धीराना पदनो.

उपाधि दुःखदायीरे, उपाधिथी छे गोटा;
उपाधिमां भ्रांतिरे, थाय नहि कोइ मोटा. उपाधि०
उपाधि छे मोटी व्याधि, मन चंचल करनार,
उपाधिथी अनेक वांका, शांति सुख हरनार;
उपाधिथी मोटारे, जुओ जगमां छोटा. उ० ॥ १ ॥
दुःख दावानळ छे उपाधि, भूलावे निज भान,
दुनियांदारीमां लपटावे, उपाधि दुःखखाण;
उपाधि अंधारुंरे. उपाधिना नहि जोटा. उ० ॥ २ ॥

कोइक जीव समजेरे, श्रद्धाथी गुरुवाणी.
झळहळ ज्योत जागीरे, गगन गढ टेराणी,
अलबेलाने परख्योरे, ज्योतिमां ज्योति समाणी. झळ० ॥६॥

सदाचार.

राग धीराना पदनो.

सदाचार सेवेरे, मंगल पद पावे,
दोषद्वन्द नासेरे, परम पद सुख थावे, सदा. टेक.
टीलां टपकां छाप लगावो, घालो कंठे माळ,
नीतिना सद्गुण धर्या विण, कदी न थाय कल्याण;
मननी सारी चालेरे, जीव शिवपुर जावे. सदा. ॥ १ ॥
मननी शुद्धि आपे रुद्धि, मननी शुद्धि सत्य;
मननी शुद्धि मुक्ति आपे, मन शुद्धि शुभ कृत्य.
शुद्ध चित्त धारेरे, संवर पद झट आवे. सदा. ॥ २ ॥
मन सुधर्याथी सर्वे सुधरे, मन मरवाथी मुक्ति;
आपोआप स्वरूपे खेले, ए अंतरनी युक्ति,
खराखरीनी वातोरे, ज्ञानीयोना मन भावे. सदा. ॥ ३ ॥
शुद्ध चित्तथी निर्मळ भक्ति, शुद्ध चित्तथी ध्यान;
बाहिर दृष्टि बाहिर शोधे, जेने नहि निज भान.
खांड वेराणी धूळमांरे, कीडी गण वीणी खावे. सदा. ॥ ४ ॥
बाहिर आशा परिहरिने, करवुं निर्मळ चित्त;
अंतरनो अलबेलो सेवी, थावुं शुद्ध पवित्र;
बुद्धिसागर प्रेमेरे, वस्तु स्वरुप गावे. सदा. ॥ ५ ॥

अंधारे अथडाता ज्यां त्यां, लाख चोराशी मझार.
मोहथी हठीलारे, झट दुरगति जाता. दृष्टि. ॥ १ ॥
अंधाधुंधी दृष्टिरागे, मगर टेकनी चाल,
पकड्युं पोते ते छे साचुं, बाकी मिथ्या झाळ;
माने एम जूठुंरे, वळी मन हरखाता. दृष्टि० ॥ २ ॥
काम रागने स्नेह रागनो, होवे जल्दी नाश;
दृष्टि राग तजवो दुष्कर जग, तेना अवळा पास,
जाणे पण नहि मानेरे, मिथ्या मदमांहि माता. दृष्टि. ॥ ३ ॥
दृष्टि रागथी सत्य न जडशे, भूलाशे निज धर्म;
दृष्टि रागमां घेराएला, बांधे उलटां कर्म;
वस्तुना स्वभावेरे, धर्म तेने नहि पाता. दृष्टि. ॥ ४ ॥
दृष्टि रागथी जे मूकाया, धन्य तेनो अवतार,
सत्य विवेके साचुं परखे, संतो पामे सार;
बुद्धिसागर भावेरे, ज्ञानी जन परखाता. दृष्टि० ॥ ५ ॥

" गाडरीयो प्रवाह "

" धीराना पदनो राग "

गाडरीया प्रवाहेरे, लोक अरे चाले छे;
पोतानी मति ताणीरे, मनमांहि म्हाले छे,
सार असार न जाणे कांइक, करे न तत्त्वविचार;
अंधाने दोर्यो अंधे जेम, चाले जगमां गमार,
धामधूमे मोह्यारे, धर्म पन्थ खाळे छे. गाडरी. ॥ १ ॥
भाषा ज्ञाने भरमाता केइ, राखे पंडित डोळ,
गंभीर जिन वचनो नहि जाणे, चलवे मोटी पोल;
सामासामी निंदेरे, द्वेषे दिल बाळे छे. गाडरी. ॥ २ ॥

अनुभव वण अंधानुं टोळुं, चलवे छे पाखंड,
मूर्खजनोनी आगळ फावे, राखे जूठ घमंड;
दृष्टिरागे खूंचीरे, पामर सुख हारे छे.   गाडरी. ॥ ३ ॥
कपटी पाखंड चलवे भारे, अज्ञजनो सपडाय,
कलियुगमां कपटीनी पूजा, ज्यां त्यां नजरे जणाय;
संतोपर भाव ओछोरे, कोइक तो विचारे छे.गाडरी. ॥ ४ ॥
संतसमागम करशे जे जन, ते लेहेशे सुख सार,
बुद्धिसागर चित्तमां चेती, पोताने तुं तार;
अनुभव ज्ञानेरे, सत्य पन्थ भाळे छे.   गाडरी. ॥ ५ ॥

ॐकार स्तुतिः

छप्पय छंद.

ॐ नमः मंगल सुखकारी जग जयकारी,
ॐ नमः मंगलपदनी जगमां बलिहारी;
ॐ नमः अजरामर अनंत शक्ति विलासी,
ॐ नमः परमेश्वर शक्ति सत्य प्रकाशी.
ॐकार ध्याने आत्म शक्ति प्रगटनी जगमां खरी,
बुद्धिसागर प्रणव मंगल ध्यानथी सिद्धि वरी. ॥ १ ॥
आगम निगमनो सार प्रणव ॐकार विचारो,
परब्रह्मनी शक्ति खीलववा मनमां धारो;
चित्त दोषनो नाश करे छे जाप कर्याथी,
सात्त्विक शक्ति प्रगटावे छे ध्यान धर्याथी.
अलख अगोचर रूप वरवा प्रणव साचो मंत्र छे,
बुद्धिसागर सत्य निर्भय देश वरवा यंत्र छे ॥ २ ॥

सम्यग् लही वाच्यार्थ हृदयमां रटना धारो,
अनंत कर्म कटाय प्रणवथी चित्त विचारो;
सालंबन छे ध्यान प्रणवनुं शास्त्रे भाख्युं,
धरी प्रणवनुं ध्यान योगियोए सुख चाख्युं.
ॐकार मंगळ आद्य छे जग श्वासोश्वासे ध्याइए,
बुद्धिसागर शिव सनातन सिद्ध लीला पाइए. ॥ ३ ॥
हृदयकमलमां प्रणव स्थापना प्रेमे करीये,
कोटी भवनां पाप घडीमां क्षणमां हरीए;
प्रगटे लब्धि चित्र वचननी सिद्धि थावे,
अन्तर त्राटक सिद्ध करे ते स्थिरता पावे.
आत्मशक्ति खीलववाने, ॐकार अर्थ विवेक छे,
बुद्धिसागर प्रणव मंगल ध्यान साची टेक छे. ॥ ४ ॥
आनंद अपरंपार हृदयमां झळके ज्योति,
असंख्यप्रदेशी चिद्घन चेतन परखे मोती;
नासे माया दूर हृदयमां ब्रह्म प्रकाशे,
परम भावनी ध्यान दशामां हंस विकासे;
प्रेमप्रशाला दीलप्याला ब्रह्मअमृत पीजीए,
बुद्धिसागर ब्रह्मलीला पामी निशदिन रीझीए. ॥ ५ ॥
प्रणवमंत्रथी निंदा विकथा दोष टळे छे,
प्रणवमंत्रथी अष्ट सिद्धिओ तुर्त मळे छे;
प्रणवमंत्रथी संयम शक्ति प्रगटे सारी,
प्रणवमंत्रथी झळहळ ज्योति जगजयकारी,
प्रणवमंत्र ॐकारमां दिलमां ध्यातां सुख भासतुं;
बुद्धिसागर प्रणवमंत्र सत्य तत्त्व प्रकाशतुं. ॥ ६ ॥
नाभिकमलमां प्रणव मंत्रने प्रेमे स्थापो,
स्थिरता अंतर्मुहूर्त्त थवाथी टळे वळापो;

निर्विकल्प उपयोग धरी चेतनने तारो;
आत्मजीवन उच्च करवा प्रणव सत्योपाय छे,
बुद्धिसागर प्रणवमंत्रे सहज लीला थाय छे. ॥ ११ ॥

प्रणवमंत्रथी चित्ततणा सहु दोष टळे छे,
प्रणवमंत्रथी सात्त्विक गुणमां चित्त मळे छे;
प्रणवमंत्रथी संयमनी प्रगटे छे सिद्धि,
प्रणवमंत्रथी आत्यंतिक सुखनी छे रुद्धि;
प्रणवमंत्रे स्वप्न निर्मल देव दर्शन थाय छे,
मोहग्रंथी भेद थातां शक्ति झट परखाय छे. ॥ १२ ॥

हृदयकमळमां स्थिरोपयोगे ध्यान खुमारी,
हृदयकमळमां स्थिरोपयोगे शिव तैयारी;
हृदयकमळमां स्थिरता साधी शिवपद लीजे;
प्रणवमंत्रने हृदयकमळमां नित्य वहीजे,
असंख्यप्रदेशी आत्मदर्शन कीजीए प्रेमे सदा,
बुद्धिसागर आत्मदर्शन स्थिरोपयोगे छे मुदा. ॥ १३ ॥

पश्यंति प्रगटेछे त्राटक योगे साची,
हृदय कमळमां ध्यान धरीने रहेशो राची;
शुद्ध विचारो परातणा पण प्रगटे साचा,
पश्यंति प्रगटयाथी निर्मल साची वाचा.
असंख्यप्रदेशी ध्यानवाथी पश्यंति विकसे खरी,
बुद्धिसागर परा पश्यंति युक्ति झट दिलमां धरी. ॥१४॥

परा पश्यंतिमां तो प्रभुनुं रुप जणातुं,
अनुभवथी योगीश्वर वचने सत्य ग्रहातुं;
शुद्ध स्वभावे आत्मिक दर्शन तुर्त पमातुं,
आत्मिकभावे अनंत सुख तो दिलमां थातुं.

बुद्धिसागर प्रणवमंत्रे इच्छीए ते इष्ट मळे. ॥ १९ ॥
ब्रह्मरंध्रमां प्रणवमंत्रने प्रेमे स्थापो,
ब्रह्मरंध्रमां प्रणव मंत्रना करीए जापो;
ब्रह्मरंध्रमां परम समाधि मंगलकारी,
उपादान निमित्त हेतुता पुष्ट थनारी.
प्रणवमंत्रना ध्यान योगेज लब्धि ऋद्धि प्रगटती,
बुद्धिसागर गुरुकृपाथी प्रणवमंत्रे छे गति. ॥ २० ॥
गुरुकृपाथी प्रणवमंत्रनी सिद्धि थावे,
गुरुकृपाथी सर्व सिद्धियो प्राणी पावे;
सुगुरा जनने प्रणवमंत्र तो तुर्त फळे छे,
सुगुरा जनने प्रणवमंत्रनुं सार मळे छे;
प्रणवमंत्रनो सत्य महिमा माणसा आवी रच्यो,
सुखाब्धि गुरुना प्रतापे बुद्धिसागर मन पच्यो. ॥ २१ ॥

दुनिया बगीचो.

गझल.

जगत्नों बागने देखुं, विवेके सत्यने पेखुं;
भ्रमर थइ बागमां रमतो, गमे त्यां चित्तथी भमतो. ॥ १ ॥
जगत्ना बागनां पुष्पो, खीलेलां ते पडे छे तुर्त;
खीलीने कोइ खरेछेरे, इतरने कोइ हरेछेरे. ॥ २ ॥
जगत्नो बाग स्वप्नासम, नहि ते नित्य रहेनारो,
भ्रमर तुं भूल नहि मिथ्या. जगत्थी सुख नहि क्यारे. ॥३॥
जगत्ना बागमां कूवा, पड्या ते भ्रांतिथी मुआ;
जगत्ना बागमां दुःखो, मळे नहि मोहथी सुखो. ॥ ४ ॥
भ्रमर तुं भूल नहि भोळा, तगे छे मृत्युना डोळा;
जगत्ना बागमां भ्रांति, मळे नहि सत्य के शांति. ॥ ५ ॥

नवधाक्रिया भक्ति स्वाध्याय.

दुहा.

वर्धमान जिनवर नमुं, चोवीसमा सुखकार,
शासन यति तति पति नमुं, क्षायिक गुण धरनार. ॥१॥
सद्गुरु पदपंकज नमी, गाशुं भक्ति स्वरुप;
नवधा भक्ति इशनी, करतां विघटे धूप. ॥२॥
नवधा भक्ति जे करे, एक चित्तथी नित्य,
परम महोदय पद वरी, होवे शुद्ध पवित्र. ॥३॥

अथ प्रथम श्रवणक्रिया.

अनंत गुण पर्यायमय, चेतनद्रव्य सदाय;
श्रवण करे बहु मानथी, प्रथम क्रिया सुखदाय. ॥ १ ॥

राग केदारो अथवा आशाउरी.

श्रवण करो सम्यक् चेतननुं, जिनभाषित जीव द्रव्यरे;
त्रैकालिक स्थित चेतन अस्ति, नित्य द्रव्यार्थिक भव्यरे. श्र. १
काल अनादि परपरिणामे, कर्त्ता भोक्ता कथायरे,
भेदज्ञानथी कर्त्ता भोक्ता, निजपरिणामनो थायरे. श्रवण. २
निज परिणामे परिणमवाथी, पर परिणमता नाशरे,
आविर्भावे मोक्ष कहावे, सिद्धबुद्ध शिववासरे, श्रवण. ३
मोक्ष उपायो छे जगमांहि, ज्ञानादिक त्रण रत्नरे,
षट् स्थानकना श्रवणथी समकित, औपशमादि प्रयत्नरे श्र. ४
समकितदेश ने सर्व विरतिनुं, कारण श्रवण छे सत्यरे,
आत्मानुभव अमृत हेतु, प्रथमक्रिया शुभकृत्यरे. श्रवण. ५
जेम जांगुली मंत्र श्रवणथी, सर्पादिक विष नाशरे,
तेम जीवद्रव्य श्रवण महिमाथी, मोहादिविष प्रणाशरे. श्रवण. ६

परा पश्यंतीथी कांइक परखायछेरे. जीवना. ४
मध्यमा वैखरी कीर्तन कीजे, अवळे पन्थे चित्त न दीजे,
आत्मिक गुणनुं कीर्तन सत्य सदा निरखायछेरे. जीवना. ५
जीव कीर्तनथी कर्म न लागे, चेतन आपस्वभावे जागे,
भवसागरना कांठे झट उतरायछेरे. जीवना. ६
वचन वर्गणाथी जिन बोधे, कर्ममेलने वेगे रोधे,
ज्ञानि वचनथकी तो सत्यासत्य जणायछेरे. जीवना. ७
झळहळ ज्योति झट प्रगटावे, मिथ्यातमने दूर हठावे;
चेतन कीर्तन योगे अर्पितधर्म ग्रहायछे रे. जीवना. ॥८॥
ब्रह्मस्तवनमां स्थिरोपयोगी, परपुद्गल ग्रहतो नहि योगी;
निर्भय अलखधूनमां परमानन्द पमाय छे रे. जीवना. ॥९॥
प्रगटे सत्यानन्दखुमारी, निजपरने कीर्तन उपकारी;
कीधां अनंत भवनां पातिक क्षणमां जाय छे रे. जीवना. ॥१०॥
पुनः पुनः गावो चेतनने, स्थिर करी निजगुणमां मनने;
सद्गुरु बुद्धिसागर कीर्तन भक्ति पमाय छे रे. जीवना. ॥११॥

अथ तृतीय सेवनक्रिया.

दुहा.

अर्हन्तादिक सेवना, निज सेवा संकेत;
परमेश्वर पण जीव छे, निजसेवा गुण हेत. ॥ १ ॥
जीवद्रव्यनी सेवना, निज उपयोगे थाय;
शुद्ध रमणता आतममां, सेवा शुद्ध कथाय. ॥ २ ॥

पुख्खल वइ विजये जयोरे ए राग.

सेवा सुखकर आतमनीरे, आतमस्वभावे थाय,
परपुद्गल दूरे टलेरे, सेवा शुद्ध कहायरे भविका;

परा पश्यंतीथी कांइक परखायछेरे. जीवना. ४
मध्यमा वैखरी कीर्तन कीजे, अवळे पन्थे चित्त न दीजे,
आत्मिक गुणनुं कीर्तन सत्य सदा निरखायछेरे. जीवना. ५
जीव कीर्तनथी कर्म न लागे, चेतन आपस्वभावे जागे,
भवसागरना कांठे झट उतरायछेरे. जीवना. ६
वचन वर्गणाथी जिन बोधे, कर्ममेलने वेगे रोधे,
ज्ञानि वचनथकी तो सत्यासत्य जणायछेरे. जीवना. ७
झळहळ ज्योति झट प्रगटावे, मिथ्यातमने दूर हठावे;
चेतन कीर्तन योगे अर्पितधर्म ग्रहायछे रे. जीवना. ॥८॥
ब्रह्मस्तवनमां स्थिरोपयोगी, परपुद्‌गल ग्रहतो नहि योगी;
निर्भय अलखधूनमां परमानन्द पमाय छे रे. जीवना. ॥९॥
प्रगटे सत्यानन्दखुमारी, निजपरने कीर्तन उपकारी;
कीधां अनंत भवनां पातिक क्षणमां जाय छे रे. जीवना. ॥१०॥
पुनः पुनः गावो चेतनने, स्थिर करी निजगुणमां मनने;
सद्गुरु बुद्धिसागर कीर्तन भक्ति पमाय छे रे. जीवना. ॥११॥

अथ तृतीय सेवनक्रिया.

दुहा.

अर्हन्तादिक सेवना, निज सेवा संकेत;
परमेश्वर पण जीव छे, निजसेवा गुण हेत. ॥ १ ॥
जीवद्रव्यनी सेवना, निज उपयोगे थाय;
शुद्ध रमणता आत्ममां, सेवा शुद्ध कथाय. ॥ २ ॥

पुष्खल वइ विजये जयोरे ए राग.

सेवा सुखकर आत्मनीरे, आत्मस्वभावे थाय,
परपुद्गल दूरे टलेरे, सेवा शुद्ध कहायरे भविका:

राग केदारो.

वचन थकी गावो चेतनने, शाणा नरने नारीरे;
वचन भक्ति बहु पाप हरे छे, शिव मन्दिरनी बारीरे. वचन. ॥१॥
वचन भक्ति शक्ति प्रगटावे, अतिशय आनन्द थावेरे;
शुद्ध प्रेमथी गावो चेतन, परम प्रभु परखावेरे. वचन. ॥ २ ॥
शुद्ध स्वरूपने क्षण क्षण गावो, वचन थकी ए वधावोरे;
वचन भक्तिथी मननी स्थिरता, युक्ति ए चित्त ठरावोरे. वचन. ॥३॥
वचन थकी गातां चेतनने, पर परिणमता नासेरे;
परा पश्यन्ती मध्यमा वैखरी, भाषा शक्ति प्रकाशेरे. वचन. ॥ ४ ॥
नाद योगमां वचन भक्तिथी, सहेजे प्रवेश सुहावेरे;
अनहद तुर वजावे योगी, सूक्ष्म वचनना भावेरे. वचन. ॥ ५ ॥
चेतन गातां स्थिरता होवे, मोहमायादि विघटेरे;
देह तंबुरो वचनना स्वरथी, अनहद तानज प्रकटेरे. वचन. ॥ ६ ॥
वचन योगी होवे मन योगी, अंते थाय अयोगीरे;
बुद्धिसागर वचन भक्तिथी, परम प्रभुता भोगीरे. वचन. ॥ ७ ॥

अथ पंचमी वन्दनक्रिया.

दुहा.

शुद्ध चैतन्य स्वभावने, वन्दो वारंवार;
ज्ञानादिक आधारथी, चेतन पूज्य विचार. ॥ १ ॥
निज सरखा सहु जीवने, जाणी हर्षित होय;
जाणी सिद्धसम जीवने, वन्दे भाव जोय. ॥ २ ॥

सिद्ध जगत् शिर शोभता—ए राग.

वन्दु चेतन द्रव्यने, पुद्गल द्रव्यथी भिन्न;
आनंदघन प्रभुप्रेममां, स्थिरोपयोगे हुं लीन. वंदु. ॥ १ ॥
अर्हन्तादिक पंच जे, वंदन शुभ व्यवहार;
अर्हन्तादिक रूप छे, जीव ते निश्चय धार. वंदु. ॥ २ ॥

ज्ञानरविथी प्रकाशतो, दर्शन चन्द्र समान;
चेतन द्रव्यने वन्दना, करतां नासे छे मान. वंदु. ॥ ३ ॥
चेतन अष्ट प्रकार छे, बाहिर अन्तर जाण;
परमेश्वर अवबोधथी, निश्चय समकित स्थान. वंदु. ॥ ४ ॥
स्वपर प्रकाशक जीवने, वंदन करतां कल्याण;
संग्रहनय कृत दृष्टिथी, वंदन सर्व प्रमाण. वंदु. ॥ ५ ॥
चेतन लक्षण चेतना, साननयोथी विचार;
चेतननी शुद्धव्यक्तिथी, वन्दन वार हजार. वंदु. ॥ ६ ॥
निश्चय ने व्यवहारथी, चउनिक्षेप प्रमाण;
द्रव्यने भावथी वंदना, चेतन गुणगण खाण. वंदु. ॥ ७ ॥
अन्तर्यामीने वंदना, करतो मंगलमाल;
बुद्धिसागर वंदना, चेतन शुद्ध विशाल. वंदु. ॥ ८ ॥

अथ षष्ठी ध्यानक्रिया.

दुहा.

आर्त रौद्र बे त्यागीने, धरीए धर्मनुं ध्यान;
शुक्लध्यानने ध्यावतां, चिदानंद भगवान. ॥ १ ॥

सांभळजो मुनि संयमरागी-ए राग.

चेतन धर तुं ध्यान स्वरूपनुं, परपरिणति दूरवारीरे;
ध्याने कर्म खरे छे सघळां, शुद्ध परिणति धारीरे. चेतन. १
पदस्थ पिंडस्थ रूपस्थ रूपातीत, चार ध्यान चित्त धरीएरे;
धर्मध्यान ने शुक्ल ध्यानथी, शाश्वत सुख झट वरीएरे. चे० २
सालंबन ध्याने चित्त ठारी, अशुभ विचारो हरीएरे;
निरालंबन ध्यान धरीने, भवसागर झट तरीएरे. चे० ३
विक्षिप्त यातायात सुश्लिष्ट, सुलीनता मनभेदरे;
अनुक्रमे अभ्यास करीने, टाळो सघळा खेदरे. चेतन. ॥ ४ ॥

चेतनध्याने निर्मलशक्ति, भवभय दुःख निवारेरे;
आत्मिक रुद्धि प्रगट करीने, कर्मकलंक विदारेरे. चेतन. ॥ ६ ॥
अंतरना उपयोगे रहीए, अनुभवसुखडां लीजेरे;
आपोआप स्वरूपे रमतां, अनुभवामृत पीजेरे. चेतन. ॥ ७ ॥
सहजस्वरूपी अन्तर्यामी, ध्याने चेतन परखोरे;
अनंतगुणपर्याय विलासी, निरखी मनमां हरखोरे. चे० ॥ ८ ॥
परममहोदय शिवसुख स्वामी, घटमां शोधो ध्यानीरे;
बुद्धिसागर ध्यान दिवाकर, प्रगटे वात न छानीरे. चेतन.॥ ९ ॥

अथ सातमी लघुताक्रिया.

दुहा.

लघुता प्रभुता आपती, करे अहंता नाश,
राग द्वेष दूरे टळे, मुक्तिपुरीमां वास;

॥ राग केदारो. ॥

लघुतामां प्रभुता सुखकारी, लघुता गुण करनारीरे,
चेतननी शक्ति फेळववा, साची छे जयकारीरे. लघुता. १
पुद्गल भारे चेतन हलको, उर्ध्व सात राज जावेरे,
कादवथी न्यारी जेम तुंबडी, जल उपर जेम आवेरे. ल. २
पुद्गल ममता दीनभावथी, लघुता भवदुःखकारीरे,
तेवी लघुता आत्मिकशक्ति, प्रगटपणे हरनारीरे. ल. ३
चेतनरुद्धि अनंती प्रगटे, तोपण गर्व न थायरे,
पूर्णोदकभृत कुंभनी पेठे, जरा नहीं छलकायरे. ल. ४
जे देखे ते चेतन नहि तुं, नहि देखे ते तुजरे,
आपस्वभावे खेले हंसा, पडशे अंतरनी सुझरे. ल. ५
ताळी लागी अनुभवयोगे, प्रभुता घटमां पेशीरे,
कर्मवर्गणा खरती जे अंशे, लघुता ते अंशे प्रवेशीरे. ल. ६

अथ नवमी समता क्रिया.

दुहा.

समता शिवसुख वेलडी, समता सुखनुं मूळ;
समता संयम फल कह्युं, समता वण सहु धूळ. ॥ १ ॥
समताथी शिवसुख मळे, समता आनंदपूर;
परम महोदय प्राप्तिमां, समता मंगलतूर. ॥ २ ॥

राग केदारो.

समता शाश्वत सुख करनारी, निजपरने उपकारीरे;
समान वृत्ति शत्रु मित्रपर, भावदया जयकारीरे. समता. ॥ १ ॥
वस्तु स्वभावे चेतन स्थिति, वर्तन समता धारोरे;
चेतनमां उपयोग रमणता, समता शुद्ध विचारोरे. समता. ॥२॥
केवलज्ञान ने केवल दर्शन, समताथी झट थावेरे;
क्षपकश्रेणिए ध्याने चढंतां, समता सुख परखावेरे. समता. ॥३॥
सर्वयोग शिरोमणि समता, समता छे त्यां मुक्तिरे;
अनुभवानंद लहेरो प्रगटे, क्षायिक गुणगण युक्तिरे. समता. ॥४॥
षड्दर्शनमां समता भावित, चेतन मुक्ति वरशेरे;
धर्मक्षमा समता गुण मोटो, जे पामे ते तरशेरे. समता. ॥५॥
समता सरोवर मुनिवर हंसा, अनुभव जलमां झीलेरे;
अनंत चेतननी शक्तियो, समतायोगे खीलेरे. समता. ॥६॥
समता स्पर्शमणिथी मोटी, समता सुखनी क्यारीरे;
समता धारक संतजनोनी, हुं जाउ बलीहारीरे. समता. ॥७॥
समता अनुभव योगे खुमारी, संतजनोने प्यारीरे;
बुद्धिसागर समतासंगी संघ सकळ जयकारीरे. समता. ॥८॥

कलश—राग धन्याश्री.

नवधा भक्ति रसाळ, करीए नवधा भक्तिरसाळ;
निजपर आलंबन जयकारी, किरिया मंगलमाल. करीए. ॥१॥

शुक्लपक्षीयाजीवनेरे, नवधा किरिया भव्य;
किरिया भक्ति एकतारे, आत्मोन्नति कर्तव्यरे. करीए. ॥ २ ॥
जिन पूजा ते निजभर्णीरे, चेतन भक्ति उदार;
चेतन शक्ति जगाववारे, निमित्त छे व्यवहाररे. करीए. ॥ ३ ॥
नवधा किरिया आत्मनीरे, क्षायिक सुख देनार;
निशदिन कीजे भावथीरे, शाश्वतपद करनाररे. करीए. ॥ ४ ॥
नवधा किरिया भक्तिथीरे, नरनारी तरनार;
किरिया साची सुख करीरे, कर्माष्टक हरनाररे. करीए. ॥ ५ ॥
रागद्वेष किरिया सर्जीरे, वारी मनना दोष
नवधा किरिया जे करेरे, ते पामे सुख पोषरे. करीए. ॥ ६ ॥
ओगणीश चोसठ सालमांरे, अषाडपंचमीदीन;
शुक्ल पक्षमां शुक्र जीवनी, किरिया गुणगणपीनरे. करीए. ७
माणसा ग्रामे भावथीरे, रचना कीधी बेश;
सुखसागर गुरुभक्तिथीरे, आनंद होय हमेशरे. करीए. ॥ ८ ॥
अनेकान्तमत सेवनारे, नवधा भक्ति उदार;
बुद्धिसागर भक्तिथीरे, जिनशासन जयकाररे. करीए. ॥ ९ ॥

अथ चेतन स्वाध्याय.

राग केदारो.

चेतना लक्षण चेतन परखो, परमानन्द स्वरूपी,
जडथी न्यारो निजगुण भोगी, निर्भय रूपारूपीरे. चेतना. ॥१॥
बाह्य विभाव दशायकी न्यारो, जूठी जगत् जड बाजीरे.
उदयागत भावे जड संगी, रहीए शुं तेमां राजीरे. चेतना. ॥२॥
देह देवलमां त्रिभुवन स्वामी, औदयिक योगे फसियोरे;

मिथ्या परिणति भिन्न विचारी, बाह्यदशाथी खसियोरे. चेतना. ॥३॥
जाग जाग झट चेतन प्यारा, वीर्योल्लास वधारीरे;
पर परिणमता दूर निवारी, ध्यानदशा अवधारीरे. चेतना. ॥४॥
हुं जडनो जड मारु ए भूली, तत्त्व रमण लय लावीरे;
अनुभव आनंद भोगवजे जीव, कुमति दूर हठावीरे. चेतना. ॥५॥
अनुभव प्याला पी तुं व्हाला, त्यागी पुद्गल चाळारे;
बुद्धिसागर ध्यान खुमारी, योगे मंगळ माळारे. चेतना. ॥६॥

सहजानंद स्वाध्याय.

राग केदारो.

चिद्घन चेतन निर्भय देशी, व्यक्ति असंख्य प्रदेशीरे;
जाति वचनने लिंगथी न्यारो, रागी नहि न द्वेषीरे. चिद्. ॥१॥
आत्मस्वभावे सदा जे प्रकाशी, सत्यानंद विलासीरे;
प्रतिप्रदेशे सुख अनंतुं, शुद्ध रमणता वासी रे. चिद्. ॥२॥
जडता भावे चेतन मुंझ्यो, परम ब्रह्म नहि बुझ्योरे;
तेथी बाह्यरमणता खुंच्यो, परमभाव नहि गुझ्योरे. चिद्. ॥३॥
केवल ज्ञानने केवल दर्शन, क्षायिक मुख्य गुण भरियोरे;
आविर्भावे गुणगण दरियो, जाणे ते जीव तरियोरे. चिद्. ॥४॥
सत्ताए तुं सिद्ध समोवड, प्रगटपणे हवे था तुंरे;
बुद्धिसागर ब्रह्मदशामां, कांइ न था तुं न जा तुंरे. चिद्. ॥५॥

परमबोध स्वाध्याय.

धीर जिनेश्वर भेटवा-ए राग.

शक्ति अनंति जीवमां, तणाए ज भागे;
स्वाभिभाव नेनो करो, पामो भवपारे. शक्ति. ॥१॥

पुद्गल शक्तिथी भिन्न छे, शुद्ध चेतन शक्ति;
आपस्वभावे रमणता, करतां होय व्यक्ति. शक्ति. ॥ २ ॥
दीनभाव दूरे करी, परमानंद माणो;
आपोआप प्रकाशनो, नहि कोइनो दावो. शक्ति. ॥ ३ ॥
आप आपमां परिणमे, उग्र जीवन शुद्धि;
समजु शुद्धस्वभावथी, लहे आनंद ऋद्धि. शक्ति. ॥ ४ ॥
पर परिणामे बंध छे, शुद्ध उपयोगे मुक्ति;
आप बंधनथी छूटनो, सत्य गुरुगम युक्ति. शक्ति. ॥ ५ ॥
लागी ताळी ध्याननी, ज्योति अन्तर जागी
बुद्धिसागर प्रभुमां, लय लीनता लागी. शक्ति. ॥ ६ ॥

आत्मऋद्धि स्वाध्याय,

धीरे सिद्धाचल भेटवा.

जे जोइए ते आत्ममां, बाकी बाह्यमां भ्रान्ति;
बाह्य दशामां दोडतां, कदी होय न शान्ति. जे. ॥ १ ॥
जे जाग्या निज भावमां, पाम्या क्षायिक देवा;
औपशमादिक भावथी, साची प्रभु सेवा. जे. ॥ २ ॥
अष्ट सिद्धि नवऋद्धियो, निज घटमांहि छाजे;
प्रगटपणे शुद्ध चेतना, शुद्ध चेतन गाजे. जे. ॥ ३ ॥
मंगलनो मंगल प्रभु, शुद्ध चेतन दीवो;
सहज स्वरूपी चेतना, ध्यानामृत पीवो. जे. ॥ ४ ॥
लवणनी पूतळी जलधिमां, त्याग लेतां समाणी;
परमानंद शुं वर्णवे, तेम वैखरी वाणी. जे. ॥ ५ ॥
उग्यो दिनमणि झळहळे, रहे नहि जगछानो;
बुद्धिसागर अनुभवे, परमात्मा मजानो. जे. ॥ ६ ॥

जीवजागृति स्वाध्याय.

जाग जाग अरे जीवडा, मोहमाया त्यागी;
जाणी चेतन धर्मनो, थाजे निरागी. जाग. ॥ १ ॥
काल अनादि खोयो, भवमां भटकायो;
परमानन्द न पामियो, ज्यां त्यां दुःख पायो. जाग. ॥ २ ॥
परमानंद स्वभाव छे, शुद्ध चेतन धर्म;
रत्नत्रयी निज धर्म छे, सिद्ध शाश्वत शर्म. जाग. ॥ ३ ॥
शुद्ध रमणता योगथी, शाश्वत सुख भोगी;
बुद्धिसागर जागजो, रमणागुण योगी. जाग. ॥ ४ ॥

मोहत्याग सज्झाय.

पाठ पढो शुद्धात्मनो, बाह्यमां नहि दोडो;
मणि मूकीने पत्थरे, केम मस्तक फोडो. पाठ. ॥ १ ॥
देह देवळमां जोगीडो, चेतन सुख भोगी;
शान्ति अनंति शाश्वती, साधतो गुण योगी. पाठ. ॥ २ ॥
खेले निजगुण ओरडे, मेले मोहमाया;
परमप्रभुमां ध्यानना, शाश्वत सुखपाया. पाठ. ॥ ३ ॥
द्रव्यार्थिकथी नित्य छे, ध्यावो प्रभु शक्ति;
बुद्धिसागर सत्य छे, शुद्ध चेतन शक्ति. पाठ. ॥ ४ ॥

अमदावादमां पांचमी जैन श्वेतांबर कोन्फरन्स वखते गवायेलां गायनो.

शार्दूल विक्रिडित छंद.

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ नमिये मांगल्य कार्ये सदा,
श्री तीर्थंकर सिद्ध सूरि सुखदा कापो सदा आपदा;

सुर्या वाचक संइका मुनिवरा प्रेमे नमो प्रेमदा,
श्री श्वेतांबर कोन्फरन्स विजये आपो सदा संपदा ॥ १ ॥

जागो जोगी अलख स्वरूपी—ए राग.

जिनवर मन्दिरथी शोभितुं, राजनगर जयकारी,
तत्र मळी पंचम श्वेतांबर कोन्फरन्स बहु भारी;
आजे आनन्द रे मंगलमाळा वरती,
मगटी सुखसागर भरती. आजे. ॥ १ ॥
श्री जिनशासन जग जयकारी, जैन धर्म वर्णाहारी;
जैनोनी उन्नति अर्थे. बहु कीधी तैयारी, आजे. ॥ २ ॥
धीर वीर विवेकी विचक्षण, श्रावक गुण अधिकारी;
रायबहादुर सीतावचन्द्रजी, प्रमुख पदवी धारी. आजे. ॥३॥
धार्मिक व्यवहारिक केळवणी, शिक्षण भाषण थाशे.
देश काल अनुसरता ठरावो, प्रमुखना वंचाशे. आजे. ॥४॥
कर्मीया क्लेश ने कुलग्नोने देशवटो देवाशे;
धर्म शुरातन एक संपता, धर्म स्नेह सचवाशे. आजे. ॥५॥
भेदभाव सहु दूर निवारी, सत्य टेक निरधारी;
विजयपताका जग वर्तावो, शाणा नर ने नारी. आजे. ॥६॥
जापानीशनी पेठे आर्यो, सत्य सुधारा करवा;
बुद्धिसागर वीरना भक्तो, पाछा पग नहीं धरवा. आजे. ७

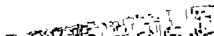
मनमायाना करनारारे-ए राग.

शुभ धर्मना पन्थ सुधारीरे, करो सत्य सुधारा विचारी, ए टेक.
संघ चतुर्विध उन्नति अर्थे, ज्ञानना ग्रन्थ वधारी;
जीर्ण पुस्तक उद्धार करावी, सजो केळवणी शिख सारीरे.
करो० ॥ १ ॥

बोर्डिंगस्कुलो स्थापीने ठेर ठेर, मानवभव ल्यो ल्हावो;
नक्की उदय भाइ तेथी थनारो. खरी रीतिने दिलमां ठरावोरे.
करो० ॥ २ ॥
जैनशाळाओ पढावो बाळाओ, बाळक बाहोश करवा;
बाळलग्नने देशवटो द्यो, जैनाभ्युदयमां संचरवारे. करो. ॥३ ॥
कन्याविक्रय ने वृद्धाविवाहथी, देखीती थाय खुवारी;
कुबुद्धि त्यागी सद्गुणरागी, पडी टेव ते त्यागो नठारीरे.
करो० ॥ ४ ॥
पुण्यक्षेत्र शुभ सप्त सुधारो, धर्मीनो करो वधारो,
साधर्मी भाइने साहाय्य आपो खुब, झट उदय तेथी थनारोरे.
करो० ॥ ५ ॥
लाखो रुपैया केळवणी अर्थे, खरचो सज्जन नरनारी;
तन मन धनने अर्पण करीने, धरो धर्मसेवा सुखकारीरे.
करो० ॥ ६ ॥
महावीर शासन विजय रंगमां, करो न किंचित खामी;
धर्मि विवेकि सज्जन बन्धुओ, करो उद्यम अवसर पामीरे.
करो० ॥ ७ ॥
जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्सथी, शीघ्र उन्नति हि मानी;
बुद्धिसागर श्री वीरना भक्तो, करो कदीय न पाछी पानीरे.
करो० ॥ ८ ॥

राग आशावरी.

श्वेताम्बर कोन्फरन्स वीराजी, कीर्ति दशोदिश गाजी. श्वे० टेक.
धरणेन्द्र पद्मावती सेवित, पार्श्वनाथ जयकारी;
विघ्न विदारण मंगल कारण, सहाय्य करो सुखकारी. श्वे० १
अत्यानंद महोदय कारण, रचना वेश बनाइ;
मंगल वाजींत्रो वागीने, देतां विजय वधाइ. श्वेताम्बर० ॥ २ ॥



श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, जग जय मंगळकारी;
धरणेंद्र पद्मावती देवी, सहाय करो सुखकारी;
आजे आनंदरे धन्य घडी जयकारी, कोन्फरन्स बलिहारी, आजे. १
जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्सनी, छठ्ठी बेठक आजे;
गुर्जर सोरठ वंग मरुधर, दक्षिणना जन राजे. आजे. २
सोरठ देशे भावनगर शुभ, जैनपुरी अलबेली;
जैन श्वेताम्बरकोन्फरन्से, बेठक लीधी पेहेली. आजे. ३
जैनोनी उन्नति करवा, थाशे सरस सुधारा;
व्यवहारिक धार्मिक केळवणी, तेना नियम थनारा. आजे. ४
श्रद्धावंत विवेकी गंभीर, राजनगर अवतारी;
मनसुखभाइ भगुभाइ सुश्रावक, प्रमुख पद्वी धारी. आजे. ५
तनमनधनथी जैनोन्नतिमां, प्रमुख पगलुं भरशे;
कोन्फरन्सनुं काम बजावी, जय लक्ष्मी झट वरशे. आजे. ६
जैनोन्नतिनुं भाषण सारुं, प्रमुखनुं वंचाशे;
कहेणी जेवी रहेणी रहेवा, सत्य ठरावो थाशे. आजे. ७
वीर जिनेश्वर भक्तो थइने, पाछा पग नहि भरशो;
बुद्धिसागर शूरा सज्जन, मंगळमाळा वरशो. आजे. ८

जैन कोन्फरन्स आज गाजी रही, गाजी रही जन,
गजावी रही जैन.

साखी.

देश देशना श्रावको, आव्या धरी उल्लास,
जैनधर्म दीपावना, करवा निश्चय प्रयास.
धर्म मनुन दील धार्मीने गाजता, सुमति प्रकाश,
चित्त शोभी रही. जैन० १

मुनिवर गुरुगम ज्ञान लहीने, सत्य नीतिमां चुस्त रहीने,
बुद्धिसागर रचना श्रेष्ठ रचावशोरे. जैनो० ॥ ६ ॥

विमळाचळवासी म्हारा व्हाला सेवकने विसारो नहीं
विसारो नहीं–ए राग.

करो सत्य सुधारा विचारी भला, सुखकारी सदा, (२)
जशे संपे कुसंप दुःख नावे कदा, चित्त धारो मुदा. चित्त.
जिन शासननी भक्ति करतां, तीर्थंकर पद पाय;
जैन धर्म फेलावो करतां, अनंत सुख सदाय. सदा सुखकारी. १
व्यवहारिक ने धार्मिक विद्या, सर्वोन्नति आधार;
बोर्डिंग स्कुलो स्थापन करतां, थाशे जग जयकार. सदा सु० २
जुनां पुस्तक फेर लखावो, शुद्ध छपावो वेश;
स्हाय करो साधुने भणतां; करशे सदा उपदेश. सदा सु० ३
बाळकशाळा कन्याशाळा, जैनतत्त्व विस्तार;
साधर्मी बंधुनी भक्ति, करतां सफळ अवतार. सदा सु० ४
कुमारपाळने संप्रति नृपति, वस्तुपाळ तेजपाळ;
धर्मी शूरा पूर्वे जैन थयां, हाल बन्या बेहाल. सदा सु० ५
बोलो तेवुं पाळो भव्यो, थाशो जग जाहेर;
बुद्धिसागर जय जय बोलो, कोन्फरन्स सुख लहेर. सदा सु० ६

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

समाप्त.